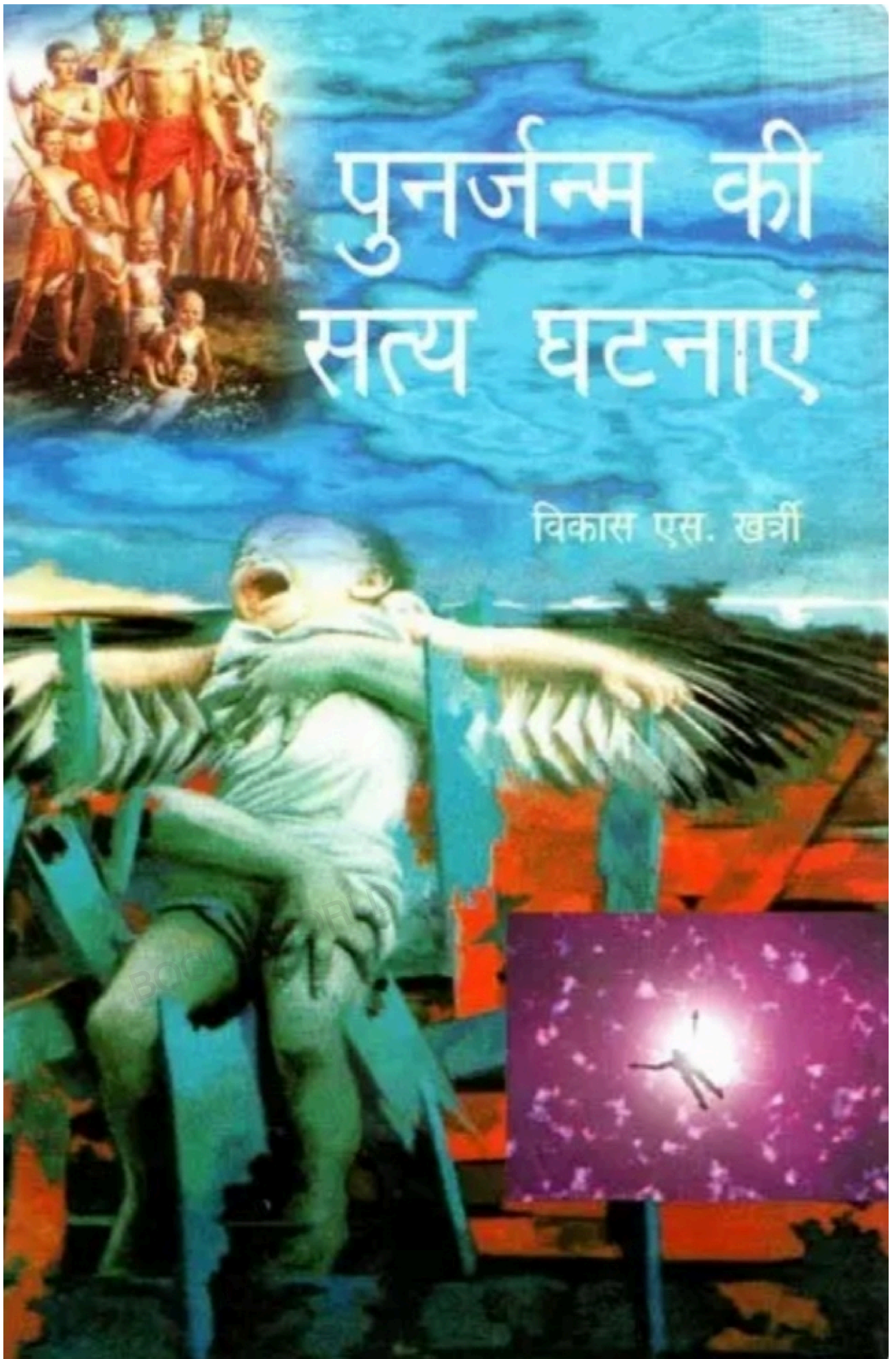

पुनर्जन्म की
सत्य घटनाएं
विकास एस. खत्री

पुनर्जन्म की सत्य घटनाएं

विकास एस. खत्री

राधा पब्लिकेशन्स
नई दिल्ली—110002

पुनर्जन्म की सत्य घटनाएं

अनुक्रम

विभिन्न धर्मों में पुनर्जन्म

समूचे विश्व में विज्ञान का महत्व चरम पर है। मानव जिसे हिन्दू धर्म के अनुसार चौरासी लाख योनियों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है वही विज्ञान के उद्‌भव एवं विकास का कारण हैं। विज्ञान ने यूं तो जड़-चेतन सभी को प्रभावित किया है, परन्तु मानव जीवन के कार्य-व्यापार पर उसका सर्वाधिक प्रभाव है। अनादि काल से मानव और उसका जीवन आध्यात्मिक भावना से भी ओत-प्रोत रहा है अर्थात् ब्रह्म (परमात्मा) जीवन (आत्मा) एवं जगत (सृष्टि) में उसका विश्वास रहा है। परन्तु विज्ञान के उत्कर्ष के साथ और खासतौर से विज्ञान के तार्किक दृष्टिकोण के प्रभाव के कारण मानवीय सोच परिवर्तित हुई है। ऐसे बहुत से लोग, विभिन्न धर्मों एवं संप्रदायों के हैं जो सनातन से, परंपरागत रूप से चली आ रही आध्यात्मिक, धार्मिक मान्यता एवं परंमरा को वैज्ञानिक सोच के तहत तार्किक कसौटी पर अदृश्य ईश्वरीय सत्ता को, जीवन-मृत्यु के रहस्य को और उसकी बाद की स्थिति को यथा आत्मा के आवागमन की प्रक्रिया को कसना चाहते हैं। यद्यपि ऐसे लोगों की भी खासी बड़ी संख्या है, जो ईश्वरत्व को, आत्मा के आवागमन की सच्चाई को, जीवन-मृत्यु में परमात्मा के महत्व को आज भी स्वीकार करते हैं। वे इसे ही नहीं मृत्यु के बाद की स्थिति अर्थात् आत्मा के अजर-अमर होने एवं उसके पुनः शरीर धारण करने की प्रक्रिया को ईश्वरीय विधान मानते है।

आत्मा, परमात्मा का अंश है, उसकी मृत्यु कभी नहीं होती, ऐसा उनका विश्वास है। इस यथार्थ को भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में भी स्पष्ट किया हैः—

वासंसि जीर्णानि यथा विहाय,
नवानि गृहणाति नरोपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।

अर्थात् जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों का परित्याग कर दूसरे नवीन वस्त्रों को ग्रहण करता है वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर नये शरीरों को प्राप्त करती है।

इस बात से यह स्पष्ट होता है कि आत्मा मरती नहीं, शरीर मरता है और आत्मा पुनः जन्म अर्थात् पुनर्जन्म लेती है, किन्तु किसी एक धर्म विशेष में पुनर्जन्म की मान्यताओं को स्वीकार कर लेना समस्त धर्मावलंवियों, धर्मों एवं अन्यान्य समाज के लिए समाज के लिए आवश्यक नहीं। यदि भारतीय हिन्दू दर्शन और आध्यात्म पुनर्जन्म को मान्यता देती है तो यह आवश्यक नहीं कि विश्व के अन्य धर्म-दर्शन भी पुनर्जन्म को ज्यों का त्यों स्वीकार कर लें। यदि किसी विचारधारा या मान्यता को भले ही वह पुनर्जन्म का सिद्धान्त हो या जीवन-मृत्यु का, विश्व के अधिकांश धर्म स्वीकार करते हैं तो वह सिद्धांत परिपक्व एवं ठोस आधार की मान्यता से परिपूर्ण होगा। किन्तु यदि उसी सिद्धांत को एक धर्म के लोग मान्यता देते हैं और अन्य धर्म उसे स्वीकार नहीं करते तो यह देखना होगा कि उस सिद्धांत में कमियां क्या हैं अथवा उससे संबंधित कौन-सी विचारधाराएं अन्य धर्मों में पाई जाती है और तब यह निर्णय होगा कि वह सिद्धांत ठोस धरातल रखता है या कपोल कल्पित है। यदि उसका ठोस आधार नहीं है तो एक जाति, धर्म के लोग भले ही उसमें आस्था रखते हों और उसे मान्यता देते रहें, परन्तु वह विज्ञान की, तर्क की, व्यवहार की, आचरण की कसौटी पर खरा नहीं उतर सकता। ऐसा सिद्धांत एक ही जाति-धर्म के लिए हो सकता है, सबके लिए नहीं।

पुनर्जन्म के सिद्धांत को हम उपर्युक्त विवेचना के आधार पर विभिन्न धर्मों, दर्शनों एवं विभिन्न विद्वानों के विचारों की कसौटी पर कसकर देखना चाहेंगे। यदि पुनर्जन्म को अधिकांश धर्म स्वीकार करते हैं तो हम यह मानने पर विवश हो जाएंगे कि पुनर्जन्म एक ठोस धरातल पर स्थित है। यह भी हो सकता है कि किसी धर्म विशेष में हमें चिंतन, शोध एवं प्रयोगों से पुनर्जन्म को अब स्वीकार कर लिया हो। यह स्वीकारना धार्मिक न होकर, व्यक्तिगत हो सकता है। यह भी माना जा सकता है कि उस धर्म के विद्वानों ने अपने धर्म की प्राचीन मान्यताओं के साथ अपनी विचारधाराओं को जोड़कर धार्मिक संशोधन कर लिया हो। जैसे पाश्चात्य विद्वान आत्मा के आह्वान की संगोष्ठियां करके यह निर्णय लेने में सफल हो गये हैं कि आत्मा का एक अलग अस्तित्व है और वह दूसरा शरीर धारण करती है। हम यहाँ इस विवेचना का विस्तार करने की जगह विभिन्न धर्मों में पुनर्जन्म की मान्यता पर विचार करेंगे।



धर्मों की अपनी मान्यताएं होती हैं, सिद्धांत होते हैं, दर्शन होता है जो एक जाति और समाज को प्रभावित करता है। यह बात जितनी सत्य है उतनी ही यह बात भी सत्य है कि हर धर्म में समय-समय पर नये सिद्धांत, नयी प्रक्रियाएं, नये विचार पूर्ण आस्था के साथ जुड़ते रहते हैं। इसके साथ ही इस धर्म की प्राचीन मान्यताएं उपेक्षित होती रहती हैं। कमोवेश हर धर्म में यह परिवर्तन देखने को मिलता है।

हिन्दू धर्म में पुनर्जन्म

हिन्दू धर्म में पुनर्जन्म की मान्यता और उसका महत्व अति प्राचीन काल से स्वीकृत है। वेद-वेदांग, दर्शन, स्मृति और पुराण सर्वत्र इसकी मान्यता एवं महत्ता को स्वीकारते हैं। भारतीय वांग्मय में ऋषि-मुनि, मनीषी एवं लगभग समस्त दार्शनिक और दर्शन पुनर्जन्म के सिद्धांत पर सहमत हैं। एक मात्र चार्वाक दर्शन ऐसा है जो इसे मान्यता नहीं देता। लेकिन किसी एक दर्शन के न मानने से उसकी मान्यता एवं महत्व की अनदेखी नहीं की जा सकती जबकि दूसरे तमाम दर्शन उसे मानते हों।

पुनर्जन्म हिन्दुओं की आध्यात्मिक आस्था का विषय है और उस पर उनका दृढ़ विश्वास हैं। यूं भी पुनर्जन्म की मान्यता को स्वीकार किए बिना जगत में और खासतौर से मानव जीवन में व्याप्त विषमताओं का निदान संभव नहीं है। प्रायः देखा जाता है कि एक व्यक्ति सत्कर्म करते हुए भी कष्टयुक्त जीवन गुज़रता है जबकि पापकर्म में लीन रहनेवाला दूसरा व्यक्ति भौतिक एवं सांसारिक सुखों का भोग करता है। एक ही माता-पिता की संतानों में तरह-तरह की विषमता होती है। गरीबी-अमीरी का भेद-भाव। कोई श्रम करके भी दुःखी है अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता कोई धनवान के घर पैदा होने के कारण सारे सुखों को अपने अस्तित्व से लपेटे हुए है।

इस सबको देखकर मन में तरह-तरह के सवाल उठते हैं—ऐसा क्यों? क्या परमात्मा की सत्ता कपोल कल्पित है? क्या इस समूची सृष्टि का कोई नियामक नहीं है? और यदि परमात्मा अर्थात् ईश्वर की सत्ता है, वह दृश्य-अदृश्य रूप में मौजूद है तथा सृष्टि का संचालन करता है तो क्या उसका अपना कोई विधि-विधान

नहीं है? कहीं वह स्वयं तो स्वेच्छाधारी नहीं है और उसकी नागवारियों के कारण विषमता की यह बेल फैली हुई है? या फिर सारा कुछ अंध-नियति का खेल है? चल रहा है और मनुष्य कठपुतली की शांति है, बिल्कुल असहाय, निस्पृह। इन आशंकाओं का उत्तर हिन्दू धर्म में पुनर्जन्म, पूर्वजन्म और कर्म सिद्धांत की व्याख्या करके स्पष्ट किया गया है। प्रकृतिवादियों अथवा भौतिकवादियों के पास इन शंकाओं का कोई समाधान नहीं है। हिन्दू धर्म, आस्तिक दर्शन की ठोस नींव पर टिका हुआ है अतः ईश्वर की सत्ता, आत्मा की नश्वरता आदि में प्रकृतिवाद या शैतिकवाद को नहीं लाया जा सकता। ईश्वर, आत्मा एवं कर्म सिद्धांत ही हिन्दू धर्म की रीढ़ है। यह तीनों हिन्दू धर्म में क्षीर-नीर के समान घुले हुए हैं। इनको उपेक्षित कर कुछ अतिरिक्त सोचने का तात्पर्य होता है आस्तिकता से परे होकर नास्तिकता का वरण करना और नास्तिक व्यक्ति को हिन्दू धर्म ही क्या कोई भी धर्म नहीं अपनाता। धर्म का मतलब ही है धारण करना अर्थात् जो अपने धर्म के सिद्धांतों को धारण करता है वह आस्तिक है, धार्मिक है और जो धर्म को नहीं मानता वह नास्तिक है अधर्मी है।

वेद हिन्दुओं के सबसे प्राचीन ग्रंथ है। इतना ही नहीं विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ वेद ही हैं। ऋग्वेद और अथर्ववेद में आत्मा की अमरता और शरीर की नश्वरता का स्पष्ट उल्लेख स्थान-स्थान पर आया है। कहा गया है– "जीवात्मा अमर है तथा शरीर से भिन्न है और यह हाड़-माँस का शरीर नाशवान एवं क्षणभंगुर है। संपूर्ण शारीरिक क्रियाओं की अधिष्ठात्री तो आत्मा है।"

उपनिषदों, पुराणों, न्याय दर्शन, योगदर्शन, सांख्य दर्शन, मीमाँसा दर्शन, महाभारत, गीता, रामायण, रामचरित मानस तक की धार्मिक यात्रा में पुनर्जन्म का समर्थन मिलता है। यह समस्त ग्रंथ हिन्दू ग्रंथ हैं। ईश्वर का अंश, आत्मा की अमरता और संसार एवं शरीर की नश्वरता की घोषणा करते हैं। इसके साथ ही एक शरीर को छोड़कर आत्मा जब जाती है तो मृत्यु शरीर की मानी जाती है, आत्मा की नहीं। सांख्य-दर्शन में आत्मा को सर्वशक्तिमान एवं अनश्वर मानते हुए एक शरीर को छोड़ने के उपरांत उसके लिए दूसरे लिंग शरीर को धारण करने की बात कही गयी है। इसी लिंग को शरीर को अन्य ग्रंथों में सूक्ष्म शरीर की संज्ञा दी गयी है।

स्थूल शरीर छोड़ने के उपरांत आत्मा, लिंग-शरीर (सूक्ष्म शरीर) धारण कर कुछ समय तक वहीं शून्य में स्थिर रहती है फिर धीरे-धीरे सांसारिक आकाश से उठती हुई लोक-परलोक में विचरण करती है। लोक-परलोक, स्वर्ग-नर्क को हिन्दू धर्म पूर्ण मान्यता देता है। हिन्दू धर्मावलम्बियों का मानना है कि छोड़े हुए शरीर के माध्यम

से आत्मा ने जो कर्म किए हैं उनके अनुसार उसे लोक-परलोकों में भ्रमण करना होता है। स्वर्ग-नर्क की प्राप्ति भी कर्मानुसार ही होगी।

उपर्युक्त विवेचन से यह निष्कर्ष निकला कि हिन्दू धर्म, ईश्वर, आत्मा, कर्म, मृत्यु के बाद आत्मा की स्थिति, आत्मा का सूक्ष्म शरीर, लोक-परलोक, स्वर्ग-नर्क को पूरी तरह महत्व देता है। इसके अतिरिक्त वह मानता हैं कि कर्मानुसार स्वर्ग-नर्क के सुख-दुःख भोगने के बाद आत्मा पुनः संसार में एक स्थूल शरीर धारण कर जन्म लेती है। वह यह भी मानता है कि पूर्वजन्म के शुभ-अशुभ संस्कारों से प्रभावित होता पड़ता है।

यही पूर्वजन्म के संस्कार व्यक्ति को सुखी-दुःखी, अमीर-गरीब, भोगी-योगी आदि स्थितियों को प्रदान करते हैं। हिन्दू धर्म यह भी मानता है कि पूर्वजन्म के संस्कार पुनर्जन्म में आत्मा के साथ आते हैं, किन्तु पूर्वजन्म की यादें लोक-परलोक की यात्रा में घुल जाती है। (अपवाद स्वरूप कुछ घटनाओं को छोड़कर)।

हिन्दू धर्म मोक्ष को महत्व देता है। आत्मा की अंतिम गति परमात्मा में विलय होकर मोक्ष को प्राप्त करना है। किन्तु यह सहज नहीं है। विभिन्न जन्म-जन्माँतरों में सत्कर्म करती हुई आत्मा सुसंस्कारों को लेकर बार-बार जन्मती हुई जब परमात्मा के तुल्य हो जाती हैं तो परमात्मा में विलय होकर मोक्ष को प्राप्त करती है।

इस्लाम धर्म में पुनर्जन्म

सामान्य रूप से इस्लाम धर्म और उसके अनुयायी पुनः जन्म अर्थात् पुनर्जन्म को स्वीकार नहीं करते हैं। शरीयत (इस्लाम धर्म के शास्त्र वाक्य) तो रूह (आत्मा) क्या हैं और इसके रहस्यपूर्ण गुण क्या हैं, इस बात तक को सामान्य लोगों की जानकारी से अलग रखने पर जोर देता है। शायद इसी कारण इस्लाम धर्म के दार्शनिक तक रूह (आत्मा) की स्थिति को स्पष्ट करने में परहेज करते रहे हैं, सुस्पष्ट विवेचन प्रस्तुत नहीं कर सके हैं। हाँ, यह बात जरूर प्रकाश में आई है कि इस्लाम धर्म के कुछ श्रेष्ठ प्रचारकों ने बहुत ही गुप्त रूप से और खासी संजीदगी के साथ अपने आत्मीय जनों को इस संबंध में थोड़ा बहुत बताया है।

"इस्लाम के महान नबी की अपने एक प्रिय अली मुर्तजा के संबंध में की गयी टिप्पणी गौर तलब है, मैं ज्ञान का सुदृढ़ दुर्गम्य नगर हूँ और अली इसका सदर द्वार है।"

मौजूदा समय के इस्लामिक आध्यात्मिक गुरूओं ने अपने महान नबी का अनुकरण करते हुए अपने विशिष्ट शिष्यों को रूह (आत्मा) के बारे में कुछ बताया है, परन्तु वह सब गोपनीय ही है। इस्लामिक धार्मिक ग्रंथ कुरान शरीफ में रूह के बारे में अल्लाह ताला की वाणी है—"लोग तुमसे रूह (आत्मा) के बारे में पूछेंगे तो उनसे कहना कि रूह मेरे मालिक की आज्ञा से उत्पन्न हुई है।"

कुरान शरीफ में जगत के बारे में कहा गया है कि यह दो प्रकार का है। पहला "आलमे-खलक' और दूसरा "आलमे-अमर'। पहले अर्थात् आलमे-खलक में ऐसी वस्तुएं हैं जिनका मापन एवं विभाजन संभव है और निश्चित तौर से इंसानी रूह (मनुष्य की आत्मा) इससे परे है क्योंकि उसका मापन एवं विभाजन असंभव है। रूह अमानुषिक एवं अविभाजनीय गुणों से युक्त होती है।

इस्लाम धर्म के कुछ विद्वान एवं दार्शनिक रूह (आत्मा) को कदीम अर्थात् सनातन एवं स्वतः स्थिति वाली मानते हैं, परन्तु जहाँ तक इस्लाम धर्म का सवाल है, वह इसे हरगिज नहीं मानता। मान्यता है कि रूह (आत्मा) दो प्रकार की होती है—रूहे-हैवानी और रूहे-इंसानी। पहली पशु-पक्षियों से लेकर इंसान तक में होती है, किन्तु दूसरी का ताल्लुक सिर्फ इंसानी जिन्दगी से होता है।

रूहे इंसानी अर्थात् खुदा (परमात्मा) के बारे में कुरान शरीफ में खुद अल्लाह ताला ने कहा है, उसने अपने में से निकालकर रूह (आत्मा) को हजरत आदम के शरीर में प्रविष्ट कराया।" इसी पवित्र ग्रंथ में उल्लेख है, "जो मुझे प्राप्त करने के लिए उद्योगरत रहते हैं, उन्हें मैं मार्ग दिखाकर अपने में मिला लेता हूँ।"

ऐसा कहा गया है कि रूहे-इंसानी खुदाई प्रकृति का एक वायु संबंधी तत्व है। उसके गुण-रहस्य को समझना बहुत मुश्किल है। क्योंकि वाणी से उसका बखान संभव नहीं है और शरीयत में तो इसकी व्याख्या तक की मनाही है। हाँ खुदाई ज्ञान के प्रेमी जन एवं उनके पथ पर चलनेवाले लोग उसका विचार कर सकते हैं, उसे समझ सकते हैं। परन्तु इसके लिए विश्वास और अल्लाहताला एवं नबी पर आस्था तो रखनी ही होगी। उन्हें अपना आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शक भी मानना होगा। साथ ही सच्ची निष्ठा से अपने अहं को मारकर उद्योग करना होगा, आध्यात्मिक ज्ञान अर्जित करना होगा और इसके लिए बड़ा त्याग करना होगा। तब अल्लाह का मार्गदर्शन निरंतर प्रयास के बाद मिलेगा।

इस्लाम धर्मावलम्बियों का मत है कि शरीर की मृत्यु तो होती है पर अपनेपन की मृत्यु नहीं होती। दरअसल यही अपनापन गोपनीय रहस्य है। उसका स्पर्श संभव नहीं, वह अनश्वर एवं सत्य वस्तु है। दूसरे शब्दों में कहें तो वह खुदाई अंश का वायुतत्व है और इसे ही रूहे इंसानी कहते हैं। यह वात पहले ही स्पष्ट कर दी गयी है कि रूहे इंसानी का तात्पर्य खुदा (परमात्मा) से है और इस्लाम धर्म इंसानी जीवन को इसी के तहत मानता है। परन्तु वह पुनर्जन्म को स्वीकार नहीं करता। हाँ, यह उल्लेख मिलता है कि कयामत के दिन जब अल्ला ताला की आवाज गूंजेगी तो तब सब मृत प्राणी जीवित हो उठेंगे। इस्लाम में जन्नत (स्वर्ग) और दोजख (नर्क) की परिकल्पना की गयी है, परन्तु हिन्दू धर्म जैसी उसकी व्याख्या नहीं है। हालांकि इस्लाम दर्शन में इस बात को स्वीकारा गया है कि मृत्यु के पश्चात् आकाश में, सुदूर बादलों के पास रूहें अपने स्थूल रूप में विद्यमान रहती हैं, परन्तु लोक-परलोक और रूहों के आवागमन को इसमें स्वीकार नहीं किया गया है। स्पष्ट है कि इस्लाम धर्म में बस रूह की स्वीकारोक्ति है या उससे आकाश में स्थिर होने की, परन्तु आगे इस बारे में रूह की यात्रा क्या होती है? सब कुछ रहस्य ही है। परन्तु इस्लाम मानता है कि अल्लाह एक है, वह सर्वज्ञ, सर्वव्यापी पर निराकार है।

उपर्युक्त विवेचन से एक बात स्पष्ट रूप से जाहिर होती है कि इस्लाम धर्म में पुनर्जन्म को मान्यता प्राप्त नहीं है। खुदा एक है, रूह खुदाई ताकत है और मरने के बाद एक दिन वह आएगा जब समस्त रूहों को खुदा के दरबार में पेश होना होगा। उस दिन उन सभी रूहों का फैसला किया जाएगा। जिस तरह इस्लाम में रूहों के फेसले की बात कही गयी है वह इसाइयों के 'डे ऑफ जजमेंट' से मिलती है। वह दिन कयामत के बाद का दिन होगा। कयामत का अर्थ हिन्दू धर्म में प्रलय से है। जैसे हिन्दू धर्म मानता है कि प्रलय के बाद पुनः नयी सृष्टि का सृजन होगा और तब प्राणियों की उत्पत्ति होगी, उसी तरह इस्लाम में कयामत के बाद रूहों का फैसला होने पर उन्हें नयी सर-जमीं पर नये रूप में भेजा जाएगा। वास्तव में रूहों का इस तरह धरती पर आना पुनर्जन्म नहीं कहा जा सकता। इसी से स्पष्ट है कि इस्लाम धर्म पुनर्जन्म को नहीं मानता।

जैन धर्म में पुनर्जन्म

जैन धर्म, हिन्दू धर्म के अत्यंत निकट है। भारतीय न्याय दर्शन धर्म, हिन्दू धर्म के अत्यंत निकट है। भारतीय न्याय दर्शन प्रारब्ध एवं कर्मानुसार ही शरीर की उत्पत्ति और उस शरीर के साथ आत्मा का संयोग मानता है, उसी प्रकार जैन धर्म में भी मानते है कि जीवन कर्म से प्रेरित होकर इस संसार का परिभ्रमण करता है। कर्म और कर्मफल पर विशेष जोर देती है जैन धर्म। इसके अंतर्गत कर्म सिद्धांत का प्रतिपादन किया गया है। जैन दर्शन में जीवन, पुद्‌गल, धर्म, अधर्म तथा आकाश इन पांच द्रव्यों को महत्व दिया गया है। इन पांच द्रव्यों में से जीवन, चेतन द्रव्य है शेष चार अचेतन द्रव्य है। भारतीय हिन्दू दर्शन जिसे आत्मा कहता है उसे जैन दर्शन जीव (द्रव्य) कहता है। प्रत्येक जीव अपने स्वाभाविक रूप में अपने अनंत गुणों से परिपूर्ण रहता है। जैन धर्म में ब्रह्म, परमात्मा या ईश्वर को हिन्दू धर्म की भांति सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता तथा संहारकर्ता के रूप में नहीं माना गया है। जीवन की सत्ता को ही सर्वश्रेष्ठ माना गया है। किन्तु ऐसा मानने पर यह प्रश्न अवश्य उठता है कि जीवन के लिए शरीर का निर्माण अन्य जीवों के स्वरूपों का निर्माण सुख-दुःख आदि अनुभूतियों तथा वैचारिक कर्मों की उत्पत्ति कैसे होती है? इन शंकाओं के समाधान में जैन दर्शन पुद्‌गल द्रव्य को संसार के भौतिक तत्वों की उत्पत्ति का कारण बताता है। समस्त भौतिक संरचनाएं चाहे वे शारीरिक हों, मानसिक हों, सांसारिक हों या जीव द्रव्य के लिए हो, पुद्‌गल द्रव्य के कारण ही होती है।

आगे का विवेचन प्रस्तुत करने के पूर्व पाठकों को पुद्‌गल द्रव्य क्या है यह समझाना चाहता हूँ। पुद्‌गल द्रव्य का आशय एवं स्वरूप समझे बिना जैन दर्शन में आत्मा, परमात्मा, मृत्यु, कर्म, पुनर्जन्म, स्वर्ग-नर्क आदि को नहीं समझा जा सकता। वास्तव में भौतिक पदार्थों के परमाणु को ही पुद्‌गल कहना चाहिए अथवा परमाणु पुद्‌गल का सबसे छोटा रूप होता है। हम इसे परमाणु का भी परमाणु कह सकते हैं। बिना अंश के इस सूक्ष्म स्वरूप को अच्छेद्‌य, अभेद्‌य, अदाह्‌य, अग्राह्‌य कहा जाता है। न्याय वैशेषिक आदि ने जिसे भैतिक तत्व कहा है और वैज्ञानिक जिसे 'मैटर' शब्द से पहचानते हैं जैन धर्मावलंवी उसी द्रव्य को पुद्‌गल की संज्ञा देते हैं। बौद्ध दर्शन में भी इस शब्द का प्रयोग हुआ है। परन्तु वहाँ उसे 'चेतना संतति' के अर्थ में लिया गया है। तत्वार्थराजवार्तिक नामक ग्रंथ में पुद्‌गल युक्त आत्मा को

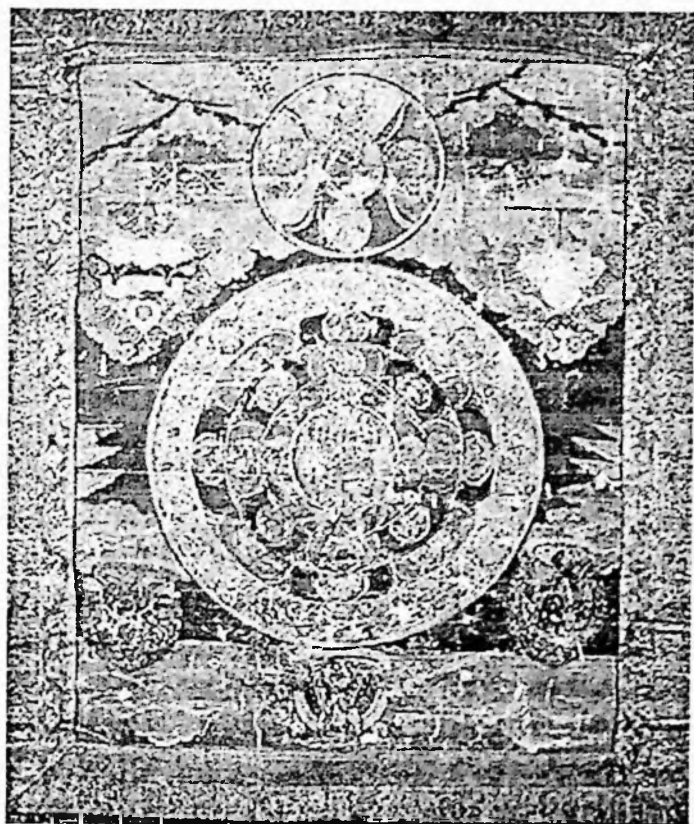
पुद्गल कहा गया है। स्पर्श, रस, गंध और वर्ण यह चार पुद्गल के मुख्य गुण होते हैं। प्रत्येक परमाणु में कोई भी वर्ग, एक गंध, एक रस और दो स्पर्श होते हैं। परमाणु, वर्णांतर, गंधांतर, रसांतर और स्पर्शांतर होता रहता है। इस संसार में जो भी इंद्रियों के द्वारा जाना जा सकता है। वह सब पुद्गल की विभिन्न परिणतियां हैं।

जैन धर्म मानता है कि संसार में न कभी एक परमाणु बढ़ता है और न घटता है, मात्र परमाणुओं की विभिन्न परिणतियां दृश्य जगत की सारी उथल-पुथल प्रकट करती है। पुद्गल का विभिन्न पुद्गलों के साथ मिलन तो होता ही है इसके अतिरिक्त जीवन के द्वारा पुद्गलों को आकृष्ट करता है। पुद्गलों पर जीवों के और जीवों पर पुद्गलों के विभिन्न प्रभावों के परिणामस्वरूप ही सृष्टि की सारी विचित्रताएं घटित होती रहती हैं। पुद्गल की दो परिणतियां मानी गयी हैं—सूक्ष्म और स्थूल। इस प्रकार हम देखते हैं कि पुद्गल का जैविक संसार के साथ घनिष्ठ संबंध है। यहाँ तक कि बिना पुद्गल को ग्रहण किए जीवन का कोई भी कार्य एक क्षण के लिए नहीं चल सकता। सुख-दुःख की अनुभूति से लेकर श्वासों के आवागमन आदि की क्रियाओं में पुद्गल का ही प्रभाव है।

जीव अपने कर्मानुसार शरीर धारण करता है। जीव, पुनर्जन्म और कर्म सिद्धांत इन तीन संज्ञाओं को जैन धर्म अधिक महत्व देता है। शरीर के अनुपात में जीव का अनुपात होता है ऐसा मानते हैं। जीव ही सत्कर्म और असत् कर्म करता है। उसी के आधार पर उसे विभिन्न शरीरों में जन्म लेना पड़ता है। अन्य दर्शन आत्मा को व्यापक मानते हैं। उनके मतानुसार आत्मा का आकार निर्धारित नहीं होता, किन्तु जैन दर्शन जीव आत्मा को शरीर-परिमाण मानता है अर्थात् जिस प्राणी के शरीर का जितना आकार होता है उसके जीव का भी उतना आकार होता है। जैसे दीपक का प्रकाश कमरे के आकारानुसार विस्तृत या संकुचित होता रहता है। वैसे ही जीव भी शरीर के अनुसार संकुचित या विस्तृत होता है।

अतः शरीर के परिणाम होने से मृत्यु के बाद जीव उस शरीर को छोड़कर दूसरा शरीर धारण करने के लिए यात्रा करता है और अपने किए हुए सत्-असत् कर्मों के अनुसार नया जन्म धारण करता है।

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि जैन धर्म, हिन्दू धर्म की तरह पुनर्जन्म को पूर्ण मान्यता देता है। जीव की, संसार की, शरीर की, गतियों में पुद्गल के प्रभाव को सबसे अधिक मानता है। अणु-परमाणु के संयोजन से सृष्टि निर्माण की वैज्ञानिक आधारशिला रखता है। विश्व के वैज्ञानिकों को जैन दर्शन ने



पुद्गल की सहायता से जीव, जगत, पदार्थ, भावनाओं, कर्म-ज्ञान आदि के सूक्ष्म विवेचन का अवसर प्रदान करता है।

हिन्दू दर्शन में भी पुद्गल के समान परमाणु संयोजन से सृष्टि के स्थूल और सूक्ष्म निर्माण की बात को कहीं-कहीं महत्त्व दिया गया है।

मैं जहाँ तक समझता हूँ कि भौतिक वादियों ने यदि इस रहस्य को समझ लिया होता तो वे भी अपने विचारों का विस्तार करके अपने सिद्धांत को नया मोड़ दिया होता।

बौद्ध धर्म में पूवर्जन्म

बौद्ध धर्म में भी पुनर्जन्म के प्रति पूर्ण आस्था प्रकट की गयी है। अहिंसा परमोधर्मः के सिद्धांत को माननेवाले बौद्ध धर्मावलंबी लोक-परलोक एवं कर्मफल पर पूर्ण विश्वास रखते हैं। 'धम्म पद' नामक ग्रंथ में स्थान-स्थान पर तथागत बुद्ध की वाणी से स्वर्ग-नर्क, पाप-पुण्य, सद्‌गति-दुर्गति लोक-परलोक, पुर्वजन्म, पूनर्जन्म तथा निर्वाण-पद की व्याख्या की गयी है। इस ग्रंथ के वचन 371 में स्वयं तथागत बुद्ध कहते, "हे भिक्षु! ध्यानकर और सावधान रह। अपने चित्त को खुशी की ओर न ले जा ताकि तुझे बेपरवाही के बदले नर्क में लोहे का गोला न निगलना पड़े और जलते समय यह न चिल्लाना पड़े की हाय यह दुःख है।"

धम्म पद के वचनों में निम्नलिखित बातें और स्पष्ट की गयी है, "कितने ही लोग फिर जन्म लेते हैं। पापी नर्क को जाते हैं। पुण्यात्मा स्वर्ग को जाते हैं। जो सांसारिक बाधाओं से मुक्त हैं वे निर्वाण पद पाते हैं।" इस शरीर के बनानेवाले को ढूंढने में मुझे अनेक जन्म लेना दुःखदायी है। किन्तु हे शरीरकर्ता। अब तुझे देख लिया है इसलिए तू अब इस शरीर को पुनः नहीं बना पाएगा। शरीर की तमाम हड्डियां एवं शहतीर टूट गयी हैं और चित्त निर्वाण के समीप पहुंचकर सारी वासनाओं को नष्ट कर चुका है।"

तथागत बुद्ध के वचनों से यह स्पष्ट हो जाता है कि बौद्ध धर्म में पुनर्जन्म को पूर्ण मान्यता दी गयी है। बौद्ध धर्म की जातक कथाओं में स्वयं तथागत बुद्ध के विभिन्न जन्मों का वृत्तांत मिलता है।

सिख धर्म में पुनर्जन्म

सिख धर्म की यह मान्यता है कि जीवात्मा अपने कर्मों का फल भोगने के लिए बार-बार जन्म लेती है। भारतीय मनीषियों एवं दूसरे धर्मगुरूओं के सदृश सिख गुरू श्री गुरू गोविंद सिंह ने अपने दशम ग्रंथ में जीवात्मा के पुनर्जन्म पर अपना विश्वास प्रकट करते हुए उल्लेख किया है, "मेरा स्वयं का पुनर्जन्म ईश्वर की प्रेरणा से दुष्टों का संहार करने के लिए हुआ है।"

जीवात्मा का बार-वार जन्म लेना पुनर्जन्म के सिद्धांत का मूल है। यह वात भी सिख धर्म में स्वीकार की गयी है कि जो जैसा कर्म करता है उसे उसके कर्मानुसार ही योनि की प्राप्ति होती है। मानव योनि को प्राप्त कर उत्तर श्रेष्ठ कर्मों के द्वारा जीवात्मा के आवागमन से मुक्त पाने को मुख्य धर्म कहा गया है। इस धर्म में उल्लेख है, "जीव के आवागमन से छूटने का एक ही मार्ग है—सांसारिक विषय-वासनाओं से विरक्त होकर शुभ कर्मों को निष्काम संपन्न करना। मुक्ति अर्थात् आवागमन से छुटकारा पाने के लिए वैराग्य को महत्त्व दिया गया है और संसार को मिथ्या बताया गया है। इस तरह हम देखते हैं कि सिख धर्म हिन्दू धर्म के ही समान है और धर्म, कर्म, जन्म-मृत्यु एवं पुनर्जन्म को मान्यता देता है।

ईसाई धर्म में पुनर्जन्म

संसार के अनेक धर्मों में ईसाई धर्म का अपना एक प्रमुख स्थान है। आज यह धर्म मानवता विषयक अपनी मान्यता के कारण दुनिया भर में फल-फूल रहा है। परन्तु जहाँ तक पुनर्जन्म का सवाल है इस संबंध में आधुनिक इसाई धर्म पुनर्जन्म में आस्था रखता है, ऐसा विवरण मिलता है। सेंट जान की वाइविल के ग्यारहवें अध्याय में एक ऐसी वचनावली मिली है। जिसकी संतोषप्रद व्याख्या पुनर्जन्म के सिद्धांत को माने विना अधूरी-सी लगती है।

लेकिन आधुनिक ईसाई धर्म एवं दर्शन पुनर्जन्म को पूरी तरह नकारते हैं। हाँ कुछ विद्वानों ने अवश्य ही यह प्रश्न किया है कि क्या हजरत ईसा अपने पिछले जन्म में एलीसियस थे?

एक विद्वान का तो यहाँ तक कहना है कि जीजस पिछले जन्म में एलीसियस और जीजस के गुरू जान दि बैटिटस्ट एलीजा थे। दरअसल जीजस के रूप में एलीसियस के अवतार की भविष्यवाणी कई सौ साल पहले की जा चुकी थी, क्योंकि उन्हें परमात्मा की एक दैव योजना को पूरा करने के लिए जन्म लेना था।

यह भविष्यवाणी ईसा से आठवीं शताब्दी पूर्व एसाइयाह की पुस्तक में इस प्रकार की गयी है– "इसलिए भगवान स्वयं तुम्हें एक निशानी देंगे। देखो, एक कुमारी गर्भ धारण करेगी और एक बेटे को जन्म देगी और उसका नाम एमैनूएल रखेगी।"

सेंट मैथ्यू ने ईसा के जन्म की घटना का उल्लेख करते हुए कहा था, "पैगंबर की भविष्यवाणी में प्रभु के बारे में जो कुछ कहा गया था, वह पूरा होने के लिए अब यह सब कुछ किया गया है। देखो, एक कुमारी गर्भधारण करेगी और बच्चे को जन्म देगी। लोग उस बच्चे को एमैनूएल की संज्ञा से पुकारेंगे जिसका अर्थ होगा कि भगवान हमारे बीच में आ गये हैं।"

परन्तु इन प्राचीन आख्यानों के बाद भी ईसाई धर्म एवं दर्शन में पुनर्जन्म के सिद्धांत को मान्यता नहीं दी गयी है। फिर भी हिन्दुओं की तरह ईश्वर पर इसाइयों का अटूट विश्वास है। वे मानते हैं कि ईश्वर एक है और केवल उसी की उपासना करनी चाहिए। ईश्वर सबका पिता है। वह सबको प्यार करता है पर गरीब एवं असहायों से अगाध प्रेम करता है। शुद्ध हृदय से प्रायश्चित करने पर वह पापियों को क्षमा कर देता है। इस धर्म में बुराई का बदला भलाई से देने की बात भी कही गयी। तात्पर्य यह कि दुनिया के तमाम धर्मों की भाँति मानव कल्याण, ईश्वरीय सत्ता की स्वीकारोक्ति इस धर्म में भी है। हाँ, हिन्दू दर्शन की तरह वह पुनर्जन्म को, लोक-परलोक को स्वीकार नहीं करता है।

1. पहले शीला अब प्रीति

नन्ही प्रीति की बातें कृष्णा देवी की समझ में नहीं आ रही थीं, तो भी उन्होंने इस सबको गंभीरता से नहीं लिया था। स्कूल में आनेवाला लगभग प्रत्येक नया बच्चा मन न लगने की बात किया करता है, मगर प्रीति ने जिद्द पकड़ ली, तो उन्हें उसकी बात को तवज्जो देनी पड़ी। प्रीति ने उनसे कहा था कि वह उस छोटी क्लास में न बैठकर ऊपर बड़ी कक्षा में बैठेगी।

"उधर बड़े-बड़े अक्षर पढने पड़ेंगे। इधर जैसी ए. बी. सी. नहीं...", कृष्णा देवी ने हसंते हुए कहा, तो उनकी बात काटकर बोली, "हाँ, मैं ए. बी. सी. नहीं, बड़े अक्षर लिखूंगी।"

"भला बड़े अक्षर कैसे लिख लोगी? अभी तो तुम्हें ए. बी. सी. भी नहीं आता।"

"आती है, मुझे सब आती है। लाओ, मैं लिखकर दिखाऊं।"

"अरी प्रीति, तू तो एकदम से बड़ी हो गयी!"

"मैडम, मैं प्रीति नहीं, शीला हूँ।" प्रीति झल्लाकर बोली।

"प्रीति तो बहुत अच्छा नाम है। क्या तुम अपना नाम बदलना चाहती हो?"

"मेरा नाम प्रीति नहीं है। आप मेरा नाम बदल रही हैं। मैंने बताया न, मेरा नाम शीला है।" प्रीति ने जोर देकर कहा, तो कृष्णा देवी आगे कुछ कहने के बजाय उसे प्रिंसिपल के कमरे में ले गयी।

प्रिंसिपल पवन कुमार चौहान ने कृष्णा से पूरी बात सुनकर एकबारगी गौर से बच्ची को देखा। फिर प्यार से उसे अपने पास बुलाते हुए पूछा, "क्या नाम है बेटी आपका?"

"शीला।" उसने एकदम संक्षिप्त उत्तर दिया।

"मगर तुम्हारे माता-पिता ने दाखिला करवाते समय तुम्हारा नाम प्रीति ही लिखाया हैं।"

"वो मेरे मम्मी-पापा नही हैं। मेरे बापू तो खूब लंबे हैं।"

"क्या नाम है तुम्हारे बापू का?"

"मास्टर कर्ण सिंह।"

"वो कहाँ रहते हैं?"

"वो तो अपने गाँव में रहते हैं।"

"कौन-से गाँव में?"

गाँव के रूप में जिस नाम का प्रीति उल्लेख कर रही थी, वह चौहान की समझ में नहीं आ रहा था। फिर इस तरह के नामवाले गाँव की बावत उन्होंने कभी नहीं सुना भी न था। इस मामले में कृष्णा देवी की स्थिति कमोवेश जैसी थी।

चौहान कुछ देर खामोश होकर सोचते रहे, फिर प्रीति की ओर देखते हुए कृष्णा देवी से बोले, "मैडम, मुझे तो यह मामला पुनर्जन्म का लग रहा है। ज्यादा पूछताछ करने से बच्ची पर कोई गलत असर पड़ सकता है। आप चपरासी को भेजकर इसके माँ-बाप को बुलायें और अभी इस सबकी किसी से कोई चर्चा न करें।"

"इसके पापा तो दिल्ली में नौकरी करते हैं, मम्मी घर पर होंगी। मैं अभी उन्हें बुलवाती हूँ।"

"ठीक है। बच्ची को यहीं बैठी रहने दो। और हाँ, इसके खाने के लिए कुछ स्नैक्स वगैरह भेजवा दो।" चौहान ने कहा। कृष्णा देवी बाहर चली गयीं।

जिला सोनीपत, हरियाणा में मुख्यालय से लगभग 20 किलोमीटर की दूरी पर एक नगर है—खरखोदा। खरखोदा से लगभग 25 किलोमीटर के अंतर पर एक गाँव बसा हुआ है—जुआं। इसी गाँव में एक किसान प्रभुदयाल हुआ करते थे। उनके परिवार में पत्नी मेवा देवी व तीन पुत्रियों के अलावा दो लड़के थे—टेकराम और दयानंद।

दसवीं पास करने के बाद टेकराम को दिल्ली के दूरसंचार विभाग में नौकरी मिल गयी, तो जल्दी ही प्रभुदयाल ने उसकी शादी सुनहरी देवी से कर दी। यह शादी 12 जून, 1986 को जुआं गाँव में सम्पन्न हुई थी। उन दिनों टेकराम दिल्ली में अकेले रहते थे और साप्ताहिक अवकाश पर गाँव आ जाया करते थे।

23 जून, 1987 को सुनहरी देवी ने एक पुत्री को जन्म दिया। नाम रखा गया—कुसुमलता। कुसुम के जन्म के समय सुनहरी को भारी तकलीफ का सामना करना करना पड़ा था।

उसी बीच प्रभुदयाल के पेट पर फोड़ा हो गया था, जो उनके लिए जानलेवा सिद्ध होता जा रहा था। कुसुम उस रोज पूरे तीन महीने की थी, जव प्रभुदयाल का इसी फोड़े की वजह से देहान्त हो गया। जिस वक्त उनकी मौत हुई, रात्रि के ग्यारह बजकर पांच मिनट हुए थे।

अगले रोज अंत्येष्टि के वाद टेकराम और दयानंद अन्य रिश्तेदारों के साथ घर लौटे तो देखा, मेवा देवी कराह रही थी। सभी यह देखकर आश्चर्यचकित रह गये कि प्रभुदयाल की तरह मेवादेवी के पेट पर भी ठीक वैसा ही एक फोड़ा निकल आया था और वह उसी की वजह से तड़प रही थीं। मेवा देवी को तत्काल जुआं के प्राइमरी हेल्थ सेंटर ले जाया गया। वहाँ के चिकित्सा अधिकारी डॉ. सतवीर सिंह ने विधिवत परीक्षण करने के बाद कहा, "यह तो जानलेवा हो चुका है। आपरेशन के लिए सोनीपत ले जाना होगा।"

उसी दिन मेवादेवी को सोनीपत ले जाया गया।

सोनीपत के सरकारी अस्पताल में विस्तर पर लेटी मेवादेवी खिड़की की तरफ मुंह करके किसी से बतियाती रहती थी। टेकराम ने इस संबंध में उनसे पूछा, तो वोली, "उधर तुम्हारा वापू खड़ा है। उसी से बात करती हूँ। मुझसे अपने पास आ जाने को कह रहा है।"

प्रभुदयाल की मौत बुधवार को हुई थी। तीन दिन बाद शनिवार को दवाएं लेने से इन्कार करते हुए मेवादेवी ने डॉक्टर से कहा, "दवा देने से कोई फायदा नहीं। जिस वक्त टेकराम के पिता की मौत हुई थी, उसी वक्त आज मुझे भी चले जाना है।"

उस रात मेवादेवी का विशेष ध्यान रखा गया। दस बजे टेकराम खाना खाने रवाना हुए, (तो छोटे भाई दयानंद और उसकी पत्नी कैलादेवी को छोड़कर गये।) 11 बजकर 10 मिनट पर वह लौटा तो देखा, दयानंद माँ की टांगे दवा रहा था। उस वक्त मेवादेवी के भाई मेहर सिंह भी टेकराम के साथ आये थे। उनकी निगाहें वहन की खुली आँखों पर पड़ी, तो वह चिल्लाकर वोले, "इसकी आंखें पथरायी है।"

मेवादेवी का देहान्त हो चुका था। जैसा उन्होंने पहले ही घोषित कर दिया था, उनकी मौत पति के मौत के समय पर ही हुई थी।

परिवार में यह एक अचम्भा हुआ था।

समय गुजरता गया। 10 फरवरी, 1989 को टेकराम के यहाँ एक लड़के प्रदीप कुमार ने जन्म लिया। इसके जन्म के समय भी सुनहरी को भारी तकलीफ से गुजरना

पड़ा। प्रसव करवा रही डॉक्टरों की टीम ने एकबार में तो साफ कह दिया था, "जच्चा अथवा बच्चा दोनों में से किसी एक बचाया जा सकता है।"

मगर 20 दिसम्बर, 1990 को पैदा होने वाली प्रीति ने एकदम सुखद प्रसव का आभास दिया था सुनहरी देवी को। यों भी प्रीति अपने भाई-बहन के मुकाबले कहीं अधिक सुंदर थी। इस बच्ची के जन्म के बाद परिवार में खुशी की बात यह हुई कि कहीं पर बरसों से फंसी धनराशि ब्याज समेत एकमुश्त मिल गयी। इन पैसों से टेकराम ने खरखोदा के वार्ड नं. 7 में 300 गज का एक प्लाट खरीद लिया।

प्रीति छः महीने की हुई थी, कि टेकराम खरखोदा के उक्त प्लाट पर मकान बनवाकर सपरिवार वहीं रहने लगे। यहाँ से दिल्ली का रास्ता बस द्वारा महज डेढ़ घंटे का था। लिहाजा टेकराम यहीं से सुबह ड्यूटी पर दिल्ली जाते और शाम को लौट आते।

नौ महिने की होते ही प्रीति सामान्य बच्चों से पहले ही चलने-भागने लगी। बोलना भी सवा साल की उम्र में सीख गयी, मगर उसकी भाषा साफ न थी। काफी ज्यादा तुतलाकर बोलती थी वह। प्रीति में एक खास बात यह भी थी कि वह शुरू से ही गंभीर स्वभाव वाली थी। हमउम्र बच्चों के साथ खेलने न तो वह घर से बाहर जाती थी, न ही घर में भाई-बहन के संग खेलती थी। बस चुपचाप घर के एक कोने में बैठी रहती थी। बोलने के मूड में आती, तो घंटों बोलती रहती। मगर उस समय उसके द्वारा बोला गया एक भी शब्द सुननेवाले की समझ में नहीं आता था।

ढाई साल की ही जाने पर प्रीति की आवाज कुछ साफ हुई, मगर किसी को अपनी बात पूरी तरह समझा पाना अभी भी उसके बस में था।

आखिर चार साल की उम्र में प्रीति के शब्द स्पष्ट हुए। तब उसने एक बात दोहराना शुरू की, कि उसका नाम प्रीति न होकर शीला है और वह माजरा गाँव की रहने वाली है। वहाँ उसके पिता का काफी बड़ा मकान है। अपने पिता का नाम वह मास्टर कर्ण सिंह साफ बताती थी।

टेकराम पढ़े-लिखे थे। दिल्ली जैसे शहर में नौकरी करने के कारण ज़माने की बहुत-सी बातों से परिचित भी थे। लिहाजा उन्हें भी समझते देर न लगी कि प्रीति अपने पूर्वजन्म की बातें करती है। बेटी के भविष्य को देखते हुए उन्होंने प्रीति को हिन्दू शिक्षा सदन में नर्सरी कक्षा में दाखिला करवा दिया। उन का विचार था कि स्कूल में बच्चों की संगत मिलने पर प्रीति धीरे-धीरे अपना पिछला जन्म भूल जायेगी। यह जनवरी 1995 की बात है।

मगर प्रीति अपने नाम वगैरह पर शुरू ही के दिनों में अपनी अध्यापिका कृष्णा देवी से उलझ गयी। कृष्णा देवी ने इस संबंध में स्कूल के प्रिंसिपल पवन कुमार चौहान से बात की, तो उन्होंने प्रीति की माँ को अपने दफ्तर में बुलवा लिया। सुनहरी देवी ने प्रीति के बारे में वह तमाम कुछ बता डाली, जिसका जिक्र ऊपर हो चुका है।

"इसका मतलब हमारा यह सोचना एकदम सही है कि आपकी बच्ची को अपना पिछला जन्म याद है और वह उसी से जुड़ी बातें कह रही है।" सुनहरी देवी की बातें सुनने के बाद चौहान बोले—"जी। हमने माजरा नाम से जुड़े कुछ गाँवों में इस सबका पता लगाने का प्रयास किया था, मगर सफलता नहीं मिल सकी।"

"अच्छा, गाँव के बारे में आप इससे एक दफा फिर पूछें। मैं पूरे ध्यान से सुनने की कोशिश करूंगा।" चौहान ने कहा, तो सुनहरी देवी ने प्रीति को गोद में उठा लिया। फिर प्यार से उसके बालों में हाथ फिराते हुए पूछा, "कौन-से गाँव में रहते है तुम्हारे बापू?"

"ऊन माजरा में।" प्रीति ने एकदम से कहा। "यह ऊन माजरा हमारी समझ से परे है। काफी पता लगा लिये, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली।" सुनहरी देवी ने चौहान से कहा।

चौहान, प्रीति के चेहरे की ओर एकटक देखते हुए कुछ सोचते रहे। फिर प्यार से बोले, "यह ऊन माजरा कहाँ पड़ता है बेटी?"

"बहुत दूर है। वहाँ मेरे बापू हैं, मेरी अम्मा है, बहन है, भाई है। हमारा घर बहुत बड़ा है। मैं ऊपर छतवाले कमरे में रहती थी, वहीं पढ़ती थी।"

"अच्छा, यह बताओ प्रीति...।" चौहान कुछ कहने को हुए तो प्रीति उनकी बात काटते हुए बोली, "सर, मेरा नाम प्रीति नहीं शीला है।"

"हाँ, हाँ, शीला। तो शीला बेटी, यह बताओं कि जब तुम्हें उस घर की याद इतना सता रही है तो तुमने वह घर छोड़ क्यों दिया?"

"मैं मर गयी थी?" प्रीति बोली।

"उसके बाद तुम यहाँ कैसे आ गयीं शीला?"

"मैं तो भगवान के घर चली गयी थी। ये लोग मुझे अपने घर में ले आये।" प्रीति का इशारा सुनहरी देवी की ओर था।

चौहान ने आगे पूछा, "भगवान के घर में क्या था? वहाँ तुमने क्या देखा था बेटी?"

"उधर तो रामलीला हो रही थी। मैं वही सब देखती रही।"

"हम तुम्हें तुम्हारे वापू के पास कैसे लेकर जायें? हमें तो रास्ता भी नहीं मालूम।"

"बस से चले जाना। सड़क पर उतरकर पैदल चलना। खूब दूर चलकर आयेगा हमारा गाँव।" प्रीति ने बताया।

"कौन-सी बस में जायें बेटी? हमें तो यह भी नहीं मालूम कि तुम्हारे गाँव कौन सी बस जाती है और वह हमें कहाँ से मिलेगी?"

"ऊन माजरा बोल देना, बसवाला सड़क पर उतार देगा, फिर पैदल चले जाना। मैं भी साथ चलूंगी। मैं रास्ता बता दूंगी।"

मामला उलझा हुआ था। सुनहरी देवी द्वारा चौहान को बताये अनुसार, ऊन माजरा गाँव का पता लगाने के लिए उन्होंने पहले ही हाथ-पांव मार लिये थे। बच्ची से इस विषय पर और अधिक बातचीत करना एकदम बेकार था। जितना वह वता चुकी थी, उससे आगे कोई जानकारी दे पाना उसके बस में न था। लिहाजा चौहान ने सुनहरी देवी से कहा, "अभी तो आप इसे घर ले जायें। शाम को हम आपके यहाँ आयेंगे। इसके पापा कितने बजे तक घर आ जाते हैं?"

"सात वजे तक।" सुनहरी देवी ने बताया।

शाम साढ़े सात बजे चौहान और अध्यापिका कृष्णा देवी प्रीति के घर पहुंचे, तो टेकराम उनके ही इतंजार में थे।

"चौहान साहब, इस तरह के मामलों में बच्चा पिछले जन्म की बातों को कितने साल की उम्र तक याद रख सकता है?" टेकराम जी ने पूछा।

"ऐसा है टेकराम जी, आमतौर पर सुनने में आता है कि उम्र बढ़ने के साथ-साथ बच्चा अपना पिछला जन्म भूलने लगता है, मगर आपको प्रयास करके प्रीति को उसके पिछले जन्म के माँ-वाप से मिलवा देना चाहिए। वरना यह पढ़-लिख नहीं पायेगी। मन-ही-मन कुंठित होती रहेगी।" चौहान ने कहा।

"यह सब तो ठीक है, मगर ऊन माजरा गाँव की बाबत कहाँ से पता किया जाये?" टेकराम ने सवाल किया।

"मेरे विचार में आपको इस बारे में अखबारों में छपवा देना चाहिए।" इस दफा कृष्णा देवी ने राय दी।

टेकराम उनकी राय से सहमत न होते हुए वोले, "मैं नहीं चाहता कि प्रीति की पिछले जन्म के माँ-बाप से मुलाकात हो। मुझे प्रीति से वहुत ज्यादा प्यार है।

कहीं ऐसा न हो कि वे लोग प्रीति को ले जायें या फिर वह ही उनके साथ रहने की जिद करने लगे।"

"नहीं, आज के ज़माने में इस तरह के रिश्तों पर कौन किसी से उसकी औलाद छीन सकता है। कृष्णा जी ठीक कहती हैं। आप प्रीति के बारे में समाचार छपवाकर उसके पिछले माँ-बाप की तलाश करवायें। मैं नहीं समझता कि इससे आपको कोई नुकसान होगा।" चौहान बोले।

"मुझे थोड़ा सोचने का वक्त दीजिए," टेकराम बोले, "मेरी आपसे प्रार्थना है कि फिलहाल आप इस संबंध में किसी से बात न करें—खासकर किसी प्रेसवाले से।"

उस रोज बात यहीं खत्म हो गयी। चौहान और कृष्णा अपने-अपने घर चले गये। इससे आगे का घटनाक्रम खुद-ब-खुद एकदम तेजी से चल पड़ा।

जिला रोहतक के अंतर्गत शहर बहादुरगढ़ से छः किलोमीटर की दूरी पर एक गाँव बसा है— नून माजरा। इस गाँव की दो लड़कियां मटिंडू गाँव में ब्याही थी। मटिंडू खरखोदा से पांच किलोमीटर के फासले पर है। इस गाँव के कई ग्वाले खरखोदा में रोजाना दूध बेचने आते थे। टेकराम ने प्रीति के पुनर्जन्म की बात बाहर न निकलने देने के कितने भी प्रयास कर रखे हों, मगर बात बाहर निकलकर पूरे गाँव में फैल ही गयी थी।

खरखोदा में दूध बेचते समय धर्मपाल नामक एक ग्वाले ने भी यह बात सुनी, तो उसने इसकी चर्चा मटिंडू में ब्याही शीला से कर दी। शीला ने छूटते ही कहा, "मास्टर कर्ण सिंह तो मेरे मायके नून माजरा में रहते हैं। उनकी भी लड़की का नाम शीला था, जो कुछ साल पहले एक्सीडेंट हो जाने की वजह से मर गयी थी।

"प्रीति कहीं पिछले जन्म की शीला तो नहीं?" धर्मपाल ने कहा, तो शीला अपने पति को साथ लेकर उसी रोज टेकराम के घर पहुंच गयी।

प्रीति उस समय स्कूल गयी थी। दोपहर दो बजे वह घर आयी, तो उसे देखकर शीला ने बेसाख्ता कहा, "हू-ब-हू वही, अरे यह तो वही शीला है। मैं उसे अच्छी तरह जानती थी।"

आश्चर्यजनक बात यह भी रही कि प्रीति ने अपने गाँव की शीला को तत्काल पहचान लिया। उससे बात करते हुए अपने परिवार के सदस्यों के अलावा गाँव के अन्य लोगों के हालचाल भी पूछे। साथ ही वह शीला के साथ ऊन माजरा जाने की

जिद भी करने लगी। अब यह स्पष्ट हो गया था कि प्रीति द्वारा ऊन माजरा कहा जाने वाला गाँव में नून माजरा था।

टेकराम उस वक्त अपनी ड्यूटी पर दिल्ली गये हुए थे। उनकी अनुपस्थिति में प्रीति को कहीं ले जाना उचित न था। लिहाजा शीला यह कहते हुए अपने पति के साथ रवाना हो गयी कि वह नून माजरा से मास्टर कर्ण सिंह को बुलाने जा रही है।

कर्ण सिंह के परिवार में पत्नी अंगूरी देवी और सात बच्चे थे। लड़कियां—मुन्नी, शीला, सुनील और लड़के हंसराज, देवेन्द्र, जयप्रकाश, जितेन्द्र। उनमें 2 सितम्बर, 1975 को पैदा होनेवाली शीला अपने बहन-भाइयों में सबसे होशियार थी—पढ़ने में भी और घर-बाहर के अन्य कार्यों में भी।

31 दिसम्बर, 1989 की शाम की बात है। उन दिनों शीला गाँव के सरकारी हाई स्कुल में सातवीं कक्षा में पढ़ रही थी। घर में बंधे पशुओं के लिए चारे की आवश्यकता थी। भाई लोग घर में न थे। लिहाजा पढ़ाई से फारिग शीला ही चारा लेने घर से निकल पड़ी।

चारा लाने के लिए मुख्य सड़क पार करके दूसरी तरफ जाना पड़ता था। चारे का गट्ठर सिर पर लादे शीला घर लौटने को मुख्य सड़क पर पहुंची, तो उधर टेंपो आकर रूकी। टेंपो के करीब से निकलकर शीला जरा ही आगे बढ़ी थी कि विपरीत दिशा से पूरे वेग से आ रही मारूति वैन से टकरा गयी। प्रत्यक्ष दर्शियों के अनुसार, नीले रंग की उस वैन से टकराते ही शीला के सिर से चारे का गट्ठर परे जा गिरा और वह स्वंय आसमान में दस-बारह फुट ऊंचा उछलती हुई नीचे जमीन पर आ गिरी।

घायल शीला को तत्काल रोहतक मेडिकल कॉलेज ले जाया गया, मगर वह फिर होश में न आयी। 3 जनवरी, 1990 को उसकी मौत हो गयी।

कर्ण सिंह को शीला से बहुत प्यार था। उन्होंने मकान की ऊपरी मंजिल पर एक कमरा विशेष रूप से शीला के लिए ही बनवाया था। शीला की मौत के कुछ ही समय बाद उन्होंने भावुक होकर वह कमरा तुड़वा दिया।

शीला को कर्ण सिंह भुला नहीं पा रहे थे, फिर समय गुज़रने के साथ उसकी स्मृतियां धुंधली होने लगी थीं।

अब पूरे पांच साल बाद गाँव की ही एक अन्य शीला उनकी शीला की खबर लायी थी। मटिंडू में ब्याही शीला जिस वक्त वहां पहुंची, कर्ण सिंह किसी काम से दिल्ली गये हुए थे। वह किसी भी वक्त लौट सकते थे, लिहाजा उनका इंतजार किया जाने लगा।

अगले रोज यानी 3 फरवरी, 1995 को दोपहर को कर्णसिंह नून माजरा लौटे, तो गाँव में घुसते ही उन्हें शीला के पूनर्जन्म का समाचार मिल गया। उस समय उनके वड़े भाई मदन सिंह भी साथ थे। दोनों ने तत्काल टैक्सी पकड़ी और 65 किलोमीटर दूर स्थित टेकराम के घर जा पहुंचे।

पूर्वजन्म के पिता को सामने पाकर प्रीति "वापू, वापू" कहकर कर्ण सिंह से लिपट गयी।

"अरे, वेटी, मैं तेरा वापू नहीं हूँ। तेरे वापू तो पीछे खड़े है।" कर्ण सिंह ने पीछे मुड़कर मदन सिंह की ओर इशारा करते हुए कहा।

"वापू, यह आप क्या कह रहे हैं! वो तो मेरे ताऊ हैं।" प्रीति ने कहा, तो कर्णसिंह ने उसे उठा कर गले लगा लिया।

मदन सिंह और कर्ण सिंह ने घर-परिवार के सदस्यों और गाँव-मोहल्ले के लोगों से लेकर उसके स्कूल के अध्यापकों-अध्यापिकाओं के वारे में जितने भी प्रश्न किये, प्रीति ने सभी प्रश्नों के एकदम सही उत्तर दिये। शाम को टेकराम के आ जाने पर जिद करके कर्णसिंह प्रीति को अपने गाँव ले गये। घर से एक फर्लांग की दूरी पर प्रीति को टैक्सी से उतार दिया गया, तो वह अंधेरे में उछलती-भागती अपने घर की दिशा में चलती हुई घर में घूस गयी।

रात में प्रीति को शायद ध्यान न आया था, मगर अगली सुबह उठते ही उसने ऊपर अपने कमरे में जाने की जिद की। फिर कमरा तुड़वा दिये जाने की वात जानकर दुःखी हुई और कर्ण सिंह से झगड़ा करने लगी। कर्णसिंह द्वारा कमरा दोवारा वनवा दिये जाने का वादा करने पर ही यह झगड़ा समाप्त हो सका।

दिन निकलते ही टेकराम वेटी को लेने नून माजरा पहूंचे, तो प्रीति ने उनके साथ जाने से मना कर दिया। उस समय तक यह खवर पाकर पास के तीन गाँवो के लोग जमा हो गये थे। सभी ने इस वात की तस्दीक की, कि दोनों पक्षों में से कोई धोखा तो नहीं कर रहा था। अलवत्ता यहाँ तो कुदरत का एक ऐसा करिश्मा घटित हो रहा था, जो किसी की भी समझ से परे था। फिर इस प्रकरण में इस तरह के अन्य मामलों के मुकावले कुछ वातें काफी विचित्र थी। शीला के जिस्म पर जो पैदायशी निशान थे, वही सब प्रीति के जिस्म पर भी वचपन से ही हैं। प्रीति की सूरत अपने अव के भाई-वहन से न मिलकर पिछले जन्म के भाई-वहनों से मेल खाती है।

2. वह युद्ध में मारा गया था.....

स्कॉटलेण्ड में जन्मा कैन्ल्युलिन पूर्वजन्म में फ्रैडरिक विल्हैम डारक्लिजर था तथा वह जर्मन सेना में एक लड़ाकू विमान का चालक था। अपने पूर्वजन्म की विचित्र कहानी पर कैन्ल्युलिन ने एक किताव लिखी है जिसका नाम है 'फ्लाइट इन टू एजेजा' प्रस्तुत प्रमाणित विवरण प्रसिद्ध परामनोवैज्ञानिक रॉय स्टीसन की किताव 'रीइन्कारनेशन टू स्टोरिज' में भी संकलित किया गया है। कैन्ल्युलिन के इस विलक्षण विवरण की सत्यता पर खोज करते हुए रॉय स्टीसन लिखते हैं ....

में जर्मनी के किसी ऐसे नाजी नेता को नहीं जानता जिसका पुनर्जन्म हुआ हो परन्तु दक्षिणी अमरीका में कई लोगों ने यह दावे किए है कि पूर्वजन्म में वह जर्मनी की नाजी पार्टी के थे............. ।

स्कॉटलैण्ड में जन्मे कैन्ल्युलिन को अपने पूर्वजन्म की घटनाओं की खोज उस समय करनी पड़ी जब युवा होने पर उसने स्कॉटलैण्ड की रायल एयर फोर्स में वायुयान चालक की नौकरी पा ली। परन्तु ऊँची उड़ानो पर जाने से उसे डर लगता था..........,चालक होते हुए इस भय का कारण उसकी समझ में किसी प्रकार भी नहीं आ रहा था।

पूर्वजन्म में कैन्ल्युलिन की मृत्यु युद्ध के समय जहाज में आग लग जाने के कारण हुई थी। उस समय वह डोरनियर वायुयान उड़ा रहा था..........अब उसका पुनर्जन्म स्कॉटलैण्ड में हुआ है। वह 1960 में रायल एयर फोर्स में भर्ती हुआ था तथा उसे वायुसेना के वायुयान चालक की शिक्षा दी गई। वह जल्दी ही चालक वन गया परन्तु थोड़े ही समय वाद उसे नौकरी से निकाल दिया गया क्योंकि वह ऊँची उड़ानो से घवरा जाता था और अपनी इस घबराहट और डर का कारण उसकी समझ में नहीं आता था। अयोग्य चालक करार दिए जाने पर उसने स्कॉटलैण्ड छोड़



दिया और आस्ट्रेलिया चला गया। आस्ट्रेलिया जाकर उसने रॉयल ऑस्ट्रेलियन एयर फोर्स में नौकरी कर ली, यहाँ भी उस चालक की नौकरी नहीं मिली, वह वहाँ से जनसम्पर्क बिभाग में उच्च अधिकारी के पद पर नियुक्त कर लिया गया। परन्तु वह संतुष्ट नहीं था। एक बात उसके मन को कुरेदती रहती थी। वह एक सफल वायुयान चालक क्यों नहीं बन सकता? क्यों उसके मन में ऊँची उड़ानों के प्रति डर समाया हुआ है?

आस्ट्रेलिया में ही मृतात्माओं के सम्पर्क साधने वाली एक माध्यम की बैठक में जाने का उसे मौका मिला, उस माध्यम से उसे एक बड़ा ही विचित्र संदेश दिया, जिससे उसके मन में समाए, बिना वजह के डर के कारण पर प्रकाश पड़ता था। उसने वताया.........पूर्व जन्म में जब उसकी मृत्यु हुई तो युद्ध छिड़ा हुआ था। वह एक लड़ाकू विमान उड़ा रहा था तथा उसका विमान इंग्लैण्ड के ऊपर आकाश में उड़ रहा था, दुश्मनों की सेना ने वही उस विमान को मार गिराया था तथा उसे गोलियों से छलनी कर दिया था। उसकी मृत्यु के समय वास्तव में उसका विमान आसमान की ऊंचाइयो को छू रहा था।

माध्यम द्वारा पूर्वजन्म में अपनी हत्या की घटना बताए जाने के कुछ समय वाद किसी कारण वश उसे इंग्लैण्ड जाना पड़ा। पूर्वजन्म में घटित घटनाओं के विवरण की खोज की लालसा अभी उसके मन से समाप्त नहीं हुई थी। उसने आर्थर फिन्डले कॉलेज के वारे में सुन रखा था। रूटेव स्टैड एसैक्स में एक आध्यात्मिक केन्द्र वना हुआ है। वह वहाँ गया। उस आध्यात्मिक केन्द्र में भी कई प्रमाणित माध्यम है जो मृतात्माओं से सम्पर्क साधतें हैं तथा अदृश्य आत्माओं द्वारा सूक्ष्मलोक के रहस्यों का भी ज्ञान प्राप्त करते है। वहाँ उसे अपने पूर्वजन्म के वारे में कुछ और जानकारी प्राप्त हुई। उसे वताया गया कि पूर्वजन्म में अपनी मृत्यु के समय उसके शरीर के कई अंग कट गये थे तथा निकट भविष्य मे उसे उसका एक संवंधी मिलेगा जो उसे और आगे की जानकारी देगा।

माध्यम के बताए अनुसार जव वह वेल्जक्युपोर्ट पहुँचा तो उसकी मुलाकात अपने चाचा से हुई। जिसे मिले वहुत वर्ष वीत चुके थे। उसका चाचा अव सेना की नोकरी से सेवानिवृत हो चुका था तथा पेंशन पर अपने जीवन के अंतिम दिन गुजार रहा था।

कैन्ल्युलिन ने अपने मन में समाए डर वश माध्यम द्वारा पूर्वजन्म में युद्ध में मारे जाने की घटना की चर्चा अपने चाचा से की तथा उस समय तो वह आश्चर्यचकित रह गया जब उसके चाचा ने एक घटना बयान की।

चाचा के अनुसार युद्ध के समय वह शैरिघंम के क्षेत्र में अपनी डयूटी पर था। युद्ध अभी जोरो पर था। यह वात सन् 1942 की है। वास्तव में उसे एक डौरनियर विमान के चालक का मृत शरीर मिला था जिसकी वर्दी पर सभी तमगें व स्टार लगे हुए थे। उस मृत चालक के जेवो की तलाशी लेने पर उसके पास वरामद कागज़ो से मालूम हुआ था कि उसका नाम फ्रैडरिक विल्हैम डौरफ्लिजर था। इतनी जानकारी अपने चाचा के द्वारा दिए जाने पर केन्ल्युलिन और भी जानने के लिए उत्सुक हो गया। अव वह जानना चाहता था कि पूर्वजन्म मैं उसका हवाई जहाज किस प्रकार दुर्घटनाग्रस्त हुआ तथा किस प्रकार उसकी हत्या की गई? अन्य किसी प्रकार भी यह जानकारी उसे प्राप्त नहीं हो सकती थी। सेना के पुराने दस्तावेज छान मारे गये उसे फ्रैडरिक विल्हैम डौर्राफ्लजर का विवरण प्राप्त नहीं हो सका। अन्त में उसने सम्मोहन द्वारा प्रतीत गमन (हिप्नौटिक रिग्रेशन) की सहायता लेना चाहा तथा सम्मोहन की तन्द्रावस्था में पूर्वजन्म की मृत्यु का पूरा दृश्य स्पष्ट उसकी आँखों के सामने आ गया और उस भयानक क्षणो को उसने जैसे पुनः जिया। उसने देखा कि उसका हवाई जहाज आकाश की ऊंचाईयों में उड़ा जा रहा है। जहाज के नियंत्रण कक्ष में आग लग चुकी है। वस उसे केवल इतना ही होश था कि उसके जहाज में अपने साथी अधिकारी से जहाज से कूद जाने की सलाह दी थी, वस उसके वाद उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। वस उसी समय वाद शायद उसकी मृत्यु हो गई थी।

तन्द्रावस्था में ही उसने अपने उस साथी अधिकारी के नाम की याद उभरी थी, उसका नाम था हैल्मर क्रिपजाक। इस घटना के कोई आठ वर्ष वाद कैन्ल्युलिन ने हैल्मर क्रिपजाक नाम के एक वृद्ध व्यक्ति को खोज निकाला तथा उस समय तो कैन्ल्युलिन के आश्चर्य की सीमा नहीं रही। जव हैल्मर को जहाज दुर्घटना होने की पूरी घटना की याद स्पष्ट थी क्योंकि वहीं एक ऐसा अधिकारी था जो हवाई दुर्घटना से वच निकला था।

इस जन्म में उसका पुनः मिलन हुआ। कैन्ल्युलिन जो अभी जवान था अपने पूर्वजन्म की सभी घटनाएं अब याददाश्त में स्पष्ट थी और हैल्मर अपने जीवन के पूर्वार्द्ध में घटी घटनाओं की यादे अपने मस्तिष्क में संजोए था, इस अपूर्व मिलन व परस्पर वात करने के पश्चात् दोनों ने एक दूसरे के गले में वाहे डाल दी तथा उनकी आँखों में खुशी के आंसू वह निकले।

3. मैं पहले भी इस घर में रह चुका हूँ!

श्रीमती आर्थर हार्टन उस सारी विस्मयकारी बात को सुनकर स्तब्ध रह गयी थीं जो उनके पोते ने उनकी वहू के टोकने पर कही थी। दरअसल उस समय उसकी अवस्था मुश्किल से चार-पांच वर्ष की थी जबकि श्रीमती आर्थर हार्टन खुद 74 वर्ष की थी। उस ईसाई परिवार का लगभग हर समझदार व्यक्ति उस मासूम बच्चे की बात से स्तब्ध हुआ था और लगभग हर व्यक्ति का आश्चर्य मिश्रित स्वर फूटा था, "पुनर्जन्म..........।"

मासूम आर्थर ने बड़ी संजदगी से जवाब दिया था, "हाँ यह मेरा पुनर्जन्म है। मैं पहले भी इस घर में रह चुका हूँ।"

श्रीमती डबे हार्टन अर्थात् उस मासूम आर्थर की मम्मी ने उसे टोका था, "बेटे! यह सब तू क्या बक रहा है? मैं तो कहती हूँ तू यह सारी शरारत बंद कर दे।"

"शरारत, क्या कहती हो मम्मी! भला मैं क्यों शरारत करने लगा?"

"अरे, तू मुझे मम्मी कहता है, अपने पापा को पापा न कहकर उन्हें 'सोनी' कहकर पुकारता है और दादी को दादी न कहकर तू उन्हें उस नाम से पुकारता है जैसे तेरे दादा पुकारते थे। बेटा अदब-लिहाज भी कोई चीज हैं। तेरे दादा बचपन में उन्हें नाम न लेकर प्यार से 'सोनी' कहकर पुकारते थे और दादी को पम्पकिन। और तू उन नामों का प्रयोग करता है। बेटे! इन्हें पापा और दादी ही कहा करो।"

"मम्मी! पूर्वजन्म में मैं आर्थर हार्टन था यानि सोनी का डैड और पम्पकिन का पति। द्वितीय विश्वयुद्ध में लड़ाई के दौरान मेरी मृत्यु हुई थी। यह ठीक है कि इस जन्म में डबे हार्टन (सोनी) मेरे पापा हैं और पम्पकिन दादी माँ," मासूम आर्थर ने कहा फिर मासूमियत से बोला, "तुम्हें मेरी बात का विश्वास नहीं है क्या?"

बेचारी यह सब सुनकर भी हतप्रभ थीं। ईसाई धर्म पुनर्जन्म पर विश्वास नहीं करता था सो वे उस सच्चाई को कैसे मानती? परन्तु मासूम आर्थर की बातों से धार्मिक विश्वास की मीनार ढहती प्रतीत हो रही थी। उसने अपने दादा आर्थर हार्टन के जीवन एवं मृत्यु का सारा वृतांत सुनाकर सबको चकित कर दिया था। आर्थर ने यहाँ तक बताया कि उसकी दादी का वास्तविक नाम टूडी है। पूर्वजन्म में आर्थर हार्टन के रूप में वह उन्हें पम्पकिन के संबोधन से बुलाता था।

तब डवे हार्टन (मासूम आर्थर के पिता) ने विश्व प्रसिद्ध पुनर्जन्म विशेषज्ञ डॉ. जूल्सफेंटन को अपने बेटे की सारी दास्तान बतायी। डॉ. फेंटन ने जांच-पड़ताल एवं पूछताछ के बाद स्पष्ट किया कि वह मासूम सचमुच पूर्वजन्म में डवे हार्टन का पिता आर्थर हार्टन था। तब डवे ने अपने बेटे का नाम अपने पिता के नाम पर रख दिया—आर्थर हार्टन। मासूम आर्थर हार्टन अपने पूर्वजन्म की बातें बड़े-बुजुर्गों को सुनाता था, खासतौर से अपने सैनिक जीवन के विवरण और बुजुर्गवार यह स्वीकार करते थे कि अपने जीवन काल में आर्थर हार्टन ने जो विवरण उन्हें सुनाये थे, मासूम आर्थर द्वारा सुनाया जाने वाला विवरण अक्षरशः वैसा ही था। यह मासूम अपने हमउम्र बच्चों से अलग-थलग बड़े-बुजुर्गों की तरह ज्ञान की बातें करता था और उस उम्र वालों के साथ बैठा करता था।

4. राजपूत परिवार के दो बच्चों का पुनर्जन्म

बात सन् 1999 की है। राजस्थान के राजसमंद जिले की भीम तहसील के पंचायत कुकरखेड़ा के अन्तर्गत ग्राम सदारण में एक राजपूत परिवार में दो बच्चों को अपने पूर्वजन्मों की स्मृतियां होने से आसपास के क्षेत्रों में सनसनी फैल गई है। घटनाक्रम के अनुसार सदारण ग्राम के निवासी पूनम सिंह राजपूत (55) के पौत्र महेन्द्र सिंह (4 वर्ष) व पुत्री गंगा (8 वर्ष) ने अपने पूर्वजन्मों के ऐसे तथ्यों को उजागर किया है, जिनकी काफी सीमा तक पुष्टि होने से जन-साधारण में इन अनोखे बच्चों के प्रति जिज्ञासा जागृत हो रही है।

महेन्द्र सिंह के दादा पूनम सिंह ने बताया कि मात्र तीन वर्ष की अल्पायु से ही महेन्द्र उन्हें साथ लेकर इसी गाँव से चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित ढाणी में अपने परिवार के मकान पर ले जाने लगा था। पूनम सिंह के अनुसार, महेन्द्र ने अपने पूर्व परिवार के सदस्यों को पहचानते हुए उनसे आत्मीयता के साथ वार्तालाप में मगन हो जाता है। पूनम सिंह ने आगे बताया कि पूर्वजन्म में महेन्द्र सिंह उसी गाँव में एक गड़रिया था, वह आस-पास के जंगलों में भेड़ें चराने जाया करता था। उसका पूर्वजन्म का नाम हुकुम सिंह था व उसके तीन पुत्र व दो पुत्रियां थीं। उसके सबसे बड़े पुत्र का नाम लक्ष्मण सिंह था। जिसकी वर्तमान में आयु 60 वर्ष से अधिक है व वह खेतीहर मजदूर के रूप में कार्यरत है। पूनम सिंह के अनुसार, महेन्द्र जब अपने पूर्वजन्म के परिवार के सदस्यों के पास जाता है, तो लक्ष्मण सिंह को अपने चरण स्पर्श करने का निर्देश देता है। चूंकि महेन्द्र अपने पूर्वजन्म में लक्ष्मण सिंह का पिता हुआ करता था। इस संदर्भ में सदारण गाँव में महेन्द्र सिंह के मकान से चार किलोमीटर की दूरी पर निवास करने वाले लक्ष्मण सिंह से संपर्क किया गया तो लक्ष्मण सिंह ने इन तथ्यों की पुष्टि करते हुए कहा कि मेरे पिता हुकुम सिंह, जो किं एक गड़रिए थे, को हुक्का पीने का बहुत शौक था। लक्ष्मण सिंह के अनुसार एक दिन जब भेड़ें चराकर हुकुम सिंह (वर्तमान महेन्द्र सिंह) घर पर विश्राम करते

हुए हुक्के के कश ले रहे थे, अकस्मात ही उनको चक्कर आने लगे, वे गिर गए, तुरन्त ही उनके प्राण पखेरू उड़ गए। महेन्द्र सिंह, जो उस समय समीप के एक अन्य गाँव नवाखेड़ा में अपने नाना के परिवार में रह रहा था, से सम्पर्क करने का प्रयास किया, तो उस समय वह गाँव के बच्चों के साथ खेलकूद में व्यस्त था। वहाँ पर उसने हुकुम सिंह के नाम से पुकारने पर वह बहुत ही सहर्ष व प्रसन्न भाव से मिलने आया। आज भी वह अपने आपको पूर्वजन्म के हुकुम सिंह के नाम से कहलाना पसंद करता है। जब महेन्द्र सिंह से पूर्वजन्म के विषय में पूछताछ की गई तो महेन्द्र सिंह ने बताया कि पूर्वजन्म में एक बार जब हुक्का पी रहा था तो उसकी हृदय गति रूक गई तथा उसकी घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई थी। महेन्द्र सिंह के अनुसार मृत्यु के पश्चात् उसने समीप के कुकरखेड़ा ग्राम में जन्म लिया। उसने आगे उसे बताया कि उसी गाँव में अल्पायु में ही मौत हो गई थी। महेन्द्र सिंह के अनुसार उसकी निःसंतान जीवित पत्नी अभी भी उसी गाँव कुकरखेड़ा में रह रही है। समीप में ही खड़ी महेन्द्र सिंह की माँ ने बताया कि अभी तक कुकरखेड़ा ग्राम में महेन्द्र सिंह की पूर्वजन्म की पत्नी की पहचान नहीं हो पाई है। महेन्द्र सिंह के इससे पूर्वजन्म की तथ्यों की काफी सीमा तक पुष्टि हो गई है तथा उसके उस जन्म के परिवार के सदस्य विशेषकर लक्ष्मण सिंह, जो समीप की ढाणी में आज भी निवास कर रहा है, ने महेन्द्र सिंह द्वारा बताए गए तथ्यों की पुष्टि करते हैं। पूनम सिंह की पुत्री गंगा जो गाँव की स्कूल की तीसरी कक्षा की छात्रा है, का पूर्वजन्म का तथ्य अधिक रोमाँचकारी व आश्चर्यपूर्ण प्रतीत होता है। गंगा से बातचीत करने पर ज्ञात हुआ कि पूर्वजन्म में उसी गाँव में केली देवी के नाम से जानी जाती थी। उसके पति का नाम जालिम सिंह था, जो कि भीम-उदयपुर मार्ग पर ट्रक चालक के रूप में ट्रक चलाया करता था। गंगा के अनुसार एक दिन वह जब गाँव के एक टीले में से मिट्टी खोद रही थी तो अचानक टीला ढह गया, वह उसमें धंस गई थी। उस समय पूनम सिंह (उसके वर्तमान पिता) ने उसे मिट्टी खोदकर बाहर निकाला तथा उसे पानी पिलाया परन्तु उसको बताया कि मृत्यु के पश्चात् 12 मास के ही अन्दर उसने पूनम सिंह के ही परिवार में जन्म लिया था। इस विषय में उसी गाँव के समीप रहने वाले पूर्व पति जालिम सिंह से सम्पर्क किया गया तो उसने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि उसकी पूर्व पत्नी का नाम केली देवी हुआ करता था व उसकी मृत्यु टीले से मिट्टी खोदने के समय मिट्टी के धंसने से मृत्यु हो गई थी। जालिम सिंह जिसने तत्पश्चात् दूसरा विवाह कर लिया था, ने भी कहा कि मिट्टी के नीचे दबने के समय उसने वर्तमान पिता पूनम सिंह ने मिट्टी से बाहर निकाला था।

5. पूर्वजन्म की याद

दिल्ली के एक साधारण परिवार में शान्ति का जन्म 1926 में हुआ था। जन्म के समय ऐसी कोई घटना नहीं घटी, जिससे उसके माता-पिता को किसी बात का आभास होता।

जब वह नौ वर्ष की हुई तो उसने अपने माता-पिता को बताया कि पिछले जन्म में वह मथुरा में रहती थी। उसका नाम 'लुडगी' था, वह शादी-शुदा थी।

एक दिन शाम को जब शान्ति और उसकी माँ खाना बना रही थीं तो दरवाज़े पर दस्तक हुई। शान्ति दरवाज़ा खोलने गयी। जब काफी देर तक वह नहीं लौटी तो उसकी माँ उसे देखने आयी। वह यह देखकर आश्चर्यचकित रह गयी कि शान्ति उस आगन्तुक को, जो सीढ़ियों पर खड़ा था, घूर-घूर कर देख रही थी। उसने माँ से कहा, "यह व्यक्ति मेरे पति का चचेरा भाई है तथा मथुरा में हमारे घर से थोड़ी ही दूर पर रहता है।"

यह व्यक्ति यहाँ शान्ति के पिता से अपने व्यापार के संबंध में बातचीत करने आया था। उसने शान्ति को नहीं पहचाना। लेकिन उसने यह बताया कि उसके एक चचेरे भाई की पत्नी की मृत्यु दस वर्ष पूर्व एक बच्चे के जन्म के समय हो गयी थी। उसका नाम लुडगी था।

शान्ति के पिता उस व्यक्ति की इस बात पर सहमत हो गये कि वह अपने भाई को यह देखने के लिए दिल्ली भेजेगा कि शान्ति उसको पहचानती है या नहीं। शान्ति को इसके बारे में कुछ नहीं बताया गया। लेकिन जब उसका पति आया तो शान्ति उसे फौरन पहचान गयी। यह दौड़कर उससे लिपट गयी और बोली—"यह मेरा पति है।"

भारत सरकार ने इस केस की जांच-पड़ताल करने के लिए वैज्ञानिकों की एक

समिति नियुक्त की। उस समय इस घटना ने देशभर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया हुआ था।

वैज्ञानिक शान्ति को मथुरा ले गये। जैसे ही वह ट्रेन से उतरी, उसने अपने पति की माँ और भाई की तरफ इशारा करके उनका सही नाम बता दिया तथा उनसे वहीं की भाषा में बातचीत करने लगी, जबकि शान्ति के माता-पिता ने उसे केवल हिन्दी सिखायी थी।

वैज्ञानिकों ने अपने परीक्षण जारी रखे। उन्होंने शान्ति की आँखों पर पट्टी बांधकर बैलगाड़ी में बिठा दिया। वह बिना किसी झिझके के गाड़ीवान को अपने घर का रास्ता बताती चली गयी। अन्त में एक संकरी गली के पास आकर उसने गाड़ीवान को गाड़ी रोकने के लिए कहा। उसने कहा कि यही वही जगह है जहाँ वह पहले रहती थी। जब उसकी आँखों पर से पट्टी खोली गयी तो उसने घर के सामने बैठे हुक्का पीते एक वृद्ध की ओर इशारा करते हुए कहा—यह मेरे ससुर है। और वह व्यक्ति वास्तव में लुडगी के ससुर थे।

वैज्ञानिक अपने तर्कों को सीमाओं में बांध कर चले हैं। वे स्वीकार करते हैं कि दिल्ली में जन्मी इस बालिका को मथुरा के जीवन की स्मृति रह गयी है और यह स्मृति उसके मस्तिष्क में आश्चर्यजनक स्पष्टता अंकित है।

वैज्ञानिकों ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि उन्हें इस मामले में कोई जालसाजी नजर नहीं आयी। और उन्होंने जो कुछ देखा उसका कोई स्पष्टीकरण उनके पास नहीं है।

शान्तिदेवी की यह अनोखी गाथा भारत सरकार के कागज़ातों में आज भी सुरक्षित है। शान्तिदेवी आज भी जीवित है। उन्होंने अपने अतीत को भुलाकर नये जीवन मे जीना सीख लिया है।

शान्तिदेवी ने अपनी मृत्यु के बाद की कुछ घटनाओं का भी वर्णन किया है। उन्होंने बताया कि "जब मेरी मृत्यु हुई तो मुझे चार व्यक्ति दिखायी दिये, जो कुछ प्रकाश लिये हुए थे। "ये व्यक्ति मुझे लेने आये थे। उनमें से एक व्यक्ति के पास कागज़ था जिस पर वह कुछ लिख रहा था। मैं उनके पीछे-पीछे अंधेरे में जा रही थी। जबकि मुझे वे लोग प्रकाश में जाते हुए दिखायी दे रहे थे। वे लोग मुझे बहुत ऊंचे, धुंए एवं बादलों से घिरे हुए स्थान पर ले गये, जो संभवतः आसमान था। ऊपर पहुंचकर वे लोग अदृश्य हो गये। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं नीचे गिर रही हूँ। गिरते हुए मुझे चांदी की तरह चमचमाती हुई सीढ़ियां दिखायी दी थीं। नीचे गिरने पर मुझे अंधेरी और तंग कोठरी में बंद कर दिया गया।"

6. लड़की के रूप में जन्म लेने का अफसोस

इमिलिया लारेंज का जन्म 4 फरवरी, 1902 को ब्राजील में हुआ था। उसके पिता का नाम एफ. बी. लारेंज और माँ का नाम इडा लारेंज था। इमिलिया जब बड़ी हुई और कुछ सोचने-समझने की सामर्थ्य उसमें आयी तो बड़ी विचित्र बातें करने लगी। लारेंज दम्पति अपनी मितबोली बिटिया की इन बातों से परेशान हो जाते थे। वह प्रायः अपने दूसरे भाई-बहनों से, पापा से और खासतौर से मम्मी से कहती थी, "मुझे इस बात का बहुत दुःख है कि मैंने लड़की के रूप में जन्म लिया। काश! मैं लड़के के रूप में जन्मी होती।"

उस समय उसकी बातों को लारेंज दम्पति हंसी-ठिठोली में टाल देते थे, "तुम भी क्या बेकार की बातें करती हो बेटी! अरे हम लोग तो तुम्हें पुत्री के रूप में पाकर उतने ही प्रसन्न हैं जितने प्रसन्न पुत्र के रूप में पाकर होते। और हाँ लड़की होने की फिक्र तुम अपने मन से निकाल दो। तुम्हें इस घर-आंगन में लड़कों-सा ही स्नेह मिलेगा।"

परन्तु इमिलिया की उदासी मम्मी एवं पापा के तमाम आश्वासनों के बाद भी कम नहीं हुई। वह जैसे-जैसे बड़ी होती गयी उसके अहसास में लड़की होने की अरूचि का दर्द भी बढ़ता रहा। उसने कितनी ही बार इस अरूचि को अपने भाई-बहनों से प्रकट किया— "मैं अपने इस जीवन से उक्ता गयी हूँ। अरे, यह जीना भी कोई जीना है। तुम लोग देखना मैं मरूंगी और यदि सचमुच पुनर्जन्म सत्य है तो लड़का बनकर जन्म लूंगी।" और उसके बाद इमिलिया ने सचमुच कितनी ही दफा लड़की के रूप में अभिशाप के अहसास वाले अपने जीवन को मिटा डालने की कोशिश की। कई बार उसने आत्महत्या का प्रयास किया।

लारेंज दम्पति इस बात से बहुत परेशान थे पर विवश, आखिर उन्होंने उसकी शादी करनी चाहा पर वह इसके लिए तैयार नहीं हुई। हालांकि तब वह उन्नीसवें बसंत की दहलीज पर थी। उसके मम्मी-पापा उसके बार-बार आत्महत्या के प्रयास से बहुत क्षुब्ध थे, पर इमिलिया तो लड़की होने के अहसास से खिन्न थी और नया जीवन पाने को अर्थात् पुनर्जन्म लेने को आतुर। उसने अपनी इस आतुरता को पूरा करने के लिए 12 अक्टूबर, 1921 को 19 वर्ष, 8 माह, और 8 दिन की आयु में विषपान करके आत्महत्या कर ली।

उसके पापा ने तो सीने पर सब्र का पत्थर रख लिया पर मम्मी को उसकी मौत का बहुत सदमा पहुँचा। वे प्रायः ही फूट-फूट कर रोती रहतीं। इस तरह वर्षों बीत गये पर इमिलिया का दर्द उन्हें सालता रहा।

उन दिनों ब्राजील में परामनोविज्ञानियों ने आत्माओं का आह्वान करना और आत्माओं से माध्यम द्वारा बातचीत करना अपना एक खास प्रयोग बनाया हुआ था। ऐसी संगोष्ठियां प्रायः ही होती रहती थीं। मिसेज लारेंज को न जाने किस अदृश्य शक्ति ने प्रेरणा दी कि वे इस तरह की संगोष्ठियों में जहाँ प्रेततत्व पर परीक्षण होते थे खुद हिस्सा लेने लगीं। उन्हें ऐसे परीक्षणों में कुछ ज्यादा ही रूचि हो गयी थी।

आखिरकार एक ऐसी ही संगोष्ठी में जहाँ परामनोविज्ञानी एक माध्यम पर प्रेततत्व का परीक्षण करते हुए एक आत्मा आह्वान का कर बातचीत कर रहे थे मिसेज लारेंज को अपनी मृत बेटी इमिलिया का एक विचित्र संदेश माध्यम पर आयी आत्मा से मिला, "मम्मी! मुझे दुःख है कि मैंने आत्महत्या करके तुम्हें असहनीय वेदना दी है, पर मम्मी! प्लीज, विष पीना मेरी अपनी मजबूरी थी क्योंकि मैं लड़की के रूप में जीना नहीं चाहती थी। हाँ आत्महत्या करने का खुद मुझे पश्चाताप है। पर तुम अब चिंता न करो। मैं तुम्हारी कोख से फिर जन्म लूंगी—एक बेटे के रूप में। यह सब जल्दी ही होगा। अब तो तुम खुश हो न।"

मिसेज इडा लारेंज ने आत्मा द्वारा प्राप्त संदेश से अपने पति को परिचित कराया तो वे सिर्फ मुस्करा कर रह गये। दरअसल उन्हें आत्मा और पुनर्जन्म जैसी बातें मिथक से ज्यादा कुछ प्रतीत नहीं होती थीं। यूं भी इस विश्वास का कोई आधार नहीं था। मिसेज इडा उस समय तक पूरे दर्जन भर बच्चों को जन्म दे चुकी थीं और संतान के प्रजनन की बात उस अवस्था में पत्थर पर दूर्वा के उगने जैसी कहावत के सिवा कुछ नहीं थी। खैर! उन्होंने अपनी पत्नी की प्रसन्नता के लिए कोई तर्क-वितर्क नहीं किया।

परन्तु जब कुछ दिनों बाद मिसेज लारेंज के पांव भारी हुए तो एफ. वी. लारेंज चौके बिना नहीं रहे। इडा की प्रसन्नता का तो पारावार ही नहीं था। आखिरकार इमिलिया की मौत के दिन से 1 वर्ष, 3 माह, 20 दिन की अवधि में अर्थात् 3 फरवरी, 1923 को मिसेज इडा लारेंज ने एक बेटे को जन्म दिया। मिसेज लारेंज ने हर्षातिरेक में हुलस कर उसका नाम रखा—इमिलिया।

दूसरे लोग लारेंज दम्पति के इस बेटे को पौलो कहकर पुकारते थे। खैर! लड़का धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। उसका स्वभाव, रूचि, गुण सभी विषपान कर मृत हुई इमिलिया से बेतरह मेल खाता था। यूं भी उसके मिजाज में लड़कियों जैसा हाव-भाव था। जब वह पांच वर्ष का था तो सुई-धागे से लड़कियों की तरह कपड़े पूरी दक्षता से सिलता था। कभी-कभार वह ऐसी बातें करता था जिससे मृत इमिलिया के पूर्वजीवन का आभास मिलता था। दूसरे रूप में कहा जाय तो उसकी बातों से ऐसा प्रतीत होता था, मानो उसे मृत इमिलिया के जीवन-वृतांत का पता हो। पौलो (इमिलिया) बहुत दिनों तक लड़कियों जैसे ही वस्त्र पहनता रहा। उसने मृत इमिलिया की स्कर्ट को काट-छांट कर खुद अपने लिए लड़कों के पहनने वाला वस्त्र बनाया और उसे पहनकर खुश हुआ। जब वह चौदह वर्ष का हुआ तो उसकी रूचियां लड़कों जैसी होने लगीं पर कभी-कभी लड़कियों जैसे लक्षण उसमें दृष्टिगोचर हो जाते थे। इससे यह स्पष्ट होता है कि पुर्वजन्म के संस्कारों एवं गुणों से प्रभावित आत्मा इस जन्म में पौलो से पूर्वजन्म की इमिलिया के कार्य करा रही थी।

7. जुडवां भाइयों का पुनर्जन्म फिर से जुडवां भाइयों के रूप में

उत्तर प्रदेश के श्याम नगला गाँव में 5 अगस्त, सन् 1964 में पंडित रामस्वरूप शर्मा की पत्नी श्रीमति कपूरी देवी ने दो जुड़वा बच्चो को जन्म दिया उनमें से बड़े का नाम रामनारायण द्विवेदी तथा छोटे का नाम शेपनारायण द्विवेदी रखा गया। दोनों भाई रामू और राजू के नाम से पुकारे जाने लगे। गर्भावस्था के दौरान कपूरी देवी को प्रायः स्वप्न में दो बच्चे दिखाई पड़ते थे, जिसके वारे में बाद में यह सोचा गया कि ऐसे स्वप्न जुड़वा बच्चे होने का संकेत थे। जन्म के समय दोनों बच्चों के शरीर पर विचित्र प्रकार के जन्मचिन्ह देखे गये। दोनों ही के पेट तथा छाती पर लगभग एक सूत मोटी धारियां पड़ी हुई थी। रामू के पेट पर नाभि से कुछ ऊपर से शुरू होकर छाती पर फैली हुई पांच धारियां थी। रामू के शरीर पर केवल दो धारियां थी, जो एक दूसरे से लगभग दो इंच की दूरी पर थी। रामू की नीचेवाली दो धारियां तथा राजू को दोनों धारियां पूरे पेट पर बाये से दाये फैली हुई थी।

उस समय उन निशानों का कोई विशेष महत्व नहीं समझा गया। परन्तु जव बच्चे कुछ बड़े हुए और बोलने लगे, तब एक रहस्यमय तथ्य सामने आया। उनकी उम्र उस समय कोई तीन साल की होगी कि एक दिन दोनों पक्की सड़क की ओर चल दिये। जब उन्हें रोककर पूछा गया कि तुम कहाँ जा रहे हो, तो बोले कि वे अपने घर जा रहे थे। उस समय लोगों ने बच्चों का खेल समझ कर उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया।

इस घटना के कुछ दिनों बाद एक अजनबी व्यक्ति श्याम नगला गाँव से आया, जिसे देखकर वे दोनों बच्चें उसके पैर छूने लगे। इसके लिए उनके चाचा ने उन्हें डांटा कि क्यों किसी अजनबी के पैर छूते हो? इस पर बच्चों ने बताया कि वे उसे

पहचानते है। फिर उन्होंने अपने पिछले जन्म का हाल सुनाया कि वे ऊंचा लाडपुर के रहने वाले भीमसेन तथा भीष्म पितामह है तथा यह व्यक्ति वहीं का एक बुजुर्ग है।

रामनारायण उर्फ रामू तथा शेषनारायण उर्फ राजू पिछले जन्म के इसी ऊंचा लाडपुर गाँव के निवासी भीमसेन तथा भीष्म पितामह थे। पूर्वजन्म में इन दोनों की वहुत ही निर्मम तरह से हत्या की गयी थी। कदाचित रामू और राजू के पेट पर पड़े जन्मचिन्ह हत्या के समय उन पर पड़े प्रहार के चिन्ह थे।

इस मामले में यह भी एक अजीब संयोग था कि रामू और राजू की तथा भीम और भीष्म की जन्मतिथियां एक ही थी। सावन मास कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को सन् 1935 में भीम और भीष्म पैदा हुए थे और इसी तिथि को अगस्त सन् 1965 में रामू और राजू भी।

जन्मतिथियां ही नहीं, आदते भी एक-सी थी। भीम और भीष्म, दोनों ही अत्यन्त निर्भीक, पर न्यायप्रिय थे। ऐसे ही रामू और राजू भी निकले।

इन सव वातों का सूत्रपात तो उस समय हुआ, जव एक आश्चर्यजनक घटना घटी। बंसत पंचमी का दिन था। श्याम नगला गाँव के समीप गंगा के किनारे कुसुमखोर घाट है। उस दिन ऊंचा लाडपुर के निवासी चंद्रसेन तिवारी घाट पर स्नान करके अपने गाँव वापस जा रहे थे। श्याम नगला के पास उन्हें एक हनुमान जी का मन्दिर दिखाई पड़ा। चुकी तिवारी जी हनुमान जी के वड़े भक्त थे। वे मन्दिर के सामने जाकर आंखें वंद करके स्तुति करने लगे। अचानक उन्हें अपने पैरो पर किसी के स्पर्श का अनुभव हुआ। उन्होंने आंखें खोलकर देखा तो आश्चर्य चकित रह गये क्योंकि दो अजनवी पांच-छह साल के वच्चे उनके पांव छू रहे थे। उन्होंने उन अजनवी वच्चों से पूछा कि वह कौन है तथा उनके पांव क्यों छू रहे हैं?

तव उनमें से एक बच्चे ने वड़े ही आश्चर्य से कहा "ददू आप ने हमें नहीं पहचाना? मैं भीष्म पितामह हूँ और यह भीम सेन है। क्या आपका नाम चंद्रसेन नहीं है?" चंद्रसेन के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उन्हें उन अजनबी वच्चों की वातों पर यकीन ही नहीं आ रहा था। पर यह भी सच था कि उनके दो छोटे भाई थे भीष्म पितामह और भीमसेन, उनसे तीन साल छोटे। पर ये दोनों बच्चे कैसे हो सकते हैं? उनके भाइयों को मरे तो छः साल से ऊपर समय हो गया। तो क्या उन्होंने पुनः इन बच्चों के रूप में जन्म लिया है?

चंद्रसेन तिवारी के पूछने पर कि क्या वास्तव में वह दोनों भीमसेन तथा भीष्म पितामह हैं?



"हाँ ददू !" इतना कहकर वे दोनों बच्चे जाकर तिवारी जी की गोद में बैठ गये। कितनी ही देर वे तीनों आपस में बाते करते रहे। बातचीत के बीच अतीत की याद कर-करके वे रोये भी। चंद्रसेन की पुरानी यादें फिर से ताजा हो गयी... .... ।

चंद्रसेन के पिता कालीशंकर तिवारी की छः संताने थी। सबसे बड़ी जमना बेटी थी। उसके बाद चंद्रसेन तथा उन से तीन साल छोटे दो जुड़वा भाई भीमसेन और भीष्म पितामह थे। उनसे छोटी दो लड़कियों के नाम रानी और उर्मिला थे। जमुना तथा रानी विवाहित थी। उर्मिला का विवाह तब तक नहीं हुआ था। भीमसेन तथा भीष्म पितामह की शक्ल-सूरत तो एक-सी थी ही, स्वभाव तथा आचार-विचार भी काफी कुछ मिलते-जुलते थे। दोनों चंचल थे। शरारत उनकी रग-रग में वसी थी। उनकी शरारतों से गाँव वाले काफी परेशान थे तथा आये दिन उनके पिता पंडित कालीशंकर को शिकायते सुनने को मिलती थी। भीम और भीष्म दोनों जुड़वां भाई एक-दूसरे के साथ साये की तरह रहते थे। कभी झगड़ा भी होता, तो सुलह होते देर न लगती। साथ-साथ खाना खाते, साथ-साथ सोते।

इस तरह दोनों बड़े हो गये। भीमसेन काफी हृष्ट-पुष्ट था जबकि भीष्म इकहरे बदन के थे। बड़े भाई चंद्रसेन सौम्य थे, लेकिन भीमसेन और भीष्म उग्र स्वभाव के थे। दोनों निडर थे और गरीबों के हक के लिए बड़ो-बड़ों से टक्कर लेने में घबराते नहीं थे। इसी कारण वे गरीबों के लिए मसीहा बने हुए थे। पर इन्हीं कार्यों के कारण उनके काफी दुश्मन भी बन गये थे। यहीं चंद्रसेन के लिए चिंता की बात थी। पहले ही सन् 1955 में उनके सिर से पिता का साया उठ गया था और अब चंद्रसेन ही उनके संरक्षक थे। 50-60 बीघे पैतृक जमीन तीनों भाईयों में बराबर-बराबर बंट गयी थी। इसी बीच भीष्म गाँव के उपसंरपच भी चुन लिये गये तथा उन्होंने बंदूक का लाइसेंस भी बनवा लिया था। चंद्रसेन ने उनके उद्दंड स्वभाव को देखकर सोचा कि शायद शादी के बंधन में बंधने से दोनों की उग्रता कम हो जाये। उन्होंने भीमसेन का विवाह अतरौली गाँव की एक लड़की सुशीला से कर दिया। भीष्म का विवाह भी एक साल बाद बहावलपुर की मुन्नी नामक एक लड़की से हो गया।

समय बीतता चला गया। भीमसेन के तीन पुत्र हुए, जिनके नाम रामकिशोर, राजकिशोर तथा नेत्र किशोर रखे गये।

भीष्म का एक पुत्र हुआ, जिसका नाम द्रोणाचार्य रखा गया।

चंद्रसेन के खेत से मिला हुआ एक खेत पड़ोस के गाँव कुड़ियापुर के निवासी राजाराम का था। वह और उसका लड़का जगन्नाथ अक्सर चंद्रसेन के खेत की मेड़ तोड़कर नयी मेड़ बनाकर उस जमीन को अपने खेत में मिला लेते। इस बात का जब पता भीमसेन तथा भीष्म को पता चला दोनों लाठियां लेकर राजाराम के खेत की ओर चल पड़े। झगड़ा शुरू होना ही था कि किसी तरह चंद्रसेन ने बीच में आकर झगड़ा रूकवाया।

इस घटना ने दोनों भाईयों तथा राजाराम में दुश्मनी के बीज बो दिये। भीम और भीष्म का गुस्सा तो क्षणिक होता था। वे उस बात को भूल भी गये, परन्तु राजाराम अपने अपमान को नहीं भुला सका। इसके बाद एक बात और हुई। एक दिन उन भाइयों के पास एक मजदूर राधे फरियाद लेकर आया कि कुड़ियापुर गाँव के प्यारे नामक व्यक्ति ने उनसे दो माह तक काम कराया, पर उसकी मजदूरी नहीं दी थी। मजदूरी माँगने पर जान से मारने की धमकी दी। यह सुनकर भीमसेन का खून खौल उठा। उसने अपनी बंदूक उठायी तथा मजदूर राधे के साथ प्यारे के गाँव की ओर चल पड़ा।

प्यारे और भीमसेन दोनों की बीच झगड़ा इस कदर बड़ा की भीमसेन ने गुस्से में आकर अपनी बन्दूक की तीन गोलियां प्यारे के शरीर पर दाग दी। प्यारे के मरने के बाद भीमसेन व राधे ने लाश को बोरे में बंद करके कुंए में डाल दी। इस हत्या की पुलिस थाने में रिपोर्ट तो हुई परन्तु भीमसेन तथा भीष्म का लोगों में इतना आतंक था कि सब कुछ जानते हुए भी लोगों की जुबान पर ताले पड़े रहे। गवाही न होने के कारण पुलिस उनके खिलाफ कोई केस नहीं बना सकी। परन्तु प्यारे के बेटे दुलारे के मन में प्रतिशोध की भावना जन्म ले चुकी थी। उसने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि वह अपने पिता के हत्यारों से अवश्य ही बदला लेगा। इस प्रकार उन जुड़वां भाइयों के अब दो दुश्मन हो गये। पहला तो राजाराम, जिसको उन्होंने खेत के मामले में नीचा दिखाया था तथा दूसरा दुलारे, जिसके पिता की उन्होंने हत्या की थी।

दुलारे ने अपने पिता की हत्यारों से बदला लेने के लिए चाल चली। उसने ग्राम प्रधान सुबेदार सिंह को विश्वास में लेते हुए बताया कि उसके पिता ने गलत किया, वह इसके लिए बहुत शर्मिन्दा है तथा वह चाहता है कि भीमसेन तथा भीष्म पितामह से सुलह करना चाहता है।

दोनों भाइयों के मन में कोई छल-कपट तो नहीं था, इसलिए दोनों इस प्रस्ताव पर सहमत हो गये एवं समझौते को तैयार हो गये।

धीरे-धीरे उनके सम्बन्ध (प्यारे परिवार से) भी सामान्य हो गये तथा एक-दूसरे के घर आना-जाना भी होने लगा।

इसके बाद 28 अप्रैल, 1964 की रात में दुलारे ने उन्हें अपने घर पर सत्यनारायण की कथा में आमंत्रित किया। काफी इतंजार करने पर भी जब वे लोग नहीं आये, तो उसने किसी को भेजकर उन्हें बुलवाया। दोनों भाई आये, तो बड़े सम्मान से उनका स्वागत किया। प्यारे की पत्नी भीमसेन के लिए दुध लेकर आयी तथा उसे दिया। भीष्म के लिए छाछ लाने को उसने अपनी बेटी सीमा को पुकारा।

भीम ने दूध पीना शुरू ही किया था कि दुलारे ने एक शीशी में से तेजाब उसकी आँखो में उलट दिया, जिससे वह तिलमिला उठा तथा उसको दिखना बंद हो गया। वह तड़पकर जमीन पर गिर पड़ा। यह देखकर भीष्म छप्पर फाड़कर बाहर भागने कि कोशिश करने लगा। परंतु वहाँ पहले से ही छुपे दुलारे के साथी—राजाराम, जगन्नाथ तथा अन्य लोगों ने उसकी टांग पकड़कर खींच ली तथा उसे धराशायी कर दिया। सबने मिलकर उन दोनों निहत्थे भाइयों पर लाठी, डंडे, चाकू आदि से प्रहार करना शुरू कर दिया।

मन्दिर के सामने बैठे चंद्रसेन को यह सब उन दोनों जुड़वां बच्चों ने बताया, फिर कुछ रूककर उनमें से एक बोला, "उसके बाद क्या हुआ था, हमें कुछ भी याद नहीं। आप ही बताए आगे क्या हुआ?"

चंद्रसेन ने सब बातें ध्यान से सुनी तथा उन्हें पूर्णरूप से विश्वास हो गया कि वे दोनों बच्चे उन्हीं के पिछले जन्म के छोटे भाई भीमसेन तथा भीष्म ही है ।

उन्होंने बताया कि जब वे दोनों काफी रात बीत जाने के बावजूद नहीं लौटे तो वह उनकी तलाश में कुड़ियापुर गाँव गये तथा दुलारे से पूछताछ की दुलारे ने बताया कि वह दोनों काफी देर पहले वहाँ से चले गए थे। घर में सभी परेशान थे। काफी दिनों तक खोजबीन करने के पश्चात् उन्होंने उनकी गुमशुदगी की रिपोर्ट गुरसहाय गंज थाने में दर्ज कर दी। अगले दिन इतवार को एक चरवाहे ने सूचना दी कि गौरीपुरवा के जंगल के कुंए में एक लाश पड़ी दिखाई दी। वहाँ पर उन दोनों की लाशें मिली। पुलिस आयी, कानूनी कार्यवाही हुई, पोस्टमार्टम हुआ तथा फिर लाशें सौंप दी गयी तथा परिवार वालों ने उनका अंतिम संस्कार कर दिया।

इतना बताते-बताते चंद्रसेन फूट-फूट कर रोने लगे। रामू बोला, "अब तो हम आपको मिल ही गये हैं, अब क्यों रोते हो ददू? चलो, हमारे नये घर चलो।" रामू तथा राजू उन्हें लेकर अपने पिता रामस्वरूप के घर पहुंचे। उनके साथ एक अजनबी को देख रामस्वरूप ने पूछा, "बेटे, ये कौन हैं?"

"ये हमारे दद्दू है।" दोनों भाई एक साथ बोल पड़े।

रामस्वरूप ने उन्हें डांटते हुए कहा, "क्या बकवास करते हो? शर्म नहीं आती इन्हें दद्दू कहते हुए। ये तो मेरी उम्र के है।" इस पर चंद्रसेन बोले "नहीं भाई साहव, ये बच्चे ठीक ही कह रहे है। मैं इनका बड़ा भाई हूँ।"

फिर रामू-राजू ने जो कुछ बताया था सब सुना दिया। चंद्रसेन ने उन लोगों के आग्रह पर एक रात श्याम नगला में वितायी तथा फिर ऊंचा लाडपुर लौट गये। वहाँ पहुंचकर उन्होंने यह सब अपनी माँ तथा बच्चों को वताया। अगले दिन वे लोग भी श्याम नगला पहुंचे।

चंद्रसेन की वहन उर्मिला भी यह खबर सुनकर अपने पति के साथ श्याम नगला पहुंच गयी। रामू-राजू ने अपनी पूर्वजन्म की माँ तथा घर के अन्य लोगों को पहचान लिया। माँ और भाई-वहन के पांव छुए। चंद्रसेन की माँ ने उर्मिला के पास खड़े उसके पति की और इशारा करके उनके पांव छूने को कहा, तो रामू वोला, "ये कौन है, इन्हें तो मैं नहीं पहचानता।"

माँ ने उन्हें बताया कि वह उनके वहनोई है। तव उन दोनों ने उनके पांव छुए। वास्तव में उर्मिला का विवाह भीम तथा भीष्म की मृत्यु के वाद हुआ था, इसलिए दोनों बच्चे उसके पति को पहचान नहीं पाये।

सब मेहमानों के लिए नाश्ता आया। चाय-पीते समय उर्मिला का पल्लू उसके सिर से सरक गया। जैसे ही रामू ने यह देखा वह चीखकर बोला, "उर्मिला की बच्ची। कितनी वार तुमसे कहा कि उहारे पल्ले के साथ सर मत खोला कर।"

यह सुनकर उर्मिला सकपका गयी तथा चाय का प्याला उसके हाथ से गिरकर टूट गया। दरअसल पूर्वजन्म में भाई भीमसेन को उलटा पल्ला डालने से सख्त नफरत थी और इसीलिए वह उससे बहुत डरती थी।

रामू और राजू के पूर्वजन्म के सम्वन्धी उन्हें अपने साथ ले जाना चाहते थे तथा उसके वदले में जायदाद भी देने को तैयार थे। परन्तु रामस्वरूप किसी भी कीमत या शर्त पर इसके लिए राजी नहीं हुए।

उन लोगों के वापस लौटने के समय रामू ने चंद्रसेन को वताया कि चकिया के वायीं ओर जमीन में एक अंगूठी और सोने की छह जंजीरे गाड़ी हुई है, उन्हें निकाल ले। इस पर राजू ने भी अपनी किसी चीज के बारे में बताया। घर पहुंचकर चंद्रसेन ने देखा कि रामू और राजू के कथनानुसार, सब चीजे यथास्थान मिली।

द्रोणाचार्य ने जब अपना रहा-सहा संशय दूर करने के लिए पूछा, "अगर आप हमारे पिता है, तो वताइए कि हमारे वाग में कितनी जगह बांस के कोठ है?"

राजू फौरन बोला, "अब तो पता नहीं, पर मेरे समय में वहाँ तीन कोठ थे।" द्रोणाचार्य का संशय समाप्त हो गया, क्योंकि यह बात एकदम सही थी। भीम और भीष्म के रामू-राजू के रूप में पुनर्जीवित होने का समाचार जंगल में आग की तरह फैल गया। यह सुनकर अनेक लोग आने लगे तथा रामस्वरूप द्विवेदी के यहाँ मेला-सा लगने लगा। जब भीम और भीष्म के कथित हत्यारों को इसका पता चला, तो उन्होंने एक दिन रामू-राजू को घेर लिया। पर दोनों भाइयों ने उन्हें ककड़-पत्थर मारकर भगाया तथा चिल्लाने लगे और लोगों के आ जाने से वे भाग गये।

बहरहाल, उन कथित हत्यारों की आशंका निर्मूल नहीं थी। चंद्रसेन चाहते थे कि उनके भाइयों के हत्यारे को सजा मिले। हत्या के बाद जो केस चला था, वह समाप्त हो गया था। अतिरिक्त जिला न्यायाधीश की अदालत में केस था, चला परन्तु साक्ष्य के अभाव में अभियुक्त साफ बरी हो गये थे।

चंद्रसेन ने तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमति सुचेता कृपलानी से इस मामले की जांच सी आई डी द्वारा कराये जाने की दरख्वास्त दी। फिर चंद्रसेन ने रामू-राजू के पिता से आग्रह किया कि रामू-राजू की गवाही से यह केस पुनर्जीवित हो जाए। परन्तु रामस्वरूप ने इस झगड़े में पड़ने से स्पष्ट मना कर दिया।

8. एक विचित्र घटना—मुनेश

सन् 1955 में एक दिन भारत के चाँदगरी गाँव मे मुनेश नामक लड़के को माँ नेहला रही थी। माँ ने वच्चे के दुर्व्यहार से खीझकर उसे एक चपत लगा दी। वच्चे ने इसका प्रतिवाद करते हुए कहा– "माँ! मुझे मारो मत। मैं अपने गाँव इतरानी वापस चला जाऊँगा। मैं उस गाँव का रहने वाला भजन सिंह हूँ। मेरी एक पत्नी है, तीन भाई है, माँ है और एक लड़की है। मेरा घर है, कुआँ है, वगीचा है और खेत है।"

अपने चार साल के लड़के की ऐसी अनर्गल वातें सुनकर भगवती देवी आगववूला हो गयीं। अच्छी-खासी पिटाई से वह लड़का चुप हो गया।

परतुं जैसे-जैसे वह बड़ा होने लगा, उसने अपने सहपाठियों को यह वतलाना आरम्भ किया कि उसकी पत्नी तथा परिवार है। इसके कारण वह शीघ्र ही अपने सहपाठियों में उपहास का विषय वन गया।

सहसा एक दिन उसने अपने दादा ठाकुर नेत्रपाल सिंह को भी वही कहानी सुनायी। इस कहानी ने ठाकुर के मन में एक कौतुहल जाग्रत कर दिया। तव उसने इतरानी के एक व्यक्ति से यह पूछताछ की कि "क्या वहाँ कोई भजन सिंह नाम का व्यक्ति भी था? उस व्यक्ति के विचार में वहाँ इस नाम के एक सज्जन थे।

शीघ्र ही उसके दादा इतरानी गये और वहाँ उन्हें यह पता चलते देर नहीं लगी कि वहाँ भजन सिंह नाम का एक व्यक्ति अवश्य था, जो अपनी पत्नी तथा एक पुत्री को पीछे छोड़कर सन् 1951 में ही ज्वर से चल वसा था।

मुनेश का जन्म सन् 1951 में वीरेन्द्रपाल सिंह की पत्नी से हुआ था। मुनेश के रूप में भजन सिंह का पुर्नजन्म हुआ है। तत्काल ठाकुर साहव ने भजन सिंह के परिवार से सम्पर्क स्थापित करके मुनेश के दावे के विषय में वतलाया। भजन सिंह के परिवार ने इस विषय में रूचि लेना आरम्भ कर दिया। मृत भजन सिंह का भाई

तथा बहनोई ठाकुर के साथ चाँदगरी आये, जहाँ मुनेश ने उन्हें बहुत आसानी से पहचान लिया। दोनों व्यक्ति भजन सिंह तथा मुनेश की आकृति और व्यवहार से बहुत प्रभावित हुए। उनके इतरानी लौटने का समय आने पर मुनेश अपने भाई से चिपट गया और उसे पीछे छोड़ दिये जाने के लिए वह प्रस्तुत नहीं था। अन्त में ठाकुर नेत्रपाल सिंह के उसे कुछ ही दिनों में इतरानी ले जाने का वचन देने पर ही लड़का शान्त हुआ।

बहुत शीघ्र ही यह समाचार भजन सिंह की विधवा पत्नी अयोध्यादेवी के पास पहुँच गया, जो बिसारा ग्राम में अपने पिता के घर पर रह रही थी। आश्चर्य तथा जिज्ञासा से भरकर वह अपनी भावज के साथ चाँदगरी के लिए चल पड़ी। वे दोनों ही लंबी तथा दुबली-पतली थीं और दोनों एक जैसे कपड़े पहने हुए थी। दोनों ही उसी प्रकार पर्दे में थी, जिस तरह कि जनता में अपनी पहचान को छिपाये रखने के लिये भारतीय महिलाएँ घूंघट निकाला करती हैं। जब वे चाँदगरी पहुँची तो गाँववाले इकट्ठे हो गये और मुनेश को वहाँ बुलवाया गया।

मुनेश इन महिलाओं को वास्तव में जानता है अथवा नहीं, इस बात की परीक्षा करने के लिये उसके ताऊ ने उससे पूछा कि "क्या तुम अपनी माँ को पहचानते हो?" मुनेश ने उत्तर दिया कि "इनमें उसकी माँ नहीं हैं और वे दोनों उसकी पत्नी तथा उसकी भावज हैं।" अचानक लड़के ने अयोध्या देवी का हाथ पकड़ लिया। उस विधवा ने वन्जना के भय से उस लड़के को एक ओर करते हुए पूछा—"हमारे जीवन के किसी ऐसे विशिष्ट प्रसंग का वर्णन करो, जिससे मुझे यह विश्वास हो सके कि तुम मेरे पति हो और इस रूप में फिर से तुमने जन्म लिया है।" किसी भी प्रकार की तनिक-सी हिचकिचाहट के बिना मुनेश ने कहा—"जब मैं आगरा से अपनी इन्टरमीडियट की परीक्षा देकर इतरानी वापस लौटा था तो मुझे पता चला कि मेरी माँ और तुम्हारे बीच झगड़ा हुआ है। मैनें तुम्हें मथानी से पीटा था। मथानी टूट गयी थी और तुम्हारी बाँह में घाव हो गया था।" उसने अपनी आश्चर्यचकित विधवा को अपने दाम्पत्य-जीवन की कई ऐसी घनिष्ठ बातें भी बतायीं, जो भारत में पति तथा पत्नी के बीच गोपनीय भेद समझी जाती हैं, जिन्हें कोई भी अन्य व्यक्ति जान नहीं सकता था। उसकी इन बातों को सुनकर अयोध्या देवी की विश्वास हो गया और उसने बच्चे को अपने साथ इतरानी ले जाने की बात कही।

इतरानी पहुँचकर मुनेश ने भीड़ में से अपने घनिष्ठतम मित्र भगवती प्रसाद का नाम लेकर बाहर बुलाया। उसे शीघ्र ही यह विश्वास हो गया कि भजन सिंह ही

मुनेश के रूप में फिर से जन्म लेकर आया है। अन्य लोगों ने भी उस समय इसे मान लिया, जब मुनेश सीधा अपने घर के अंदर चला गया तथा भजन सिंह की माँ की गोदी में कुदकर जा चढ़ा। उसकी आँखों के अश्रुप्रवाह से उसका मुख भीग गया था। इसके बाद मुनेश ने अपने घर तथा खेत का चक्कर लगाया और उसकी मृत्यु के पश्चात् हुए परिवर्तनों पर उसने टिप्पणी की।

इतरानी छोड़ने के पूर्व उसकी वापसी को देखने वाले सभी व्यक्तियों को मुनेश की इस विचित्र कहानी पर विश्वास हो गया था। उसने अपनी सभी वस्तुओं, अपने वसीहतनामे, अपने बगीचे, उसके चारों बैलों तथा दोनों भैंसों को पहचान लिया था।

जब अयोध्या देवी अपने पिता के घर बिसारा चली गयी तो लड़के को बहुत सुनसान-सा प्रतीत होने लगा। उसे उसकी अनुपस्थिति बहुत खलती थी और बिसारा में लड़की को देखने की उसकी इच्छा थी। उसे वहाँ ले जाने की सम्मति दे देने पर उसने अपने दादा के सम्मुख बिसारा जाने के मार्ग का ठीक-ठीक वर्णन कर किया। बिसारा पहुँचकर वह एक घर के सामने रूक गया। उसने कहा कि "यही उसके ससुर का घर है।" साथ ही इस बात का भी उल्लेख किया कि "किस प्रकार वहाँ अब एक कमरे का निर्माण हो गया है, जहाँ उसकी मृत्यु के समय केवल चबूतरा मात्र था।"

इतरानी के समान यहाँ भी मुनेश ने मित्रों तथा सभी सगे-सम्बन्धियों को पहचान लिया। वह अपनी लड़की को वहाँ देखकर बहुत प्रसन्न दिखायी दिया, जो भजन सिंह की मृत्यु के समय केवल दो वर्ष की थी। दोनों का परस्पर का प्यार बहुत ही मर्मस्पर्शी था और मुनेश तब तक खाता न था, जब तक वह लड़की उपस्थित न हो।

मुनेश एक बार पुनः चाँदगरी लौट आया; परन्तु वह केवल उन अवसरों को छोड़कर अब अन्य समय दुःखी और खिंचा-खिंचा रहने लगा था, जब उसके परिवार का कोई व्यक्ति उससे भेंट करने वहाँ आता था। जब अयोध्या देवी वहाँ आयी तो मुनेश उसके और उसकी लड़की के बारे में हो-हल्ला मचाता रहता था। उनके जाते ही वह फिर उदास रहने लगा। प्रतीत यह होता था कि उसकी स्मृतियाँ उसके वर्तमान के जगत् को अवरूद्ध कर देती थीं। ऐसा लगता था कि उसे इतरानी में अयोध्यादेवी तथा उसकी लड़की के साथ उसी प्रकार रहने दिया जाय; जिस प्रकार वे भजन सिंह की मृत्यु के पूर्व रहा करते थे।

9. "पच्चीस वर्ष पहले मेरी हत्या हुई थी!"

फिल्म में बंबई के दृश्य देखते ही वह बोल पड़ा, "यहीं मेरा घर है... मैं इस जगह (बंबई) को अच्छी तरह जानता हूँ। मैं यहाँ जाऊंगा।" बालक आशीष की इस बात को सुनकर घर वाले और भी परेशान हो उठे। वे तो पहले से ही परेशान थे क्योंकि, जब से उसने होश संभाला था, होश क्या संभाला था, केवल तीन साल का ही था, तभी से अजीबो-गरीब हरकतें करने लगा था। और फिर कुछ बड़ा होने पर कहने लगा था कि उसका एक और घर है। जब उससे पूछा जाता कि उसका वह एक और घर कहाँ है तो वह उसका उतर नहीं दे पाता था। आज उसने उसका भी उत्तर दे दिया कि उसका घर बंबई में है। वह यह भी अक्सर कहता रहता था कि वह रेल बनाने वाली फैक्ट्री में काम करता था।

जबसे उसने फिल्म में बंबई को देखा, तब से उसकी बंबई जाने की जिद्द बढ़ गयी। इस समय उसकी उम्र भी ऐसी हो चुकी थी, जिसमें लड़के प्रायः बंबई भाग जाते हैं, यानी पंद्रह साल। माँ-बाप की चिंता और बढ़ गयी कि कहीं वह अपने 'एक और घर' की खोज में बंबई भाग ही न जाए। इसलिए बेहतर यही होगा कि वह उसे बंबई ले जाएं। और उन्होंने यही किया।

जब वह उसे लेकर बंबई पहुंचे तब तक वह सामान्य था। एक दिन जैसे ही उनकी उपनगरीय रेल माटुंगा कि ओर बढ़ी, आशीष के हाव-भाव बदलने लगे। वह कुछ-कुछ उत्साहित व उत्तेजित होने लगा। जैसे कि वह उन सभी जगहों को पहचानता जा रहा हो।

माटुंगा स्टेशन पर उतर कर वह एक फैक्ट्री की ओर बढ़ने लगा। उस फैक्ट्री में रेलवे के लिए पहिये बनाए जाते थे। फैक्ट्री में घुसकर उसने एक केबिन की ओर इशारा कर कहा, "यही है मेरा केबिन।"

कुछ देर में वहाँ कर्मचारियों की भीड़ जमा हो गयी। उस भीड़ में से एक वृद्ध कर्मचारी को पहचानकर उसका नाम लिया और बताया कि "मैं तुम्हारा पुराना मित्र विनय ठाकुर हूँ, जिसकी पच्चीस साल पहले हत्या कर दी गयी थी।"

इतना कहना था कि उस वृद्ध कर्मचारी को सब कुछ याद आ गया। उसने पुष्टि की कि इसी केबिन में विनय ठाकुर बैठा करते थे और उनकी हत्या कर दी गयी थी। उसने और भी बहुत-सी बातें बतायीं।

पुनर्जन्म की इस घटना से स्वयं साक्षात्कार कर सभी लोग आश्चर्यचकित रह गये।

इसके बाद आशीष के माँ-बाप उसे लेकर उसके चाचा के मझगाँव स्थित घर पर ठहरे। आशीष की खोज अभी पूरी नहीं हुई थी। उसने अपने पूर्वजन्म की पत्नी और बच्चों को खोजने की बहुत कोशिश की, लेकिन उसे नहीं मिले। पता नहीं वे कहाँ चले गये? लेकिन आशीष ने अभी उम्मीद नहीं छोड़ी है। उसे उम्मीद है कि एक न एक दिन वे उसे मिल जाएंगे।

10. गुरदीप कौर के पुनर्जन्म की कहानी

पुनर्जन्म के जितने भी मामले अब तक हमारे सामने आए हैं तथा उन पर शोध कार्य हुआ है उन सब में 'छोटी रीना' का मामला अत्यधिक विचित्र एवं रोचक है क्योंकि अभी वह केवल दो वर्ष की ही अबोध बालिका थी कि उसने एक दिन अपनी दादी माँ की गोद में बैठे-बैठे अपनी तोतली भाषा में कहा—"मेरा एक घरवाला भी है।"

दादी माँ छोटी बच्ची के मुंह से घरवाला शब्द सुनकर एकदम भौंचक्की रह गई और उसे पुचकारते हुए पूछा, "तुझे पता भी है कि घर वाला क्या होता है?"

"हाँ, घर वाला तो सब कुछ होता है, पर मेरा घरवाला तो बहुत बुरा आदमी था, इतना बुरा कि उसने मुझे ही मार डाला था।"

और फिर रीना गुप्ता छोटी सी दो वर्ष की बालिका ने अपनी दादी माँ को वह सभी कुछ बताया जिसकी उसे स्पष्ट स्मृति थी और जैसा वह महसूस करती थी। उसने बताया कि उसका घरवाला था और उनके चार बच्चे थे और फिर उसे उसी के घरवालों ने बड़ी बेरहमी से मार डाला।

दादी माँ समझ गई कि रीना को पूर्वजन्म याद है और उसी याद में खोई रहती है, परन्तु रीना के हाव-भाव व व्यवहार को देखकर उसकी दादी माँ चिंतित रहने लगी क्योंकि रीना अब अपनी इस जन्म की माँ में त्रुटियां निकालने लगी।

कभी-कभी वह कहती "माँ तुझे तो खाना बनाना भी नहीं आता और घर को साफ-सुथरा रखना तो बिल्कुल भी नहीं आता। मेरी पहले वाली माँ को तो सब कुछ आता था और उसने मुझे भी सिखाया था।" बच्ची की ये बातें सुनकर माँ और दादी की आँखों में आंसू आ जाते। अब वे उसे कैसे समझाएं कि उसकी कोई दूसरी माँ नहीं है? वह उसका पिछला जन्म था, जिसकी स्मृति से उसे कुछ लेना-देना नहीं हैं।

रीना पुनर्जन्म की बातें बताती है व उसे पूर्वजन्म में घटित सभी घटनाएं याद

हैं। यह बात अधिक दिनों तक छिपी नहीं रह सकी। रीना की माँ की एक सहेली को जब पता चला कि रीना बताती है कि पिछले जन्म में उसके चार बच्चे थे और उसके घरवाले ने उसे मार डाला था तो उसको यह घटना पहले भी सुनी हुई और जानी-पहचानी सी लगी। दिमाग पर जोर डालकर याद करने से उसे ध्यान आया कि दिल्ली में ही उसके जान-पहचान वाली एक सहेली रहती है, जिसकी बेटी के साथ ऐसी ही घटना घटी थी, परन्तु वह तो सिख परिवार है और यह गुप्ता। फिर वह अपनी ही सोच पर हंस पड़ी, रीना का पूर्वजन्म सिख परिवार में भी हो सकता है।

रीना की इस सहेली ने उन्हें इस संबंध में कुछ भी न बताते हुए अपने तरीके से गुप्त पूछताछ शूरू कर दी।

वह किशन सिंह के घर पंहुच गई। वह किशन सिंह की बेटी थी जिसका नाम गुरदीप कौर था और उसके चार बच्चे थे और उसकी उसके पति ने हत्या कर दी थी। यह घटना 2 जून, 1961 में घटी थी और इस समय नृशंस हत्याकांड में केवल गुरदीप कौर की ही नहीं बल्कि उसके भाई की भी हत्या कर दी गई थी।

रीना गुप्ता ने अपने पूर्वजन्म की स्मृतियों के आधार पर जो कुछ भी बताया था वह सब गुरदीप कौर के पिता व माता को सुनाया गया, तो वे दोनों एकदम भावुक हो उठे। पूर्वजन्म में हत्या व चार बच्चों की बात सुनकर उनकी आँखों में आंसू छलक आए और वे रीना को देखने के लिए बेताब हो उठे।

फिर दूसरे ही दिन वे गुप्ता परिवार के घर पंहुचे, परन्तु उस समय छोटी रीना सो रही थी। रीना के पिता ने गुरदीप कौर के माता-पिता को बड़े आदर से बिठाया और रीना के सोकर उठने की प्रतीक्षा करने को कहा। फिर जैसे ही रीना नींद से जगी, और उसने किशन सिंह व उसकी पत्नी को बैठे देखा तो उसका चेहरा एकदम खिल उठा। वह जोर से चिल्लाई, ये तो मेरे मम्मी-डैडी हैं। वह अपने नन्हें पांवों से लगभग भागते हुए अपनी पूर्वजन्म की माँ के गले लग गई फिर अचानक पूछा—'स्वर्णा' कहाँ हैं।

पूर्वजन्म में गुरदीप कौर की छोटी बहिन का नाम था स्वर्णा। स्वर्णा नाम व उसके संबंध में रीना द्वारा से पूछे जाने पर सभी को पूर्ण विश्वास हो गया कि पूर्वजन्म की गुरदीप कौर ने ही रीना के रूप में गुप्ता जी के यहाँ पुनर्जन्म लिया है।

दूसरे दिन किशन सिंह व उसकी पत्नी स्वर्णा को साथ लेकर पुनः गुप्ताजी

के घर पहुंचे, और ज्यों ही रीना ने स्वर्णा को देखा तो चिल्ला उठी। "सरनो... कितनी वड़ी हो गई तू... ।"

स्वर्णा को प्यार से सब सरनो कहकर पुकारते थे और किसी प्रकार भी यह घर का नाम दो वर्ष की रीना को ज्ञात नहीं हो सकता था। किशन सिंह, उनकी पत्नी व स्वर्णा वापस जाने लगे तो रीना को छोटी बहिन समझकर स्वर्णा ने उसे कुछ देना चाहा। स्वर्णा ने उसे दो रूपए टॉफी खाने को दिए, तो रीना ने यह कहकर दो रूपए लेने से इन्कार कर दिया कि वह अपनी छोटी बहिन से पैसे कैसे ले सकती हैं? "हमारी हिंदुस्तानी संस्कृति के अनुसार वड़े अपने से छोटे को मिलने पर कुछ देते हैं, लेते नहीं।"

उस समय स्वर्णा स्वयं को बड़ा समझ रही थी और रीना को छोटी बच्ची, परंतु रीना स्वर्णा को स्वर्णा न समझकर अपनी छोटी बहिन 'सरनो' समझ रही थी।

गुप्ता परिवार व सरदार किशन सिंह के परिवार में रीना के कारण आना-जाना शुरू हो गया और परस्पर मैत्री भाव स्थापित हुआ। बाद में रीना अपने पुर्वजन्म के बिछड़े माँ-बेटे जब इस जन्म में मिले तो प्रसन्नता की एक लहर सी दौड़ गई।

अव जबकि दोनों परिवारों को गुरदीप कौर के पुर्नजन्म पर विश्वास हुआ और इस पुनर्जन्म पर विचार करने के लिए व साक्षात्कार के लिए परामनोवैज्ञानिक पहुंचने लगे, तो कई समाचार पत्रों के संवाददाता भी पहुंचे और इस प्रकार इस मामले के विवरण को प्रसिद्धि प्राप्त हुई।

यदि केवल यही देखा जाए तो पुनर्जन्म का यह मामला पुनर्जन्म के सिद्धान्त को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त है परंतु उसके पश्चात् एक और विलक्षण घटना घटी जिससे कि इस मामले को और भी स्पष्ट किया।

गुरदीप कौर के पति जिसने हत्या की थी वह अभी जीवित था और समाचार पत्रों के माध्यम से यह खबर उसके पास भी पहुंची कि गुरदीप कौर ने रीना के रूप में पुनर्जन्म लिया है।

सुरजीत सिंह नाम था उसका और अपनी पत्नी और साले के दोहरे खून के इल्जाम में उसे उम्र कैद हो गई थी। रीना गुप्ता के मामले को प्रसिद्धि मिलने के थोड़ा समय पहले ही उसे उसके अच्छे व्यवहार के कारण दस साल की कैद काटने के बाद रिहा कर दिया गया था।

गुरदीप के पुनर्जन्म की खबर पाकर उससे रहा नहीं गया। वह एक बार रीना को देख लेना चाहता था जिसे उसके पिछले जन्म में उसने मार डाला था।

रीना को देखने की उसने आज्ञा माँगी, तो गुप्ता जी ने रीना से पूछा—यह

सुनकर कि पूर्वजन्म का हत्यारा घरवाला उसे देखना चाहता है तो फिर उसका पहला उत्तर यही था... "नहीं वह फिर मुझे मार डालेगा।"

...परतुं बाद में रीना उससे मिलने के लिए तैयार हो गई थी। रीना के पुनर्जन्म के इस विलक्षण मामले पर खोज कर रहे सुप्रसिद्ध परामनोवैज्ञानिक जो-फिशर ने रीना व उसके पूर्वजन्म के हत्यारे पति सुरजीत के पुनर्मिलन का विवरण इस प्रकार दिया है, वे लिखते हैं–

सन 1975 में जब वे मिले तो उस समय रीना केवल नौ वर्ष की थी परतुं पूर्वजन्म में जिन परिस्थितियों में उसकी हत्या की गई थी और उस भयावह समय का भय जो उसकी आत्मा में समा गया था वह किसी प्रकार भी पूरी दुनिया के अच्छा व्यवहार होने के बावजूद भी मिटाने में सक्षम नहीं था। सुरजीत सिंह उससे मिलने उनके घर पहुंचा तो रीना अनिच्छा से सहमी हुई उसके सामने आई क्योंकि वह उस वास्तविकता से भली प्रकार वाकिफ थी कि उसी व्यक्ति ने पूर्वजन्म में उसकी हत्या कर दी थी।

जब सुरजीत ने रीना को प्यार से पकड़ना चाहा तो वह उसकी पकड़ से भाग निकली और फिर भय के मारे बड़ी देर तक अपने कमरे में सिसकती रही। गुरदीप कौर के पुनर्जन्म की इस विलक्षण घटना में यह रहस्यात्मक सिद्धांत स्पष्ट प्रकट होता है कि अक्सर उन बालकों को अपने पुनर्जन्म की स्मृतियां अल्पायु में ही बड़ी स्पष्ट होती हैं जिनकी पूर्वजन्म में मृत्यु हिंसात्मक ढंग से अथवा किसी दुर्घटना के कारण अकस्मात हुई होती है। जिनका जीवन भावनात्मक रूप से कष्टों, अभावों तथा संकटों में व्यतीत हुआ होता है व मृत्यु के अंतिम क्षणों तक वह अपनी अतृप्त इच्छाओं व अभिलाषाओं को विचारते रहते हैं।

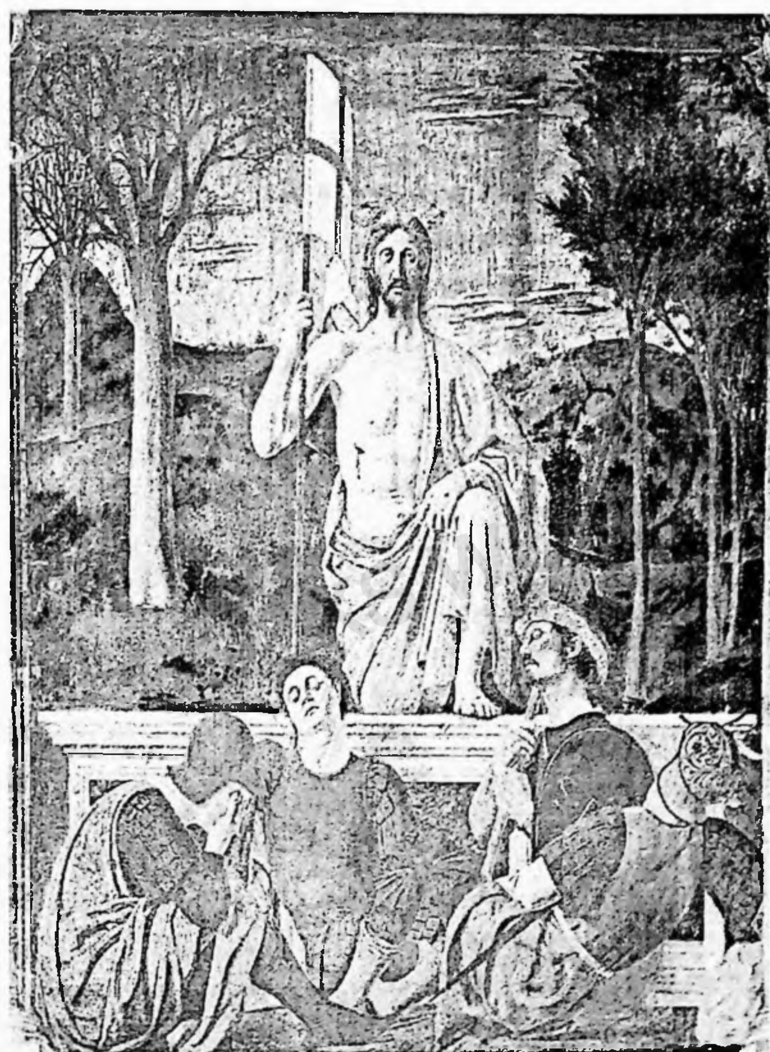
11. पूर्वजन्म में वह खुद का ही मामा था

प्रसिद्ध पुनर्जन्म अवधारणा पर खोजकर्ता रोय स्टीवन ने अपनी पुस्तक 'रीइन्कारनेशन टू सटोरिज' में एक ऐसे पुनर्जन्म घटना का उल्लेख किया है, जिसमें बालक बतलाता है कि पूर्वजन्म में वह अपना ही मामा था।

सन् 1961 में परामनोवैज्ञानिक इयान स्टीवेन्सन ने अलास्का में एक छोटे बालक का परीक्षण किया...... परीक्षण के समय यद्यपि वह बालक नौ वर्ष का हो चुका था......... परन्तु पूर्वजन्म में उसके पेट के पास लगी बन्दूक की गोलियों के निशान अभी धूमिल नहीं पड़े थे जो कि इस जन्म में उसके शरीर के साथ ही आए थे...... वह केवल अढ़ाई वर्ष का था जब उसने अपने पूर्वजन्म की स्मृतियों को उजागर करना शुरू कर दिया था.........।

दक्षिणी पश्चिमी अलास्का के मूल निवासी टलिनजिट इंडियन्ज का पुनर्जन्म अवधारणा पर अटूट विश्वास है। कई बार तो निकट सम्बन्धियों की मृतात्माएं पुनः जन्म लेने की घोषणा स्वप्न में आकर करती हैं और फिर वही मृत सम्बन्धी पुनः जन्म लेता है और उसके रूप-रंग, शरीर के निशान हाव-भाव व व्यवहार से उसे पहचान लिया जाता है।

22 नवम्बर, सन् 1952 को जिमी स्वैनसन का जन्म हुआ.......। उसके माता-पिता व परिवार के अन्य सदस्य अलास्का के एक छोटे से कस्बे 'सिटका' में रहते थे........ स्वैनसन के पिता जिनका नाम ओलाफ था और वह आधे टलिनजिट तथा आधे नारवेयन थे और माँ पूरी तरह से खानदानी टलिनिजिट थी। माँ का नाम 'मिली' था। जिमी स्वैनसन ने अपने जन्म के दो वर्ष पश्चात् ही, जबकि वह अभी अपनी भाषा के टूटे-फूटे शब्द तोतली जुबान में बोलना सीखा ही था, दावा करना शुरू कर दिया कि वह अपनी माँ का मृत भाई है....... अपना ही मृत मामा जिसका नाम 'जौन सिजको' था....... और अपने पिता एवं परिवार के साथ 100 मील दूर



के गाँव कलूकवान में रहता था। छोटा जिमी स्वैनसन अक्सर अपने पूर्वजन्म की स्मृतियों में खो जाता और फिर अचानक कह उठता......

"मुझे अपने घर ले चलो..... अपने नाना के यहाँ........ !"

अभी वह छोटा ही था, परन्तु ऐसी मनस्थिति में वह अपने पूर्वजन्म का घर बिल्कुल सही वताता था... जैसे कि उसने अभी-अभी उस घर को देखा हो। उससे पूछा जाता कि वह कहाँ जाना चाहता है.... कहाँ है उसका घर..... तब वह हाथ से सही दिशा में इशारा करते हुए बताता, यहाँ से 100 मील (160 कि.मी.) दूर है मेरा गाँव... कलूकवान। उसका कथन बिल्कुल सत्य था। उसके नाना वहीं रहते थे और जौन सिजको जिसका वह पुनर्जन्म होने का दावा करता था वह भी वहीं रहा करते थे। कभी-कभी वह अपने पूर्वजन्म की स्मृतियों में खोया हुआ घंटों गुमसुम बैठा रहता और फिर अचानक चिल्ला उठता "मुझे कलूकवान जाना है और अपनी नानी माँ के पास मुझे वहाँ ले चलो.... और फिर पूर्वजन्म की अपनी माँ और इस जन्म में उसकी नानी केवल थोड़े समय के लिए उसके जन्म के समय ही आई थी.... वह उस परिवार से सम्बन्धित पुरानी बातें बताता जो अक्षरशः सत्य होतीं..... परन्तु उसकी पुनर्जन्म की इन स्मृतियों का महत्व धीरे-धीरे कम हो गया क्योंकि अलास्का की टलिनजिट जाति में यह कोई आश्चर्य की बात नहीं समझी जाती..... इस जाति का पुनर्जन्म अवधारणा पर इतना अटूट विश्वास है कि अधिकांश बच्चे अपने पूर्वजन्म की बातें वताते हैं..... और उन्हीं बच्चों के साथ ही हजमी स्वैनसन की बातों को भी वहाँ की संस्कृति व विश्वासों के अनुसार सामान्य समझा गया। जौन सिजको ने अपना जीवन बड़े ही विशेष ढंग से व्यतीत किया था.... और मछलियों को पकड़ने के लिए तो वह गाँव के तालाब के किनारे घंटों बैठा रहता था..... शाम को उसके घर उसके मित्रों की महफिलें जमती और वह खूब शराब पी लेता...... शराब से उसे अत्यधिक लगाव था.... जवान होते ही उसे मिलिट्री में भर्ती होना पड़ा...... परन्तु वहाँ भी उसके शौक बरकरार रहे...... अब उसे शिकार खेलने और शराब पीने की और भी सुविधा हो गई. .... 1950 की गर्मियों की छुट्टियों में वह छुट्टी लेकर घर अलास्का आया तब वह 25 वर्ष का हो चुका था लेकिन अभी उसका विवाह नहीं हुआ था..... ।

अपने अजीबोगरीब शौक व हंसमुख प्रकृति का होने के कारण उसके पास मित्रों की कमी नहीं थी। पुरूष मित्रों के साथ उसकी महिला मित्र भी उसके साथ समय बिताना पसंद करती थी.... बस उसकी यही विशेषता वास्तव में उसे ले डूबी. ...... ।

1950 की गर्मियों की छुट्टियों की एक शाम.... वह एक छोटी मछलियां पकड़ने वाली कश्ती पर सवार हो सैर पर निकला। उसके साथ उसकी दो महिला मित्र भी थी..... उसकी अन्तिम यात्रा के दूसरे दिन ही झील के किनारे दोनों महिला मित्रों के शरीर मृत पड़े पाए गए..... उसकी डूबी हुई कश्ती को ढूंढा गया, जो निकट ही पड़ी पाई गई और मिलने पर पता चला कि कश्ती पानी भर जाने के कारण डूबी थी.......। खोजकर्ताओं ने पता लगाया और अनुमान किया कि अवश्य ही प्लग के निकल जाने के कारण कश्ती में पानी शीघ्रता से भर गया होगा और उन्हें सम्भलने का मौका नहीं मिला होगा और कश्ती डूब गई होगी..... परन्तु जौन सिजको के मृत शरीर का क्या हुआ......? बस केवल अनुमान ही लगाया जा सकता था कि पानी का वहाव इतना तीव्र रहा होगा कि जौन सिजको का शरीर उसमें वह गया होगा....... और महिला मित्र किसी प्रकार संयोगवश किनारे आ लगी होंगी...... परन्तु उसके साथ-साथ यह भी अनुमान लगाया गया कि हो सकता है उसकी दोनों महिला मित्रों के पतियों द्वारा अथवा उन महिलाओं के अन्य मित्रों ने ईर्ष्यावश तीनों का कत्ल कर दिया हो और जौन सिजको के मृत शरीर को कही और गायब कर दिया हो....।

पूर्वजन्म में हुई अपनी मृत्यु के रहस्य पर से पर्दा उठाया वालक जिमी स्वैनसन ने और प्रमाणित किया कि वह पूर्वजन्म में अपना ही मामा जौन सिजको था.....।

पूर्वजन्म की अपनी हिंसात्मक रहस्यमय मृत्यु के संवंध में वताते हुए उस नन्हें वालक ने कहा कि उसके पेट में चार गोलियां मारी गई थीं....... और उसकी मृत्यु हो गई थी।

सन् 1961 में इन्हीं निशानों का निरीक्षण किया डा. इयान स्टीवेन्सन ने और पाया कि बालक के पेट पर चार गोल निशान थे ठीक वैसे ही जैसे किसी घाव के भर जाने पर बाकी रह जाते हैं....। इस निरीक्षण के समय जिमी स्वैनसन 9 वर्ष का हो चुका था और पुनर्जन्म की उसकी स्मृतियां कुछ-कुछ धूमिल पड़ती जा रही थी..... अथवा शायद वह इस विषय पर अधिक वातचीत करना पसंद नहीं करता था। जिमी का पूरी तरह से निरीक्षण करने तथा पुनर्जन्म के इस अद्भुत मामले से सम्बन्धित अन्य तथ्यों की खोज के पश्चात् प्रोफेसर स्टीवेन्सन लिख़ते हैं...... बन्दूक की गोलियां लगने वाला घाव भर जाने के यह निशान पौन इंच चौड़े थे.... जो देखने में गोल थे तथा शेष त्वचा से साफ भिन्न नजर आते थे...... निशानों के आसपास की त्वचा के रंग से इन निशानों का रंग बिल्कुल भिन्न था। इन चार

निशानों में से एक बिल्कुल स्पष्ट था तथा शेष तीन निशान लिवर के ऊपर थे.... देखने में यह स्पष्ट पता चलता था कि यह निशान घाव भरने के निशान है आश्चर्य केवल इस बात का था कि इस बालक को कभी कोई चोट इस जन्म में नहीं लगी थी और बालक अपने ही मामा का पुनर्जन्म होने का दावा कर रहा था, जो तथ्यों की सत्यता को देखते हुए स्पष्ट पुनर्जन्म को सिद्ध कर रहा था। नवजात शिशु के शरीर पर पाए जाने वाले निशान अथवा अपंगता यही सिद्ध करती है कि वह पूर्वजन्म में कोई कष्ट भोग कर आया है अथवा उसकी मृत्यु हिंसात्मक ढंग से हुई थी..... और यदि वही निशान उस व्यक्ति के शरीर पर भी मृत्यु के समय रहे हों जिसका पुनर्जन्म होने का दावा किया जा रहा हो तो यह एक प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में मान लिया जाना चाहिए। यद्यपि जौन सिजको का मृतक शरीर उस समय परीक्षण के लिए उपलब्ध होना असम्भव था, परन्तु उस समय के गवाहों के कथनों से पता चलता है कि जिमी जिस जौन सिजको के पुनर्जन्म होने का दावा करता है वह जौन सिजको उसी का मामा था और उसकी मृत्यु बड़े रहस्यमय ढंग से हुई थी।

12. रामप्रताप सिंह की वापसी

उस कमरे के वातावरण में रहस्यमय सन्नाटा छाया था। सरसों के तेल-वाले दीपक की धुंधली-पीली रोशनी मे अजीब-सा सम्मोहन था। कमरे के बीच एक मेज पड़ी थी। मेज के इर्द-गिर्द तीन लोग बैठे थे—दो पुरूष और एक युवती। मेज पर एक ड्राइंग बोर्ड रखा था। ड्राइग बोर्ड के ऊपर आर्ट पेपर। आर्ट पेपर के तीन किनारों पर ऐ से जेड तक अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षर लिखे थे और चौथे किनारे पर एक से दस तक गिनती। कागज के बीच में हिन्दी में 'ओम्' लिखा था और उसके दायें-बायें 'हाँ' और 'न'।

पुरूषों में एक बुजुर्ग थे और दूसरा युवक। दोनों की निगाहें आर्ट पेपर पर जमी थीं। युवती के हाथ में कलम और कागज था। उसकी निगाह भी आर्ट पेपर पर जमी थी। बुजुर्ग व्यक्ति ने अपनी जेव से दस पैसे का सिक्का निकाला और आर्ट पेपर के बीच में लिखे ओम् के ऊपर रख दिया। दायें हाथ की तर्जनी उगंली उन्होंने सिक्के के ऊपर इस प्रकार रखी, जिससे अधिक दबाव न पड़े। फिर उन्होंने मन ही मन रामप्रताप का स्मरण किया। उनके साथ-साथ युवक और युवती ने भी।

वातावरण और भी अधिक रहस्यमय हो गया। खामोशी थी। दीपक की लहराती लौ की रोशनी में कमरे में मौजूद व्यक्तियों और वस्तओं की हिलती-डुलती छायाएं ऐसी लग रही थीं, जैसे आत्माएं नाच रही हों।

एक पल बीता, दो पल...तीन पल। तभी साइड टेबल पर रखी टाइमपीस अचानक एक ओर लुढ़क गयी। सभी एक साथ चौंके। चौंककर साइड टेबल की ओर देखा। कहीं कुछ भी नहीं था, न बिल्ली, न चूहा, न हवा। टाइमपीस का इस तरह लुढ़क जाना आश्चर्य की बात थी। लेकिन बुजुर्ग के लिए यह कोई आश्चर्य नहीं था। वह जानते थे, टाइमपीस रामप्रताप ने गिरायी है, अपनी मौजूदगी का अहसास दिलाने के लिए।

टाइमपीस गिरने के बाद बुजुर्ग की बेचैनी दूर हो गयी। वह एकाग्रचित होकर बैठ गये। उनकी तर्जनी अभी तक सिक्के पर रखी थी। रामप्रताप का स्मरण कर वह शान्त स्वर में बोले,"रामप्रताप, क्या तुम कमरे में मौजूद हो?"

तभी सबने देखा, दस पैसे के सिक्के ने खुद-ब-खुद सरकना शुरू कर दिया। सरकते-सरकते वह 'ओम्' के बायीं ओर लिखे 'हाँ' पर जाकर रुक गया।

बुजुर्ग ने अगला प्रश्न किया, "रामप्रताप तुम्हारे पास एक टेपरिकार्डर था। कहाँ है वह?"

सिक्का फिर सरकने लगा। सरकते-सरकते पहले वह 'वी' पर रुका, फिर 'के' पर, यानी वी. के.। बुजुर्ग ने और भी कई सवाल पूछे। सिक्का वैसे ही अपने आप सरकता-रूकता रहा। हर सवालों के जवाब मिलते रहे। पास मे कागज-कलम लिये बैठी युवती जवाबों को नोट करती रही।

वह बुजुर्ग थे, दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दू कॉलेज के दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर डा. बलवीर सिंह और उनके पास जो युवत और युवती बैठे थे, वे थे उनके बेटे कृष्णमहाराज सिंह और बेटी विजयलक्ष्मी। डा. बलवीर सिंह 'साइकिकल रिसर्च सोसाइटी ऑफ इण्डिया' के अध्यक्ष हैं। वह मृतात्माओं से सम्पर्क करने में समक्ष हैं। उस दिन भी डा. बलवीर सिंह अपने बेटे कृष्णमहाराज सिंह और विजयलक्ष्मी के साथ अपने स्वर्गीय बेटे रामप्रताप सिंह की आत्मा से संपर्क कर रहे थे। सम्पर्क की विधि थी–प्लानचेट।

सम्पर्क सफल रहा। रामप्रताप की आत्मा आयी और उसने एक-एक बात का जवाब दिया। फिर भी वी. के. वाली बात संदिग्ध रही। वी. के. कौन है? यह डा. बलवीर सिंह नहीं जानते थे। रामप्रताप की आत्मा की बात सच्चाई जानने के लिए वी. के. का पता लगाना जरूरी था।

एक दिन चौधरी प्रियव्रत के पार्टनर चौधरी दीवानचन्द्र दिल्ली आये। वह मेघालय में रहते थे। वहीं उनका व्यवसाय था। डा. बलवीर सिंह ने प्लानचेट पर रामप्रताप से हुई बातों का विवरण दीवानचन्द्र से पूछा, "वी. के. कौन है? आप जानते हैं क्या?"

"वी. के., मतलब विनोद कुमार," दीवानचन्द्र बोले, "वह तो रामप्रताप का दोस्त है। वहीं मेघालय में रहता है।"

डा. बलवीर सिंह को लगा कि रामप्रताप की आत्मा ने प्लानचेट के माध्यम से जो बातें बतायी, वह सच थीं। इस बात पर सच की पक्की मुहर भी उस दिन

लग गई, जब दीवानचन्द्र अगली बार मेघालय आये। रामप्रताप के विदेशी टेपरिकार्डर के बारे में पता चला कि वह विनोद कुमार के ही पास था।

11 नवम्बर, 1930 को दक्षिण दिल्ली स्थित गाँव हौजखास में चौधरी तनसिंह के घर जन्मे बलवीर सिंह ने सन् 1948 में दिल्ली बोर्ड से हाईस्कूल किया था। बाद में उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के रामजस कॉलेज से दर्शन शास्त्र में बी. ए. किया। जब वह बी. ए. में थे, तभी उनकी शादी उत्तर दिल्ली के गाँव पूठ खुर्द में हो गयी थी। पत्नी के आगमन से बलवीर सिंह की पढ़ाई-लिखाई में कोई फर्क नहीं पड़ा।

बलवीर सिंह ने सन् 1953 में रामजस कॉलेज से एम. ए. किया और उसी वर्ष पंजाब के जिला संगरूर के एक सरकारी इंटर कॉलेज मे अध्यापक नियुक्त हो गये। सन् 1953 से सन् 1958 तक बलवीर सिंह ने पंजाब शिक्षा बोर्ड और लुधियाना, रोपड़, रोहतक आदि के सरकारी कॉलेजों में अध्यापक की नौकरी की। अगले चार वर्षों में उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से दर्शन शास्त्र में शोध किया। सन् 1962 में बलवीर सिंह को दर्शन शास्त्र में डाक्टरेट की उपाधि मिल गयी। डाक्टरेट मिलने के बाद डा. बलवीर सिंह ने पंजाब विश्वविद्यालय में ही पढ़ाते रहे। लेकिन सन् 1964 में कुछ बातों कोलेकर विश्वविद्यालय के उपकुलपति ए. सी. जोशी से उनका मतभेद हो गया। इस पर डॉ. बलवीर सिंह ने अपने पद से इस्तीफा देकर दिल्ली आ गये और 16 अक्टूबर, 1964 को दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दू कॉलेज में दर्शन शास्त्र के व्याख्याता का पद संभाल लिया।

डॉ. बलवीर सिंह के चार बच्चे थे। उनके बड़े पुत्र कृष्णमहाराज सिंह दिल्ली के पटियाला हाउस कोर्ट में अधिवक्ता हैं। कृष्णमहाराज सिंह शादीशुदा हैं। उनसे छोटा था—रामप्रताप सिंह। वह शिलांग, मेघालय में कोयले का व्यवसाय करता था। उसकी अपनी दो ट्रकें थीं। रामप्रताप सिंह की शादी नहीं हुई थी। डॉ. बलवीर सिंह के बच्चों में तीसरे नम्बर पर हैं-सरोज और चौथे पर विजयलक्ष्मी। दोनों बेटियां शादीशुदा हैं।

6 फरवरी को दिल्ली में महानगर परिषद और नगर निगम के चुनाव हुए थे। 7 फरवरी की सुबह दूरदर्शन पर चुनाव परिणाम प्रसारित किया गया। लगभग साढ़े आठ बजे का समय था। डॉ. बलवीर सिंह दूरदर्शन पर चुनाव परिणाम देख रहे थे। तभी टेलीफोन की घंटी बजी। टेलीफोन उनके प्रिय मित्र चौधरी प्रियव्रत का था। प्रियव्रत का ईंट के भट्ठों का बहुत बड़ा कारोबार है। प्रियव्रत के स्वर में पीड़ा थी। उन्होंने बताया, "अभी-अभी शिलांग से फोन आया है। रामप्रताप सिंह का ट्रक

से एक्सीडेन्ट हो गया। उसकी हालत गंभीर है। हमें अभी शिलांग चलना है। आप तुरंत पालम एयरपोर्ट पहुंचें। मैं भी पहुंच रहा हूँ।"

चौधरी प्रियव्रत ने फोन अपनी कीर्तिनगर स्थित कोठी से किया था। रामप्रताप के एक्सीडेंट की बात सुनकर डॉ. बलवीर सिंह को धक्का लगा। पता नहीं, कैसे हुआ? क्या हुआ? प्रियव्रत ने भी पूरी बात नहीं बतायी थी।

डॉ. बलवीर सिंह ने जैसे-तैसे मन को तसल्ली दी। घरवालों को सारी बात बतायी। फिर वह अपने भतीजे रवीन्द्र की कार से पालम पहुंचे। प्रियव्रत पहले ही एयरपोर्ट पहुंच गये थे और उन्होंने गौहाटी तक के दो टिकटों का इंतजाम भी कर लिया था।

हवाई मार्ग से वे दोनों ढाई बजे गौहाटी पहुंचे। गौहाटी से शिलांग, मेघालय पहुंचना था। लेकिन परेशानी यह थी कि छात्र आंदोलन के कारण पूरा असम बंद था और गौहाटी में कर्फ्यू लगा था। शिलांग तत्काल पहुंचना जरूरी था। पर कोई जरिया नजर नहीं आ रहा था। वे परेशान हो उठे। खैर, हवाई अड्डे से बाहर निकले। बाहर एकदम सन्नाटा था। दूर-दूर तक कोई वाहन दिखाई नहीं दिया। वे अभी खड़े सोच ही रहे थे कि क्या करें, तभी मेजर अतरसिंह सहरावत दिखाई दे गये। मेजर सहरावत डॉ. बलवीर सिंह के अच्छे परिचित थे। वह रामप्रताप को भी जानते थे। डा. बलवीर सिंह ने जब मेजर सहरावत को अपनी परेशानी बतायी, तो वह उन लोगों को मेघालय की सीमा तक छोड़ आने को तैयार हो गये।

मेजर सहरावत की गाड़ी से जब वे लोग मेघालय सीमा पर पहुंचे, तो वहाँ उन्हें राजेन्द्र सिंह मिल गया। राजेन्द्र सिंह प्रियव्रत का छोटा लड़का था और उन्हीं लोगों के इन्तजार में वहाँ ट्रक लिये खड़ा था। राजेन्द्र सिंह का मेघालय में अपना अलग व्यापार था।

राजेन्द्र सिंह की ट्रक से वे लोग रात ग्यारह बजे शिलांग पहुंचे। वहाँ राजेन्द्र सिंह ने एक पेट्रोल पम्प पर ट्रक रोकी। डॉ. बलवीर सिंह को मालूम था कि रामप्रताप उसी पेट्रोल पम्प से अपने ट्रक में डीजल भरवाता था। ट्रक से उतरकर सब लोग पास की चाय की दुकान पर जा बैठे। राजेन्द्र सिंह ने चाय बनवायी। लेकिन डॉक्टर साहब का मन चाय पीने का नहीं हुआ।

डॉ. बलवीर सिंह ने रास्ते में राजेन्द्र सिंह से कई बार रामप्रताप के बारे में पूछना चाहा। लेकिन चाहकर भी हिम्मत नहीं कर सके। उनका मन आशा और आशंका के बीच झूल रहा था। अपने को संभाल रखने के लिए ही वह बिना कुछ पूछे मन मे आस का दीपक जलाये हुए थे। पर अचानक उनकी आस का दीपक बुझ

गया। पेट्रोल पम्प पर एक अन्य ट्रक आ रुका और उससे एक युवक उतरा। वह राजेन्द्र सिंह का परिचित था। उसने बताया, "ट्रक में रामप्रताप और जय सिंह की लाशें पड़ी हैं। दोनों का पोस्टमार्टम हो गया है।"

डॉ. बलवीर सिंह ने सुना, तो वहीं बेहोश होकर गिर पड़े। प्रियव्रत ने उन्हें जैसे-तैसे संभाला।

6 फरवरी, 1983 को रामप्रताप और उसका दोस्त जय सिंह ट्रक लेकर खलेरियाहट कोयला खान जा रहे थे। दोपहर का समय था। उन लोगों ने खलेरियाहट कोयला खान से लगभग तेरह किलोमीटर पीछे मुख्य मार्ग पर स्थित एक ढ़ाबे पर ट्रक रोककर चाय पी। फिर वे खलेरियाहट कोयला खान की ओर चल दिये। उस समय ट्रक को रामप्रताप का ड्राइवर चला रहा था।

ड्राइवर रात का जागा हुआ था और नींद का मारा था। वह ट्रक को संभाल नहीं पा रहा था। सड़क के दोनों ओर दुर्गम घाटियां थीं। ट्रक का संतुलन बिगड़ते देखकर रामप्रताप ने ड्राइवर को हटाकर स्वयं ड्राइविंग सीट संभाल ली। जयसिंह उसके बगल मे बैठ गया और ड्राइवर ट्रक के डाले पर जाकर सो गया।

रामप्रताप सिंह ट्रक चलाने में माहिर नहीं था। ऊपर से दुर्गम घाटियों से गुजरता टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता। अभी रामप्रताप तीन-चार किलोमीटर की ट्रक ले जा पाया था कि संतुलन बिगड़ गया और ट्रक खड्डे में जा गिरी। रामप्रताप और जय सिंह की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गयी। ड्राइवर बच गया था।

चौधरी प्रियव्रत, डॉ. बलवीर सिंह, राजेन्द्र सिंह और उसका दोस्त दूसरी ट्रक से गौहाटी के लिए रवाना हुए। दोनों शव उसी ट्रक में थे। ट्रक सुबह चार बजे गौहाटी पहुंची। शवों को दिल्ली ले जाने का कोई उपाय न देखकर उन लोगों ने गौहाटी में ही रामप्रताप और जयसिंह का दाहसंस्कार कर दिया। फिर चौधरी प्रियव्रत और डॉ. बलवीर सिंह 8 फरवरी को हवाई मार्ग से दिल्ली लौट आये।

डॉ. बलवीर सिंह ने निश्चय किया कि वह महाराज सूरजमल मेमोरियल सोसाइटी के माध्यम से रामप्रताप के नाम से गरीब छात्रों को ग्यारह हजार रूपये का वजीफा देंगे। डॉक्टर साहब इस सोसाइटी के सचिव हैं। उन्हें पराशक्तियों के बारे में विस्तृम जानकारी हैं। उन्होंने इस विषय पर शोध भी किया है और कई पुस्तकें भी लिखी हैं। पराशक्तियों से संपर्क करने की कई विधियां भी उन्हें मालूम हैं।

जवान बेटे की मौत ने उन्हें बुरी तरह तोड़ दिया था। उन्हें जब भी उसकी याद आती, मन बेचैन हो उठता। बेचैन के ऐसे ही क्षणों में डॉ. बलवीर सिंह ने मन ही मन निश्चय किया कि रामप्रताप जहाँ भी होगा, मैं उसे ढूंढ़ निकालूंगा।

दिल्ली लौटने के बाद डॉ. बलवीर सिंह ने लगातार तेरह दिन तक गरुड़ पुराण का पाठ कराया। उन्होंने अपना निश्चय घरवालों को बता दिया। परिवार के लोग जानते थे कि डाक्टर साहब के लिए कोई असंभव काम नहीं। रामप्रताप की तेहरवीं तक गरुड़ पुराण का पाठ चला। तेरहवीं के दिन विप्रभोजन से पहले मृत आत्मा के लिए प्रसाद निकाला जाता है। रात को प्रसाद के भोज्य पदार्थों को थाल में सजा कर एकान्त अंधेरे में रखा जाता है। थोड़ी-सी राख छानकर थाल के पास रखी जाती है। दोनों चीजों को हल्के पात्रों से ढ़क दिया जाता है। हिन्दू धर्म की मान्यताओं के अनुसार, तेहरवीं तक मृत आत्मा अपने घर के आसपास ही मंडराती रहती है। तेरहवीं की रात को वह प्रसाद के भोज्य पदार्थों को जूठा करके तथा राख में कोई चिन्ह बनाकर अपनी मौजूदगी का प्रमाण देती है। तृप्त होने के बाद वह अनंत की ओर प्रयाण कर जाती है।

तेहरवीं के दिन रामप्रताप ने अपनी मौजूदगी का प्रमाण दिया। इससे डॉ. बलवीर सिंह को लगा कि रामप्रताप की आत्मा से संपर्क करने में ज्यादा परेशानी नहीं होगी। उन्होंने अपने घर में प्रतिदिन शाम की मृत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करानी शुरु की। प्रार्थना बंद कमरे में होती और उसमें परिवार के सभी सदस्य भाग लेते थे। यह प्रार्थना लगातार तीन माह तक चलती रही।

मृत आत्माओं से संपर्क की तीन विधियां हैं—माध्यम द्वारा, प्लानचेट द्वारा और स्वयमेव लेखन द्वारा। तीन माह बाद डॉ. बलवीर सिंह ने ध्यान लगाया, तो उन्हें लगा कि रामप्रताप प्रार्थना सभाओं में भाग ले रहा है। डाक्टर साहब ने उससे माध्यम द्वारा संपर्क स्थापित करने का निश्चय किया।

एक दिन उन्होंने पलंग पर लेटे-लेटे माध्यम की विधि से रामप्रताप की आत्मा का आह्वान किया। उनका प्रयोग सफल रहा। रामप्रताप और डॉक्टर साहब के बीच बातें होने लगी। उस समय घर के सब लोग मौजूद थे। रामप्रताप की आत्मा ने एक्सीडेंट की पूरी घटना सुनायी। लेकिन परिवार के लोगों ने विश्वास नहीं किया। उन्होंने सोचा कि डॉक्टर साहब को तो एक्सीडेन्ट का घटनाक्रम वैसे ही मालूम है।

माध्मय की विधि खतरनाक होती है। जरा सी चूक घातक असर कर सकती है। वैसे भी इस विधि से कोई विश्वास नहीं कर पा रहा था। अतः डॉ. बलवीर सिंह ने निश्चय किया कि वह प्लानचेट के माध्यम से रामप्रताप से सम्पर्क करेंगे।

फिर एक दिन डॉ. बलवीर सिंह ने रात के अंधेरे में बंद कमरे में प्लानचेट के माध्यम से रामप्रताप की आत्मा से सम्पर्क किया। उस समय उनके ज्येष्ठ पुत्र

कृष्णमहाराज सिंह और बेटी विजयलक्ष्मी उनके पास थे। रामप्रताप की आत्मा से सम्पर्क हुआ और उसने हर सवाल का सही जवाव दिया। रामप्रताप की आत्मा से एक सम्पर्क हुआ, तो फिर सिलसिला वन गया।

प्रार्थना रोज होती रही। लेकिन आत्मा से सम्पर्क केवल मंगलवार और शनिवार को किया जाता था। इन दोनों दिनों प्रार्थना के तुरंत बाद प्लानचेट के माध्यम से आत्मा से सम्पर्क साधा जाता। प्लानचेट कृष्णमहाराज सिंह और विजयलक्ष्मी तैयार करते। माध्यम डाक्टर बलवीर सिंह बनते थे। हर जवाव एकदम सही होता।

एक दिन डॉ. बलवीर सिंह प्लानचेट पर रामप्रताप की आत्मा से सम्पर्क वनाये हुए थे। कृष्णमहाराज सिहं और विजयलक्ष्मी उनके पास बैठे थे। विजयलक्ष्मी आत्मा के उत्तरों को कोपी पर नोट करती जा रही थीं। तभी डाक्टर साहव ने रामप्रताप की आत्मा से पूछा, "कल मुझे और तुम्हारी मम्मी को फार्महाउस जाना है। तुम चलोगे?"

जवाव मिला, "हाँ।"

डॉक्टर साहव ने पुनः पूछा, "हमें वहाँ तुम्हारी मौजूदगी का पता कैसे चलेगा?"

जवाब मिला, "मैं अपनी उपस्थित का प्रमाण स्वयं दे दूंगा।"

पालम विहार के पास गुड़गाँवा रोड पर डॉ. वलवीर सिंह का कृषि फार्महाउस है। अगले दिन दोपहर को डाक्टर साहब अपनी पत्नी के साथ फार्महाउस पहुंचे। फार्महाउस के बाहर पेड़ों की छांव में पड़ी चारपाईयों पर लोग बैठे थे। उन्होंने डॉक्टर दम्पति का स्वागत किया और अलग एक चारपाई विछा दी। डॉक्टर साहव और उनकी पत्नी चारपाई पर बैठने जा ही रहे थे कि पास के एक पेड़ की डाल टूटकर गिर गयी। हवा नहीं थी। उतनी बड़ी डाल का टूटकर गिरना आश्चर्य की बात थी। पर डॉ. बलवीर सिंह समझ गये कि रामप्रताप की आत्मा वहाँ पहुंच गयी है और उसी ने अपनी मौजूदगी का प्रमाण दिया है। इसे मानसिक संकल्प से प्रतिक्रिया पैदा करना कहा जाता है।

इस घटना के दो दिन वाद डॉ. बलवीर सिंह ने प्लानचेट के माध्यम से रामप्रताप की आत्मा से पुनः सम्पर्क किया। आत्मा प्लानचेट पर आयी, तो उन्होंने पूछा, "तुम उस दिन हमारे साथ फार्महाउस पर गये थे?"

जवाब मिला, "जी हाँ, मैंने पेड़ की डाल तोड़कर अपनी मौजूदगी का प्रमाण दिया था।"

अगस्त, 1983 में जब डॉ. बलवीर सिंह एक दिन रामप्रताप की आत्मा से प्लानचेट पर सम्पर्क बनाये हुए थे, तो उन्होंने प्रश्न किया, "रामप्रताप याद है, फरवरी 1966 में तुम्हारी दादी और फरवरी 1981 में तुम्हारे दादा की मृत्यु हुई थी?"

जवाब मिला, "हाँ।"

"कभी उन लोगों से तुम्हारी मुलाकात हुई?"

"दादीजी मिली थी, "जवाब मिला, "दादा जी नहीं।"

"क्या अभी तक उनकी आत्मा भटक रही है?" डॉ. बलवीर सिंह ने अगला प्रश्न किया, तो जवाव मिला, "कभी-कभी सौ-डेढ़-सौ साल तक आत्माएं भटकती रहती हैं।"

डॉ. बलवीर सिंह को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ। बाद में उन्होंने इस संबंध में खोज की तो पता चला कि जब परलोक मे रह रही किसी आत्मा के करीबी रिश्तेदार की मौत हो जाती है, तो वह आत्मा परलोक में अपने उस रिश्तेदार की आत्मा का स्वागत करती है और उसे 'धर्मराज' के पास ले जाती है। इस विषय पर और आत्माओं की उम्र के बारे में अमेरिका में रिसर्च भी चल रही है।

रामप्रताप की आत्मा कई बार अपने जवाबों में 'गुरुजी' का नाम लिया करती थी। एक दिन सम्पर्क के दौरान डॉ. बलवीर सिंह ने उससे पूछा, "परलोक में तुम्हारे गुरुजी कौन है?"

जवाव मिला, "हम उनका नाम नहीं लेते।"

डॉ. बलवीर सिंह छोटी लड़की विजयलक्ष्मी का रिश्ता करना चाहते थे। छावला, नजफगढ़ में उन्होंने एक लड़का भी देख लिया था। जिस दिन रिश्ता पक्का करने जाना था, उससे दो दिन पहले डॉक्टर साहब ने प्लानचेट के माध्यम से रामप्रताप की आत्मा से सम्पर्क किया। आत्मा आ गयी, तो उन्होंने पूछा, "परसों विजलक्ष्मी की रिश्ता करने जाना है। तुम चलोगे?"

जवाब मिला, "हाँ।"

डॉक्टर साहब ने रामप्रताप की आत्मा को यह नहीं बताया कि रिश्ता कहाँ और किससे करना है। दो दिन बाद डॉ. बलवीर सिंह और उनके ज्येष्ठ पुत्र कृष्णमहाराज सिंह छावला गये और विजयलक्ष्मी का रिश्ता पक्का कर आये।

दो दिन बाद डॉक्टर साहब ने पुनः रामप्रताप की आत्मा से सम्पर्क किया। प्लानचेट पर आत्मा आ गयी, तो उन्होंने पूछा, "तुम विजयलक्ष्मी का रिश्ता कराने नहीं गये?"

जवाब मिला, "गया था।"

"तो बताओ, हमने शगुन में क्या-क्या दिया?" डॉ. साहब ने पूछा। रामप्रताप की आत्मा ने सारी चीजें सही-सही बता दीं। इस पर डा. साहब ने पुनः पूछा, "रिश्ता कैसा रहेगा?"

जवाब मिला, "ठीक नहीं है।"

आत्मा की बात सुनकर डॉ. बलवीर सिंह हतप्रभ रह गये। डॉ. बलवीर सिंह ने फिर कई बार रामप्रताप की आत्मा से यही प्रश्न किया। लेकिन हर बार एक ही जवाब मिला, "रिश्ता ठीक नहीं है।",

बाद में कुछ ऐसी परिस्थितियां बनी कि रिश्ता स्वयं ही टूट गया।

डॉ. बलवीर सिंह का रामप्रताप की आत्मा से अंतिम बार सम्पर्क 13 सितम्बर, 1983 को हुआ। उस दिन प्लानचेट पर आत्मा ने बिना किसी के कोई सवाल किये बताया, "डैडी, आज इस रूप में आपसे मेरी आखिरी मुलाकात है। आज मैं बहुत खुश हूँ। आप भी खुश होंगे। मैं बहुत जल्दी ही आपके पास पुनः आ रहा हूँ। आप मेरा वही नाम रखना, जो पहले था। और हाँ, जो प्रार्थना आप लोग रोज करते हैं, उसे बंद मत करना। आज से मुझे बुलाना भी मत।"

इसके साथ ही आत्मा ने उस दिन उस एक्सीडेंट के बारे में भी पूरी जानकारी दी, जिसमें रामप्रताप की मृत्यु हो गयी थी।

कृष्णमहाराज सिंह की पत्नी उन दिनों गर्भवती थीं। लेकिन उनके प्रसव में अभी कई महीने बाकी थे। डॉ. बलवीर सिंह ने इस विषय में खोज की। दर्शन शास्त्र के अनुसार, प्रवासी आत्मा अपने पुनर्जन्म से चार माह पहले बोलना बंद देती है। इसी अवधि में उसे उस स्त्री के गर्भ में प्रवेश करना होता है, जिसकी कोख से उसे जन्म लेना होता है।

रामप्रताप की प्रवासी आत्मा की उपर्युक्त भविष्यवाणी के ठीक चार माह बाद 10 जनवरी, 1984 को कृष्णमहाराज सिंह की पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया। पुत्र-जन्म से डॉक्टर साहब का परिवार खुशी से झूम उठा। पूरे परिवार को इस बात का पक्का विश्वास था कि नन्हे शिशु के रूप में रामप्रताप ने ही जन्म लिया है। प्रवासी आत्मा क निर्देशानुसार, उस शिशु का नाम भी रामप्रताप सिंह उर्फ पोपा रखा गया। रामप्रताप को बचपन में सब पोपा कहकर सुनाते थे। अब यह शिशु तीन साल, पांच माह का है। बोलने भी लगा है।

रामप्रताप की प्रवासी आत्मा ने प्लानचेट पर अंतिम बार कहा था, "मेरे जो कपड़े रखे हैं, उन्हें किसी को मत देना। मैं आकर स्वयं पहनूंगा।" सचमूच वह अपना वादा निभाने उसी परिवार में आ गया है।

एक वार उसकी आत्मा ने कहा था, "अपने घर के पास जो ऐतिहासिक इमारत है, उसके गुम्बद पर कई बुरी आत्माएं रहती हैं। वहाँ कभी मत जाना।"

डॉ. बलवीर सिंह शिशु रामप्रताप उर्फ पोपा को उस ऐतिहासिक इमारत के पास ले गये, तो वह जोर-जोर से रोने लगा। शिशु की सारी आदतें ठीक वैसी ही हैं, जैसी बचपन में रामप्रताप की थीं।

डॉ. बलवीर सिंह को दिल्ली विश्वविद्यालय ने डी. लिट. की उपाधि से विभूषित किया है। डॉ. बलवीर सिंह ने दर्शनशास्त्र उपर अंग्रेजी में चौदह पुस्तकें लिखी हैं। उन्होंने अपनी कई पुस्तकों में इस पूरे घटनाक्रम का जिक्र किया है।

सितम्बर, 1985 में डा. बलवीर सिंह अमेरिकी सरकार के निमंत्रण पर अमेरिका गये थे। वहाँ उन्होंने वेस्टर्न मिशीगन यूनिवर्सिटी, सेन्ट्रल मिशीगन यूनिवर्सिटी, एटलाण्टा यूनिवर्सिटी, एटलांटिक यूनिवर्सिटी और वर्जीनिया में इसी विषय पर भाषण दिये।

13. इस्माइल जो अबीत था !

यह भी कितनी अजीब बात थी कि एक छोटा-सा लड़का इस्माइल अपने जन्म स्थान से लगभग पौन मील दूर पहली बार आया और वहाँ एक आइस्क्रीम बेचने वाले को देखकर अचानक पूछ बैठा, "अरे सुनो, तुमने मुझे पहचाना?"

आइस्क्रीम वाले का नाम मेहमत था। उसने उस बच्चे को कभी देखा होता तो पहचानता। उसने गरदन हिलाकर इंकार कर दिया।

इस पर इस्माइल ने कहा, "अरे भाई, मैं अबीत सुजुलमस हूँ। आइस्क्रीम बेचना तुमने कब से शुरू कर दिया? तुम तो सब्जियां बेचा करते थे !"

"हाँ-हाँ !" आश्चर्य से आंखें फैलाकर उस छोटे से बालक की ओर देखते हुए मेहमत ने उसकी बात को स्वीकार किया। वह चकित-सा देख रहा था कि आखिर इतना नन्हा लड़का अपने आप को अबीत सुजुलमस कैसे बता रहा है? वह अच्छी तरह जानता था कि अबीत सुजुलमस फलों और साग-सब्जियों का थोक व्यापार करता था और उसके अपने बाग-बगीचे थे। उन बाग-बगीचों में उसके नौकर-चाकर काम किया करते थे। मगर वह इस बात को भी अच्छी तरह जानता था कि एक बार तीन व्यक्तियों ने मिलकर उसकी हत्या कर दी थी। तब फिर? यह छोटा लड़का ! और वह अबीत सुजुलमस?—उसकी आंखें प्रश्नचिन्ह के निशान की तरह खुली की खुली रह गयीं।—और तब, उसे बताया गया कि यह लड़का इस्माइल है। यह बोलना भी नहीं सीख पाया था कि छोटी-सी उम्र में ही तुतलाकर उसने अपने पिता को अपने पिछले जन्म के बारे में बताना शुरू कर दिया था।

डेढ़ वर्ष की अवस्था में एक दिन वह उकता कर बोला, "यहाँ रहते-रहते मेरा जी भर गया है। अब मैं बाल-बच्चों के पास अपने घर जाना चाहता हूँ।"

उसके पिता हैरत में डूबे खामोशी से उसकी बातें सुनकर चुप रहे गये थे। वह पेशे से कसाई थे और अदन (टर्की) में उनका अच्छा-खासा व्यापार चलता था। अपने बच्चे इस्माइल की बातों पर न केवल यह स्वयं परेशान हो उठे, बल्कि उनके तमाम रिश्ते-नातेदार और सगे-संबंधी भी चक्कर में पड़ गये थे।

इस्माइल का जन्म सन् 1956 में हुआ था और वह परिवार में अपने पिता का नौवां बच्चा था। जन्म के साथ ही उसके शरीर में अन्य बच्चों से अलग लक्षण मिले थे। उसके सिर पर जख्म के निशान की तरह एक गड्ढा था और ज्यों-ज्यों वह बड़ा होता गया, वह निशान मिटता चला गया।

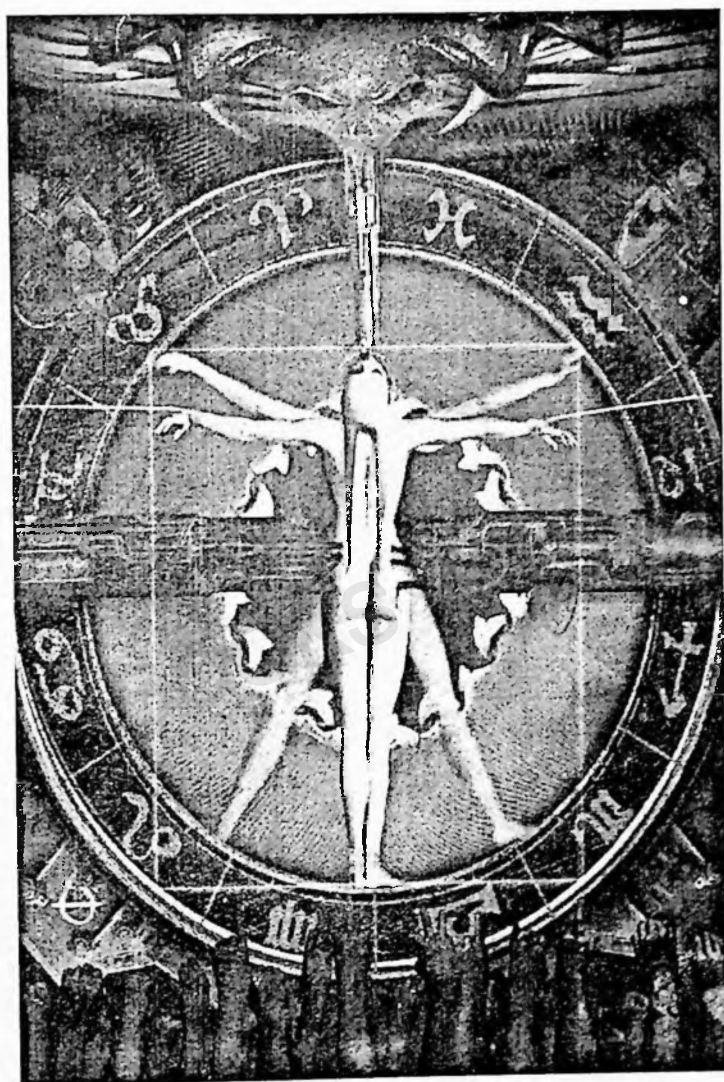
जबसे उसने बोलना सीखा, तभी से वह अपने पूर्वजन्म के बारे में बताने लगा। उसने बताया कि वह वहाँ से लगभग पौन मील की दूरी पर स्थित एक अन्य नगर का रहनेवाला है। उसकी पूर्वजन्म की इस स्मरणशक्ति पर सभी अचंभित थे। अबीत सुजुलमस का नाम उस नगर के सभी लोगों के लिए परिचित था। आखिर वह वहाँ का एक संपन्न व्यापारी था और उसके कई नौकर-चाकर थे। उसकी पहली पत्नी का नाम हातिस था। लेकिन उससे उसकी कोई संतान न हो सकी, इसलिए सुजुलमस ने उसे तलाक दे दिया था और अपनी इस संपत्ति में से उसके रहने की व्यवस्था भी करा दी थी। उसके बाद उसने कम उम्र की एक सुंदर युवती से विवाह किया, जिससे उसे औलाद का सुख मिला, यानी अब अबीत सुजुलमस की कई संतानें थीं।

तभी एक दर्दनाक घटना हुई।

31 जनवरी, 1956 की बात है, सुजुलमस की आयु लगभग 50 वर्ष की थी। उन्हीं दिनों उसने निकटवर्ती गाँव के तीन व्यक्तियों को अपने बागीचों में काम करने के लिए नौकरी पर रखा था।

उस दिन उनमें से एक ने अबीत से कहा कि जरा अस्तबल में आकर देखिए, आपका एक घोड़ा लंगड़ा है। सुजुलमस तुरंत उसके साथ अपने अस्तबल में जा पहुँचा। वहाँ उन तीनों में से दो अन्य व्यक्ति पहले ही मौजूद थे। मगर सुजुलमस उनके खतरनाक इरादों को भांप न सका था। सहज भाव से वह झुककर घोड़े की टांगों को देखने लगा। तभी उनमें से एक ने अचानक लोहे की छड़ से उसके सिर पर भरपूर वार किया। सुजुलमस सिर्फ एक आह भरकर वहीं ढेर हो गया।

लेकिन उसकी दर्दभरी आवाज़ अस्तबल से निकलकर घर के भीतर मौजूद उसकी बीबी शाहिदा और उसके दोनों बच्चों को सुनायी दी और वे तुरंत अस्तबल की ओर भागे। मगर वहाँ पहुंचते ही उन तीनों की भी हत्या कर दी गयी।



उसके बाद हत्यारे भाग निकले। लेकिन लगभग एक सप्ताह के अंदर ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उनमें से दो को फांसी की सजा दी गयी, तीसरा जेल में जाकर मर गया।

इस घटना के कुछ महीनों बाद, वहाँ से पौन मील की दूरी पर स्थित अदन में इस्माइल का जन्म हुआ। उसके सिर पर जख्म का निशान, कौन कह सकता है, पूर्वजन्म के अबीत सुजुलमस के सिर पर हुए प्राणघातक प्रहार का ही चिन्ह था?

जब वह लगभग तीन वर्ष का हुआ, दोनों ओर के परिवारों, यानी पूर्वजन्म के परिवार के लोगों और इस्माइल के नये संबंधियों ने उसे अपने घर आने-जाने की खुली छूट दे दी। वह खुले शब्दों में कहता है कि मैं शादीशुदा हूँ और मैंने दो शादियां की थीं। मेरी पहली पत्नी से कोई संतान नहीं थी, इसलिए मैंने दूसरी शादी कर ली थी। मेरी दूसरी पत्नी शाहिदा काफी सुंदर थी। जब मैं पचास वर्ष का था, मेरी हत्या मेरे नौकरों ने कर दी थी। उनमें से एक का नाम रमजान था, जिसने मेरे सिर पर लोहे की छड़ से वार किया था और मैं मर गया था। मेरी दर्दभरी चीत्कार सुनकर मेरी पत्नी शाहिदा अपने दो बच्चों इस्मत और जिनहू के साथ दौड़ी हुई अस्तबल में आयी थी और उन तीनों को भी मार डाला गया था।

ये सारी बातें अक्षरशः सत्य थीं और नगर के सभी लोग सुजुलमस की इस दर्दनाक मौत के बारे में जानते थे।

और अब इस्माइल अपने पिछले जन्म के नगर में गया, जहाँ अब उसका कारोबार ठप्प हो गया और उसकी पत्नी मिट्टी के बने दो कमरों वाले एक छोटे से मकान में रहती थी। उसने अपनी पत्नी की यह हालत देखी तो उस की आंखें भर आयीं। वह प्रेमावेश में आगे बढ़ा और नन्हें इस्माइल ने उसे इस प्रकार अपनी बांहों में भर लिया, जैसे पति अपनी पत्नी को दुःखी देखकर पसीज उठा हो, उसके दुःख को प्रेम के आबे-जमजम से धो डालना चाहता हो।

इस्माइल अब भी अपनी पूर्वजन्म की पत्नी से मिलता रहता है। मगर वह मजबूर है कि अब वह अपने पूर्वजन्म में नहीं लौट सकता। अब वह सिर्फ इस्माइल है, जो अबीत सुजुलमस बनकर दुबारा अपना कारोबार नहीं कर सकता, जिससे अपनी पत्नी का दुःख दूर कर सके और इस बात का इस्माइल सदा दुःखी रहता है।

यह सब सुनकर आइस्क्रीम वाले ने आश्चर्य से इस्माइल की ओर देखा। इस बीच इस्माइल ने उससे आइस्क्रीम भी लेकर खाई थी। इस्माइल के पिता जब उसे आइस्क्रीम के पैसे देने लगे तो इस्माइल ने तुरंत उन्हें रोक दिया, "रहने दो, पापा,

पैसे मत दो! अभी भी यह मेरा कर्जदार है। मेरे पिछले जन्म में यह मेरे ही यहाँ से बेचने के लिए सब्जियां ले जाया करता था और मेरे यहाँ इसका हिसाब चलता था। मेरे हिसाब में अब भी इसकी तरफ बकाया रकम निकलती है।"

इस्माइल के पिता ने आश्चर्य से आंखें ऊपर उठाकर देखा। आइस्क्रीम वाले मेहमत ने अजीब निगाहों से उसके पिता की ओर देखते हुए कहा, "पैसे रहने दीजिए। इस्माइल ठीक कहता है।" इस्माइल को देखकर उसकी भी आंखें न जाने किस कारण गीली हो उठी थीं, "खुदा की कुदरत!" उसके मुंह से निकला।

14. उसने फिर उसी स्थान में जन्म लिया!

ग्वालियर के बानमोर जनपद की एसोसिएटेड सीमेंट कंपनी के एक वरिष्ठ कर्मचारी अरूणप्रसाद नायक एक दिन शाम को जब घर लौटे, तो उनकी पत्नी किरणदेवी ने एक विचित्र खबर सुनाते हुए कहा, "अजी, हमारे सोनू को न जाने क्या हो गया है कि आज बार-बार यही रट लगाए हैं—"मैं ठाकर हूँ। मेरा घर एक बहुत बड़े मंदिर के पास है।"

सोनू अरूणप्रसाद का मझला लड़का है। उसका नाम अभिषेक है, पर प्यार से सब उसे सोनू कहकर ही बुलाते हैं। उसके बड़े भाई का नाम मौर्नाश तथा छोटे का नाम निर्मेश है।

उस दिन के बाद सोनू की रट, धीरे-धीरे जिद में बदल गयी। ज्यों ही अरूणप्रसाद नौकरी से लौटकर घर आते, सोनू जिद करने लगता, "पापा, मुझे मंदिर ले चलो। मेरा घर मंदिर के पास है।"

कुछ दिन ऐसे ही बीत गये।

एक दिन सोनू बच्चों के साथ खेल रहा था। अचानक उसके मस्तिष्क में पूर्वजन्म की स्मृतियां कौंध उठी। वह दौड़कर मम्मी के पास जा पहुँचा और कहने लगा, "मम्मी, मैं ट्रक से मर गया हूँ। मेरा घर मंदिर के पास है। मुझे वहाँ जाना है। मेरे माता-पिता और मेरी बहिन भी वहीं हैं। मैं जरूर वहाँ जाऊंगा।"

सोनू की बातें सुनकर किरणदेवी फिर चिंता में डूब गयी। उसने सोनू को समझाने की बहुत कोशिश की, पर वह वही रट लगाता रहा।

कुछ दिनों तक सोनू यही जिद करता रहा। इस बीच अरूणप्रसाद ने उसे स्कूल में भर्ती करा दिया, जिससे वह ट्रक से मरने की बात भूल जाए। किंतु सोनू का मन स्कूल में भी नहीं लगता। वहाँ से वह बार-बार भाग जाता था।

एक रात नींद से जागकर जोर-जोर से रोने लगा, "मेरी बहन बीमार है। मुझे उसके पास जाना है।"

सोनू की यह नयी बात सुनकर उसके माता-पिता बहुत घबरा उठे। सोनू को कहाँ ले जाएं, यह उनकी समझ में न आता था।

इसी पेशोपेश में कुछ दिन और बीत गये।

एक दिन अरूणप्रसाद का तबादला बानमोर से कैमोर हो गया। वे घर आकर सामान बांधने लगे। यह देखकर सोनू ने पूछा, "पापा, हम कहाँ जा रहे हैं?"

"बेटे, हम कैमोर जा रहे हैं," अरूणप्रसाद ने जवाब दिया।

"नहीं, पापा हमें 'द्वारका' जाना है।" सोनू को अचानक 'द्वारका' का स्मरण हो उठा।

सोनू के मुख से 'द्वारका' शब्द सुनते ही अरूणप्रसाद चौंक उठे! उनकी सभी समस्याएं अनायास हल हो गयीं। उनको सात साल पहले, सन् 1977 की घटना याद हो आयी। उन दिनों वे द्वारका की सीमेंट फैक्ट्री में नौकरी करते थे। सोनू का जन्म भी द्वारका के सिविल अस्पताल में 20 सितंबर, 1977 को हुआ था। विश्व प्रसिद्ध द्वारकाधीश का मंदिर भी द्वारका में ही है, जहाँ ले चलने की सोनू जिद करता था। इस प्रकार, यह तो निश्चित हो गया सोनू के पूर्वजन्म का घर द्वारका में ही है, पर उसे द्वारका ले जाना संभव नहीं था। अरूणप्रसाद का तबादला कैमोर हुआ था। अतः वहीं तत्काल पहुंचना था।

"बेटे, पहले हम कैमोर जाएंगे, फिर वहाँ सामान रखकर द्वारका चलेंगे", अरूणप्रसाद ने सोनू को आश्वासन दिया।

सोनू उस समय मान गया, पर कैमोर पहुंचने के कई दिन बाद भी जब उसके माता-पिता उसे द्वारका न ले गये, तब फिर से द्वारका चलने की जिद करने लगा।

आखिर एक दिन अरूणप्रसाद की वह तकलीफ भी दूर हो गयी। 23 मई, 1984 की सुबह अरूणप्रसाद को द्वारका फैक्ट्री में पुनः सर्विस ज्वाइन करने का आदेश मिला। यह समाचार सुनकर सोनू की खुशी का ठिकाना न रहा।

1 जून, 1984 को अरूणप्रसाद सपरिवार द्वारका पहुंच गये। उसी दिन शाम को वे सोनू को द्वारकाधीश के मंदिर ले गये।

सोनू पल-दो-पल तक मंदिर के प्रांगण में खडा रहा। फिर इधर-उधर देखकर रोने लगा। अरूणप्रसाद ने उसे समझाते हुए कहा, "चल, बेटे, हम भगवान द्वारकाधीश के दर्शन करें।"

"नहीं, पापा, मुझे घर ले चलो। मुझे घर जाना है," कहते हुए सोनू रोने लगा।

अरूणप्रसाद निराश होकर घर लौट आये।

दूसरे दिन अरूणप्रसाद ने अपने सहयोगी कर्मचारियों से विचार-विमर्श किया और कहा, "आप में से कोई मंदिर के आस-पास रहने वाले ठाकर परिवारों से परिचित हो, तो कृपाकर उनसे मिलें और यह जानकारी पा लें कि किसी के परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु ट्रक से तो नहीं हुई है?"

अगले दिन कांतीलाल नामक कर्मचारी ने आकर अरूणप्रसाद को बताया, "साहब, मैनें मंदिर के आस-पास रहने वाले ठाकर परिवारों से पूछताछ कर ली है। पता चला है कि मनसुखलाल दामोदर ठाकर का युवा पुत्र हितेन्द्र आज से सात साल पहले ट्रक के नीचे दबकर मर गया था। मुझे लगता है, आपका सोनू जरूर पुनर्जन्म में हितेंद्र रहा होगा। मैंने मनुभाई को भी सोनू के बारे में सब कुछ बता दिया है। वे भी सोनू तथा आपसे मिलने के लिए उत्सुक हैं।"

जब यह बात लेखक को पता चली तो लेखक के मन में भी सोनू को देखने की उत्कंठा जगी और लेखक अरूणप्रसाद से मिलने के लिए ए.सी.सी.स्टाफ कालोनी जा पहुँचा। अरूणप्रसाद उस समय घर पर ही थे। लेखक ने अपना परिचय दिया और सोनू के संबंध में औपचारिक पूछताछ करने लगा। सोनू बरामदे में अपने भाइयों के साथ खेल रहा था। इतने में मनसुखलाल का पुत्र कौशिक भी वहाँ आ गया और अरूणप्रसाद को अभिवादन कर कहने लगा, "नायक साहब, मेरे पिताजी ने आप सबको घर जाने का निमंत्रण भेजा है।"

कौशिक को देखकर सोनू तुरंत अंदर दौड़ गया और किरणदेवी से कहने लगा, "मम्मी, पापा के सामने हाथ जोड़कर जो लड़का बात कर रहा है, वह मेरा भाई है।"

सोनू की बात सुनकर सभी चौंक उठे। लेखक ने प्यार से उसे अपने पास बुलाया और पूछा, "क्या तुम इस लड़के का नाम जानते हो?"

सोनू कई क्षणों तक कौशिक को देखता रहा और फिर बिना कुछ बोले अंदर दौड़ गया।

अरूणप्रसाद ने कौशिक से कहा कि अपने पिताजी से कहना कि आज शाम को हमारे यहाँ ही आ जाएं। फिर परसों हम तुम्हारे यहाँ आ जाएगें। कौशिक ने कहा, "ठीक है, हम आज शाम को आपके यहाँ आ जाएगें।"

लेखक कौशिक के साथ उसके घर चला गया।

उसी दिन 3 जून, 1984 की शाम को मनसुखलाल के परिवार के साथ लेखक भी अरूणप्रसाद के घर जा पहुँचा। मनसुखलाल की पत्नी दिवाली बहन के साथ उनकी बड़ी लड़की प्रवीणा भी आयी थी। सोनू बरामदे में ही खेल रहा था। सभी लोगों को देखकर वह तुरंत अंदर दौड़ा और अपनी माता किरणदेवी से ऊँची आवाज़ में कहने लगा, "देख, मम्मी, मेरी दीदी और मेरे मम्मी-पापा आ रहे हैं।"

सोनू के ये शब्द सुनकर सब आश्चर्यचकित रह गये। ठाकर परिवार की आँखें हर्षाश्रु से छलक उठीं।

किरणदेवी सबके लिए चाय-नाश्ता ले आयीं। यह देखकर सोनू बोल उठा, "मम्मी, मुझे चाय के साथ रोटी खानी है।"

किरणदेवी उसके लिए रोटी ले आयी। वह रोटी के टुकड़े कर चाय में डुबोकर खाने लगा।

इस दृश्य को देखकर प्रवीणा की आँखों में आंसू आ गये। उसने सोनू को गोद में उठा लिया और आंसू पोंछते हुए कहा, "हितेंद्र सोलह साल का हो गया था, फिर भी इसी तरह चाय-रोटी खाता था।"

दूसरे दिन ठाकर-परिवार के घर पर मिलने का कार्यक्रम था। लेखक नियत समय पर अरूणप्रसाद के घर पर पहुंच गया। अरूणप्रसाद लेखक की ही प्रतीक्षा कर रहे थे। सोनू का चेहरा खुशी से खिल उठा था। हम चारों द्वारकाधीश के मंदिर की ओर रवाना हुए।

"यहाँ सब खुला-खुला क्यों दिखता है?" सोनू ने इधर-उधर देखकर कहा, "यहाँ के सब मकान कहाँ चले गये?"

"वे सब तो ढह गये।" लेखक ने उत्तर दिया।

वह विस्मित होकर आगे बढ़ा और सामने वाली गली में मुड़कर एक दरवाज़े के पास खड़ा हो गया। "यही मेरा घर है," कहकर सोनू ने दरवाज़ा खटखटाया।

दिवाली बहन ने दरवाज़ा खोलकर सभी का स्वागत किया। मनसुखलाल झूले पर बैठे थे। सोनू दौड़कर उनके पास जाकर बैठ गया और दीवार पर टंगे हितेन्द्र के चित्र को ध्यानपूर्वक देखने लगा।

"यह किसका चित्र है, सोनू?" लेखक ने धीरे से पूछा।

"यह तो मेरा ही चित्र है।" उसने दृढ़ता से जवाब दिया।

उसके बाद वह खड़ा होकर इधर-उधर देखने लगा। उसने अपना कमरा भी दिखाया और उस कमरे में हुए परिवर्तन को देखकर आश्चर्य भी प्रकट किया।

यहाँ तक तो उसकी सभी बातें सच-सच निकली, लेकिन जब लेखक ने उसके माता-पिता और ठाकर परिवार के अन्य सदस्यों के नाम बताने को कहा तो केवल प्रवीणा का ही नाम बता पाया।

इस पर अरूणप्रसाद ने प्रवीणा से कहा, "लगता हैं, सोनू के मन में आपके प्रति बड़ा लगाव है। एक बार रात में वह 'मेरी बहन बीमार है' कहकर चिल्लाकर जाग उठा था। क्या आप बीच में बीमार हो गयी थीं?"

"हाँ, मुझे जोर का बुखार आ गया था," प्रवीणा ने बीमारी को स्वीकार किया।

मनसुखलाल ठाकर के पांच पुत्र और एक पुत्री हैं। मृत पुत्र हितेंद्र सोलह वसंत पार कर चुका था और मैट्रिक में पढ़ता था। वह हनुमान जी का परम-भक्त था। हर शनिवार को वह नेशनल हाइवे पर स्थित खारा हनुमान जी के दर्शन करने जाया करता था। 5 फरवरी, 1977 की जिस शाम को ट्रक के नीचे दबकर उसकी मृत्यु हुई थी, उस दिन भी शनिवार ही था। वह हनुमान जी के दर्शन कर घर लौट रहा था कि पीछे से एक ट्रक उसे कुचलकर भाग चला।

एक बार फिर लेखक अरूणप्रसाद के घर गया और सोनू को लेकर वह तीनों खारा हनुमान जी के मंदिर जा पहुंचे। हनुमान जी का मंदिर देखकर सोनू बोल उठा, "पापा, हम यहाँ क्यों आये हैं?"

"दर्शन करने के लिए बेटे।" अरूणप्रसाद ने कहा।

"सोनू तुम यहाँ पहले कभी आये हो?" लेखक ने स्वाभाविक ढंग से प्रश्न किया।

"हाँ, हर शनिवार को मैं यहाँ दर्शन करने आता था।" सोनू ने भी उसी तरीके से उत्तर दिया और आँखों पर हाथ रखकर कुछ याद करने लगा।

"अच्छा, जिस जगह तुम्हें ट्रक ने कुचल दिया था, वह जगह हमें बता सकते हो?" लेखक ने रहस्य जानने की उत्सुकता प्रदर्शित की।

"हाँ, चलो मेरे साथ," कहकर सोनू आगे बढ़ा।

"यही है वह जगह।" सोनू ने दृढ़ता से कहा।

"ठीक है," लेखक ने कहा, "अब यह बताओ कि ट्रक के सामने तुम आये थे या ट्रक पीछे से आया था?"

"मैं तो सड़क पर जा रहा था," सोनू ने सही स्थिति का उद्घाटन किया, "ट्रक ने ही पीछे से आकर मुझे कुचल दिया था।"

लेखक की सभी शंकओं का समाधान हो गया और उस दिन के बाद सोनू का हृदय शांत हो गया। अब वह खुशी से खेलता है, खाता है और सोता है।

15. पूर्वजन्म की कृष्णा नये रूप में

बस्सी पठानां (पंजाब) के निवासी ईश्वर दत्त पाठक नंगल शहर स्थित जन-स्वास्थ्य विभाग में साधारण लिपिक थे। सन् 1979 में पाठकजी की पदोन्नति हुई और उनका स्थानांतरण नंगल (पंजाब) से हिमाचल प्रदेश के सलापड़ नामक स्थान पर हो गया। पाठकजी जहाँ अपनी पदोन्नति से खुश थे, वहीं स्थानांतरण को लेकर उदास भी। वह पहले भी सन 1966 से 1973 तक सुंदर नगर (हिमाचल) में कार्य कर चुके थे।

स्थानांतरण की वात को लेकर एक रात पाठकजी अपनी पत्नी से चर्चा कर रहे थे। उनकी दो बेटियां हैं। तीन वर्षीय छोटी सिम्मी पास बैठी गुड़िया से खेल रही थी। वातों ही वातों में सुंदर नगर में गुजरे समय का जिक्र भी आया। ज्योंही सुंदर नगर की बात चली, सिम्मी चहकते हुए बोली, "पापा, मैंनू अपणे घर भोजपुर जाणा है।" (पापा, मुझे अपने घर भोजपुर जाना है)।

सिम्मी के मुख से भोजपुर शब्द सुन पाठकजी को आश्चर्य हुआ। भोजपुर सुंदर नगर का ही एक बाजार है। सिम्मी को भोजपुर की जानकारी कैसे हुई—यह सोचकर पाठकजी असमंजस में पड़ गये। अनयास पाठकजी को सिम्मी द्वारा तीन माह पूर्व कही वात स्मरण हो आयी। तीन माह पूर्व से सिम्मी वार-वार एक बात दोहरा रही थी, "पापा, मैंनु अपने घर जाणा, ओये मेरे न्याणे ने। तिन कुड़ियां ते दो मुंडे। मेरे वड्डे मुंडे दे मत्थे ते सट लगी है... मैंनू उसदा इलाज कराणा है। मेरे घरवाले दा नां महेन्द्र सिंह है। ओ गड्डी चलांदा है।" (पापा, मुझे अपने घर जाना हैं। वहाँ मेरे बच्चे हैं। मेरे वड़े लड़के के माथे पर चोट लगी है। मुझे उसका इलाज करवाना है। मेरे पति का नाम महेन्द्र सिंह हैं। वह गाड़ी चलाता है)।

सिम्मी की बातों से पाठकजी को लगा कि संभवतः यह पुनर्जन्म का मामला है।

पाठकजी 21 अक्टूबर, 1979 को स्थानांतरित हो सालापड़ आ गये। तीन महिने गुजर गये, सिम्मी सामान्य रही। 2 फरवरी, 1980 को सिम्मी का पांचवां जन्म-दिवस बड़े चाव से मनाया गया। आस-पड़ोस के बच्चों को शाम को पार्टी दी गयी। अचानक सिम्मी पाठकजी को घर की छत पर ले गयी और उंगली का इशारा कर बोली, "पापा, सामने जेहड़ा पिंड तुसी देख रहे हो, उस पिंड विच मेरे पेके हन" (पापा, सामने जो गाँव देख रहे हैं, वहाँ मेरा मायका है)। इसके बाद वह फिर बात दोहराने लगी कि "पापा, मैंनू अपणों घर भोजपुर जाणा है।"

सिम्मी की बातों का अड़ोस-पड़ोस के लोगों को पता चला तो लोगों ने पाठकजी को सलाह दी कि सिम्मी की बातों की सत्यता को परख लिया जाए।

19 मार्च, 1980 को पाठकजी सिम्मी तथा कुछ दोस्तों को लेकर सुंदर नगर गये। सलापड़ से सुदंर नगर 20 किलोमीटर दूर है। सुंदर नगर बस-स्टैंड के साथ ही भोजपुर बाजार है। भोजपुर बाजार में अरोड़ा फोटो स्टुडियों के मालिक सरदार तरलोक सिंह पाठकजी के पूर्व-परिचित थे। पाठकजी ने सरदार तरलोक सिंह को सिम्मी के पूर्वजन्म की जानकारी दी, तो वह भी उनके साथ हो लिये।

भोजपुर में महेंद्र सिंह का घर ढूंढते हुए, जब सिम्मी को महेंद्र सिंह के पास ले जाया गया तो उसने कहा, "वह मेरा आदमी नहीं है।" पूछताछ करने पर पता चला कि एक अन्य महेंद्र सिंह नाम का ड्राइवर पहले रहता था। उसकी पहली पत्नी मर चुकी है तथा दूसरी पत्नी के साथ वह अब विनायक गाँव में रहता है। जो यहाँ से बीस किलोमीटर दूर है। महेंद्र सिंह का एक बेटा, जो उसकी पहली पत्नी से था, लीबिया में रहता है। यह जानकर सिम्मी को विनायक गाँव ले जाया गया।

उस समय तक यह खबर जंगल में आग की तरह फैल चुकी थी कि छोटी-सी बच्ची अपने पूर्वजन्म की बातें बता रही है तथा अपने पति तथा अपने परिवार से मिलने विनायक गाँव जा रही है। उस दिन सुंदर नगर में मेला भरा हुआ था। जिसने भी सुना, वही मेला छोड़कर विनायक गाँव पहुंचने लगा। लोगों की भीड़ लग गयी। सिम्मी भीड़ के बीच ठुमकती हुई आगे बढने लगी। एक स्थान पर सिम्मी ठहर गयी। वहाँ दो रास्ते थे। एक विनायक गाँव जाता था, दूसरा किसी अन्य गाँव को। सिम्मी पहले दूसरे गाँव के रास्ते पर चल पड़ी, मगर कुछ कदम चलने के बाद लौट आयी तथा विनायक गाँववाले रास्ते पर चलने लगी। वह महेंद्र सिंह के घर जा पंहुची। लेकिन घर बंद था। उस रोज महेंद्र सिंह अपनी पत्नी सहित कहीं बाहर गया हुआ था। लेकिन बंद घर देख मायूस हो गयी और वापस सालापड़ लौट आयी।



जब दूसरे दिन महेंद्र सिंह अपने घर आया तो पता चला कि उसके पूर्वजन्म की पत्नी उससे मिलने आयी थी, तो उसने सरदार तरलोक सिंह से संपर्क किया।

दूसरे दिन पाठकजी के पास सरदार तरलोक सिंह का टेलीफोन आया कि महेंद्र सिंह और उसकी पत्नी सिम्मी से मिलना चाहते हैं। आज ही सालापड़ आ रहे हैं।

पाठकजी ने सिम्मी को बताया कि महेंद्र सिंह आज आ रहे हैं। तो सिम्मी ने कहा, "पापा, वे आज नहीं कल आएंगे।"

और सचमुच वह नहीं आये। अगले दिन आये अपनी पत्नी और पुत्रवधु के साथ। पाठकजी ने उनका स्वागत किया पर सिम्मी को कुछ देर के लिए दूसरे कमरे में भेज दिया।

महेंद्र सिंह ने बताया कि उसकी पहली पत्नी का नाम कृष्णा था, जिसकी सन् 1965 में टिटनेस से सुंदर नगर के अस्पताल में मृत्यु हो गयी थी। उसके दो लड़के तथा तीन लड़कियां हैं। उसका बड़ा बेटा लीबिया में है। जिसके माथे पर चोट का निशान है। महेंद्र सिंह की बातें सुन पाठकजी को सिम्मी की सारी बातों पर विश्वास हो गया। तब वे सिम्मी को दूसरे कमरे से वहाँ ले आये। सिम्मी ने महेंद्र सिंह को तुरंत पहचान लिया और शरमा गयी। महेंद्र सिंह की पुत्रवधु ने सिम्मी को कुछ खाने को फल दिये, तो उसने स्वीकार कर लिये, परंतु महेंद्र सिंह के हाथ से कुछ न लिया।

"सिम्मी बेटी, इनकी भेंट स्वीकार नहीं करोगी?" पाठकजी ने कहा।

"नहीं पापा, यह बहुत शराब पीता है तथा मुझे बहुत मारता था।"

महेंद्र सिंह का सिर सिम्मी की बात सुन शरम से झुक गया। महेंद्रसिंह तथा उसकी पुत्र-वधु ने सिम्मी को अपने साथ विनायक गाँव ले जाने की जिद की, परंतु पाठकजी ने बाद में सपरिवार विनायक आने का वायदा किया।

23 मार्च, 1980 पाठकजी सिम्मी के साथ विनायक गाँव गये। खबर फैलते ही सैकड़ों लोग सिम्मी को देखने के लिए जमा हो गये, समाचार-पत्रों के संवाददाता भी। सिम्मी ने वहाँ उपस्थित भीड़ तथा पत्रकारों को अपने खेत, अपनी पुरानी फोटो तथा अपने बेटे का चित्र पहचानकर सभी को आश्चर्य में डाल दिया। उसने सरदार तरलोक सिंह से वहाँ एक फोटो भी खिंचवाया। महेंद्र सिंह ने सिम्मी को कुछ केले खाने को दिये, जो उसने ले लिए। वहाँ उसने पाठकजी से कहा, "पापा, इन्हें कहिए कि मेरे कमरे में पूजा-पाठ किया करें।" महेंद्र सिंह ने सबके सामने ऐसा करने का वचन दिया। सिम्मी जब लौटने लगी, तो उसकी पुत्रवधु ने उसे कुछ भेंट देनी

चाहिए। तब सिम्मी किसी बुजुर्ग की तरह बोली, "तुम्हारा विवाह मैंने अपने हाथों से करवाया है, मैं तुमसे भला क्या लूंगी?" और उसने कुछ नहीं लिया।

सिम्मी के पुनर्जन्म की कथा समाचार-पत्रों में सुर्खियों में छपी। उससे मिलनेवालों का तांता लग गया। पाठकजी हर आने वाले की आवभगत करते। पाठकजी इस बात से हैरान थे कि सीमित आय से इतना बड़ा खर्च होने के बाद भी उनके पास पैसा बच जाता था। यह चमत्कार सिम्मी के जन्म के बाद से होना शुरू हुआ था कि उन्हें पैसे कि तंगी कभी नहीं रही।

एक दिन एक अधेड़ महिला पाठकजी के घर आयी। उन्होंने उसका स्वागत किया। प्रायः नित्य ही कोई-न-कोई सिम्मी से मिलने आता था, पाठकजी ने उस अधेड़ महिला को भी उन्हीं लोगों में समझा। जैसे ही सिम्मी ने उस महिला को देखा वह माँ-माँ कहते हुए उससे लिपट गयी। सिम्मी तथा अधेड़ महिला दोनों रोने लगीं।

"पापा, ये मेरी माँ है।" सिम्मी ने उस महिला का पाठकजी से परिचय करवाया। बाद में सिम्मी की परीक्षा लेने के लिए उसकी पूर्वजन्म की माँ ने उसे एक लाल कपड़ा दिखाते हुए पूछा, "बेटी इसे पहचानती हो?"

"हाँ माँ, ये मेरे उस सूट के कपड़े का टुकड़ा है, जो मृत्युपूर्व आपने मुझे दिया था और जिसे मैं न पहन सकी थी।"

बाद में पाठकजी को सिम्मी की पूर्वजन्म की माँ ने बताया, "सिम्मी जो पूर्वजन्म में कृष्णा थी, का मायका सलनु गाँव है, जो सालापड़ गाँव के उस पार पड़ता है। उसके पिता सेना में कप्तान थे, जिनकी मृत्यु हो चुकी है। उसके दो भाई तथा एक बहन है। उसका एक भाई फायर आफिसर है तथा दूसरा पुलिस इंस्पेक्टर।"

पाठकजी को याद आया कि एक दिन सिम्मी ने छत पर चढ़कर इशारा करते हुए बताया था कि उस गाँव में उसका मायका है। सलापड़ से सलनु गाँव दिखायी देता है।

सिम्मी से मिलने उसके पूर्वजन्म के भाई आये। सिम्मी उनसे गले मिली। उसके भाइयों ने उसे जायदाद देने की पेशकश की, जिसे उसने अस्वीकार कर दिया।

सिम्मी की पूजा-पाठ में गहरी रूचि है। उसे हनुमान चालीसा अढ़ाई वर्ष की आयु से ही याद है। पाठकजी के पास सिम्मी द्वारा हनुमान चालीसा के टेप मौजूद हैं। सिम्मी पूर्वजन्म की कृष्णा हनुमान चालीसा तथा जपुजी साहिब का नित्य पाठ करती थी। सिम्मी भी प्रतिदिन पाठ करती है।

सिम्मी की पूर्वजन्म की तीन लड़कियां-ललिता, निर्मला तथा राजेश्वरी थीं, वे भी उससे मिलने आयीं। सिम्मी ने सबको पहचान लिया। सिम्मी के पूर्वजन्म का सबसे छोटा बेटा पप्पू जब उससे मिलने आया, तो वह उसकी गोद में बैठ गया। पप्पू कई बार उससे मिलने आ चुका है।

कृष्णा की मृत्यु सन् 1965 में टिटनेस से हुई थी और सिम्मी का जन्म 2 फरवरी, 1976 को नंगल में पाठकजी के घर हुआ था। वह सन 1965 से 1976 के बीच कहाँ रही? इसका जवाब भी सिम्मी ने एक दिन सन 1983 में दे दिया। उस रोज वह अस्वस्थ थी तथा थोड़ी दूर हो रही रामलीला में जाने की जिद कर रही थी। पाठकजी उसे रामलीला दिखाने ले गये। अचानक रास्ते में सिम्मी बोली, "पापा, आप बुद्धि सिंह को जानते हैं?"

"कौन बुद्धि सिंह?" पाठकजी ने चौंकते हुए पूछा।

"मेरे पिता।"

"तेरे पिता?... तेरे पिता तो सलनू वाले थे, उनका देहाँत हो चुका है।"

"नहीं पापा, मेरे मरने (कृष्णा के रूप में) के बाद मेरा जन्म सुंदर नगर में ही बुद्धि सिंह के घर हुआ था तथा मैं नौ वर्ष के बाद फिर मर गयी थी... चलो, मैं आपको अपना घर दिखाऊं।"

पाठकजी ने यह बात अपने मित्र दरबार चंद को बतायी। एक दिन वह उन्हें तथा सिम्मी को साथ लेकर बुद्धि सिंह के घर गये। वहाँ उन्हें बुद्धि सिंह तो नहीं मिला, अलबत्ता उसके पड़ोसियों ने बताया कि यहाँ बुद्धिसिंह अवश्य रहता था। सन 1966 में उनके यहाँ एक लड़की पैदा हुई थी। फिर उसका स्थानांतरण जम्मू हो गया। इसके बाद उन्हें पता नहीं।

सिम्मी के दूसरे जन्म की पुष्टि हो जाने से वह एक बार फिर सुर्खियों में आ गयी। देश के प्रमुख अखबारों के संवाददाता उससे मिलने सुंदर नगर आये। विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में भी सिम्मी के बारे में विस्तार से प्रकाशित हुआ। इसी सिलसिले में वर्ष 1984 में एक अमरीकी पत्रकार उससे मिलने आया। उसे देखते ही सिम्मी ने पूछा, "अंकल, टोनी आपके साथ नहीं आया?"

सिम्मी की बात सुनकर विल्सन स्तब्ध रह गया। उसने पाठकजी को बताया, "टोनी मेरा बेटा है तथा मेरे साथ भारत आने की जिद कर रहा था, पर मैं उसे अपने साथ नहीं लाया।"

विल्सन की रिपोर्टिंग पर बाद में अमरीका से मनोविज्ञान विभाग से तीन-चार बार कुछ व्यक्ति सिम्मी का परीक्षण करने आये। सिम्मी के पूर्वजन्म की विस्तार से चर्चा अमरीकी पत्रिकाओं में हुई है।

सिम्मी समय-समय पर भविष्वाणियां भी करती हैं, जो सच निकलती हैं। पाठकजी के अनुसार सिम्मी उनकी दूसरी बेटी है, पर दो बेटियों के बाद वह "रिस्क" नहीं लेना चाहते थे, इस पर सिम्मी ने भविष्यवाणी की कि अगले वर्ष भाई आ रहा है, सो तीसरी संतान के रूप में पाठकजी के घर बेटे ने ही जन्म लिया।

सन 1982 में पाठकजी का सालापड़ से सुंदरनगर स्थानांतरण हो गया। और फिर 30 जून, 1986 को सुंदरनगर से गुरदासपुर (पंजाब) में। इस स्थानांतरण की बात से पाठकजी परेशान हो गये। तब सिम्मी ने भविष्यवाणी की "पापा, आप चिंता न करें, आप गुरदासपुर नहीं जाएंगे। आपका स्थानांतरण पुनः सालापड़ हो जाएगा।" सिम्मी की बात सच साबित हुई।

16. प्रेम, ममता, सहानुभूति के भूखे पीटर का पुनर्जन्म

मनोवैज्ञानिक सी.जी.जंगु ने एक स्थान पर लिखा है:– "हमारा अचेतन मानवता के उस समय का अनलिखा इतिहास है जिसके विवरण के संवंध में चेतन अनभिज्ञ है।"

पीटर के पूर्वजन्म स्मृति से सम्बन्धित प्रस्तुत घटना का अन्वेषण सुप्रसिद्ध परामनोवैज्ञानिक तथा सम्मोहन द्वारा चिकित्सा के क्षेत्र में अग्रणीय (हिप्नोथैरापिस्ट) रोजर जे. बूलजर, पी.एच.डी. द्वारा सम्पन्न किया गया। वर्तमान जीवन का कठिन समस्याओं का मूल कारण सम्मोहन द्वारा खोज निकालने और अचेतन को ग्रंन्थियुक्त करने के अत्यंत रोचक घटनाक्रम को हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

डॉ. रोजर जे. लिखते हैं–

पीटर बचपन से ही हर समय क्रोधित रहा करता था जिसके कारण वह अत्यन्त चिन्तित था और क्रोध से अपना पीछा छुड़ाना चाहता था उसके उपचार हेतु हमने उसे सम्मोहित किया।

सोमवार सायंकाल का समय है। न्यूयार्क में पुराने पत्थरों से निर्मित एक भवन; जो खेतों के बीचोंबीच वना है, मेरा और मेरी पत्नी जैनीफर का निवास स्थान है। घर के बड़े हाल में कुछ लोग बड़ा दायरा बना कर बैठे हुए हैं। पूर्वजन्म और पुनर्जन्म में विश्वास रखने वाले, सम्मोहन में प्रतीप मगन की प्रक्रिया द्वारा पूर्वजन्म की स्मृति उजागर करने तथा इस इस जन्म की कठिन समस्याओं का समाधान तथा कारण पूर्वजन्म की घटनाओं में ढूंढने की प्रक्रिया में रूचि रखने वाले प्रबुद्ध परामनोवैज्ञानिक सम्मोहन कर्ताओं ने एक मंडली बनाई है। इसी मंडली के लोग गोल दायरा बनाकर बैठे हुए हैं। एक युवक जिसकी आयु लगभग बीस वर्ष

है और देखने में मध्यम स्वास्थ्य का मालिक लगता है, हाल पर बिछे कालीन पर मंडली पर मंडली के बीचोंबीच आंखें मूंदे लेटा हुआ है। इस युवक का नाम 'पीटर' है। पीटर का सामान्य जीवन में हर छोटी-मोटी बात पर क्रोध आ जाता है। इस क्रोध की भावना के कारण सुख-चैन तथा शांति कोसों दूर है। क्रोधी स्वभाव होने के कारण कोई उससे संबंध नहीं रखना चाहता, अपनी इस भावना का मूल कारण समझ पाने में असमर्थ है इसीलिए वह यहाँ अपना इलाज करावाने आया है, अपनी अर्द्धनिद्रावस्था में उसकी मुट्ठियां भिंचीत हुई है तथा दांतों की पंक्तियां परस्पर जबरदस्ती जुड़ी गई हैं, जैसे किसी ने उन्हें लोहे के तार की साथ बांध दिया हो, उसका पूरा शरीर ऐंठा हुआ है और अपने सिर को दाएं-बांए घुमाते हुए वह खिसियानी हंसी हंस रहा है।

मंडली ने अभी-अभी इस युवक को सम्मोहित करके प्रतीपगमन की प्रक्रिया द्वारा उसके अवचेतन में उसकी प्राचीन पूर्वजन्म की स्मृतियों को उजागर करके उसे भूतकाल में घटित घटनाओं को पुनः जीने का सुझाव दिया है। इस निन्द्रावस्था में उसे अपने न जाने कब से समय के पूर्वजन्म की स्मृति प्रत्यक्ष उभर आई है और वह उन क्षणों को पुनः अनुभव कर रहा है, अपने जवड़े भींचे हुए वह डॉ. रोजर द्वारा पूछे प्रश्नों का उत्तर देना प्रारंभ करता है।

डॉ. रोजरः कैसा अनुभव कर रहे हो—क्या आयु होगी तुम्हारी?

पीटरः मैं बारह-तेरह वर्ष का लड़का हूँ और अभी-अभी मुझे खेत के मालिक ने चाबुक से बहुत पीटा है।

डॉ. रोजरः और वहाँ क्या-क्या हो रहा है?

पीटरः मुझे एक किसान ने अपने मजबूत हाथों से जकड़ रखा है और खेत के मालिक मुझे फिर पीटना शुरू कर दिया है।

डॉ. रोजरः क्या तुम चिल्ला रहे हो? चिल्ला कर किसी को अपनी सहायता के लिए बुला सकते हो?

पीटरः नहीं। पीटर अपने जबड़े बुरी तरह कस लेता है, उसका शरीर और भी ऐंठना शुरू हो जाता है हम सब महसूस करते हैं जैसे वह अत्यन्त पीड़ा की स्थिति में है।

डॉ. रोजरः अगर खेत का मालिक तुम्हें छोड़ दे तो तुम क्या करोगे?

पीटरः मैं उस पागल कुत्ते के पिल्ले को जान से मार दूंगा, मुझे किसी काम के लिए न कहने का हक नहीं है परन्तु उसे यह हक है कि वह मुझे जब चाहे पीट सकता है, मैं, मैं घृणा करता हूँ।

मैं उससे घृणा करता हूँ, मैं इस नर्क से निकलना चाहता हूँ परन्तु कहीं भाग कर जा भी तो नहीं सकता, ये लोग मेरी हत्या कर देंगे।

पीटर की सांसें अब तेज हो गई हैं उसके मुंह से झाग जैसा पदार्थ निकल रहा है, वह जोर से थूक बाहर फेंकता है और कुछ बड़बड़ाता है, जैसे किसान को गाली दे रहा हो, उसकी मुट्ठियां और कस जाती हैं, महसूस होता है कि किसान ने उसे जकड़ रखा है और वह उस मजबूत पकड़ से निकल भागने का प्रयत्न कर रहा है, वह फिर बड़बड़ाने लगता है।

पीटरः मुझे छोड़ दो, मुझे छोड़ दो—अब तुम बहुत जुल्म कर चुके। मैं तुम्हें जिंदा नहीं छोडूंगा। मैं तुमसे अब तक डरता रहा परन्तु अब मैं बड़ा हो गया हूँ, अब मैं तुम्हारी हत्या भी कर सकता हूँ।

जैसा ही वह चिल्लाता है उसका बदन ऐंठना शुरू हो जाता है। उसकी सांस धोंकनी की तरह चलनी शुरू हो जाती है। यह पूरी कहानी तन्द्रावस्था में यह सुझाव दिए जाने पर कि वह अपने जन्म से पहले के समय का वर्णन करे, प्रांरभ होती है और अब वह उन घटनाओं को इस प्रकार दोबारा अपने अचेतन में जीना शुरू करता है जैसे वह पीटर न होकर वही लड़का हो जिसे किसान ने मजबूती से पकड़ा हुआ है और खेत मालिक उसे पीट रहा है।

पीटरः मैं खेत पर काम करने वाला एक बंधुआ मजदूर हूँ। यद्यपि अभी मेरी आयु बारह-तेरह वर्ष की है परन्तु मेरे और खेत के मालिक के बीच एक इकरारनामा है जिसकी शर्तों के कारण मैं बंधा हूँ। मुझे अपने माता-पिता याद नहीं। शायद वे मर चुके होंगे। खेत मालिक जिस प्रकार मुझे मार-मार कर मुझसे कार्य लेता है वह मुझे कभी भी पंसद नहीं था। परन्तु मैनें कभी भी उसे कुछ नहीं कहा। आज तो इसने जुल्म की हद ही कर दी। आज सुबह उसने मुझे मुर्गी के छोटे चूजों को दाना खिला आने की आज्ञा दी और मैंने यह काम करने से इंकार कर दिया, बस मेरा इंकार करना था कि उसने अपने अन्य मजदूरों को बुलाया और मुझे पकड़ लिया तथा अपने घोड़े की चाबुक मंगवाई और मुझ पर बरस पड़ा, परन्तु मैं चिल्लाया नहीं। इस घटना के अपनी तन्द्रावस्था में दोबारा जीते हुए उसे जो पीड़ा हुई होगी, हम अनुभव कर सकते थे परन्तु उसके शरीर की ऐंठन कुछ कम हो गई। जबड़ा धीरे-धीरे ढीला पड़ता हुआ खुलने लगा। उसकी भिंचीत मुट्ठियां खुल गई और तनाव कम हो गया। अब कुछ शांत दिखने लगा।

पीटरः मैं नहीं जानता मैंने क्या किया। लेकिन मुझसे कुछ ऐसा हुआ है जिसे करने की मैं वहुत दिनों से सोच रहा था, परन्तु यह ठीक नहीं था, मुझे किसी काम से भी न कहने का हक नहीं था–

हम अनुभव कर रहे थे उसके वोलने के ढंग में परिवर्तन आ रहा था और वह शांत हो चुका था। उसका सारा तनाव खत्म हो चुका था। इस जन्म पीटर सर्वथा भिन्न था और जैसे उसने अपने पूर्वजन्म में भोगे गए दुःख तथा दारूण स्थिति को पुनः जीते हुए अपने अन्तर्मन के विचार तन्द्रावस्था में वताए उसके आगे की घटनाएं इससे सर्वथा भिन्न थीं, एक ही तरफ को देखते हुए उसने अपनी आगे की कहानी में वताया कि वह न ही तो पढना लिखना सीख सका और न ही उन्नति कर पाया, इसी प्रकार काम करते व मार खाते खाते पांच वर्प और वीत गए। अन्त में खेत मालिक की मृत्यु होने पर इकरारनामा खत्म हो गया और वह वहाँ से भाग आया क्योंकि खेत मालिक की मृत्यु के पश्चात् वह किसी के लिए वंधा हुआ नहीं था। उसने तन्द्रावस्था में अपना आगे का जीवन भी अत्यंत संघर्पपूर्ण वताया। वह सड़कों पर दूसरे देश से निप्कासित होकर आए शरणार्थियों की तरह मजदूरी करता रहा। कुछ समय खान में भी काम किया परन्तु उसका व्यवहार इतना रहस्य पूर्ण था कि लोग उससे कई वार भय खाने लगते और कभी वह अपना व्यवहार इस तरह वदल डालता कि लोग उसे अपने मनोरंजन का साधन समझते। सालों साल वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकता रहा। 84 वर्प की आयु तक दुःख भोगते हुए वह जीया और मिडवैस्ट के एक चैरिटेबल अस्पताल में उसने अपना दम तोड़ दिया।

पीटर के पूर्वजन्म की घटनाओं में कुछ विरोधाभास भी हैं, मैंने उससे प्रश्न किया।

डॉ. रोजरः क्या तुम किसी ऐसी घटना को देख सकते हो जो तुम्हारे लिए अपने सारे जीवन में महत्वपूर्ण रही हो और जिसे तुम भूला न पाए हो?

उसे डिन्डैलियन के खेतों में बने एक घर की याद आई और वह उस समय में व्यतीत किए गए समय को पुनः स्पप्ट देखने लगा।

पीटरः मैं डिन्डैलियन में एक घर में हूँ। यहाँ एक वृद्ध महिला है। इस शहर के सब लोग न जाने क्यों उससे घृणा करते हैं, इतनी घृणा कि वह मुझे पैसे देते है ताकि मैं उस वृद्ध महिला को पीटूं और उसे जान से मार डालने की धमकी दूं।

मैं डिन्डैलियन में घर में हूँ, वृद्ध महिला मुझे अक्सर चाय पर वुलाती है। मेरे लिए वह बहुत महान तथा दया की देवी है। यह वह पहली औरत है जिसे मैं अन्तर्मन से श्रद्धा की दृष्टि से देखता हूँ। वह भी मुझ पर अत्यंत ममता दर्शाती है।

मैं नहीं जानता मुझे अब क्या करना चाहिए। मैं बहुत थक चुका हूँ क्योंकि लोग मुझे पागल समझते हैं और सोचते हैं पैसों के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूँ और उन्हें विश्वास है कि मैं पैसे लेकर वृद्धा को पीटूंगा और उसे जान से मार डालने की धमकी दूंगा। मैं समझ नहीं पाता कि बुढ़िया ने उन सब का क्या बिगाड़ा है, मुझे वह दया कि मूर्ति जैसी लगती है। बहुत विशाल भवन की मालकिन है यह बुढ़िया। मैं रसोईघर में जाता हूँ, वह मेरे लिए चाय बना रही है, मेरी ओर देखकर वह मुझे कहती है कि मैं सूरत से पागल लगता हूँ, उसके इस प्रकार कहने पर मुझे उस पर क्रोध आता है। अचानक न जाने मुझे क्या हो जाता है, मैं उसके मुंह पर जोरदार धक्का देता हूँ, चाय की ट्रे फर्श पर बिखर जाती हैं और वह गिर पड़ती है। मैं उसे चीख कर कहता हूँ, मैं तुम्हें मार डालूंगा इस पर भी वह हंसती हुई उठने का प्रयत्न करती है। उसकी हंसी देखकर मुझे और क्रोध आता है और मैं उसे मार डालता हूँ।

फिर अचानक जैसे मेरी चेतना को एक गहरा धक्का सा लगता है। सोचता हूँ यह मैंने क्या किया. उसके मुर्दा शरीर को घसीट कर बाहर तालाब के किनारे लाता हूँ और उसे तालाब के हवाले कर सड़क पर चल देता हूँ। तन्द्रावस्था में होने पर भी पीटर की आँखों से आंसू बहने लगते हैं।

पीटरः मैंने उस बुढ़िया को मार डाला। यही वह पहली औरत थी जिसे मैं अपनी अन्तरात्मा से श्रद्धा की दृष्टि से देखता था। वह मुझ पर अत्यंत ममता दर्शाती थी, मेरे लिए वह बहुत महान तथा दया की देवी थी। मैंने उसे क्यों मार डाला, मेरा इसके सिवा इस संसार में कोई भी अपना नहीं था।

पीटर ने अपने संपूर्ण जीवन का समय जो लगभग उसने सड़क पर व्यतीत किया तथा जीवन में उसका एकाकीपन व बार-बार उसे नीचा दिखाया जाना, हत्या करने के पश्चात् उसका प्रायश्चित, प्रेम और ममता से वंचित जीवन, भीतर अर्न्तमन में दबी कुठांए सब उसकी आँखों से आंसूओं के रूप में बह निकलती हैं, जीवन में तनिक सी सहानुभूति प्रेम और दया सूने मरूस्थल जैसे जीवन में हल्की वर्षा का कार्य करती है।

तन्द्रावस्था में लेटे हुए पीटर की दशा देखकर हम सब द्रवित हुए बिना नहीं रह सके। मैंने उसके कन्धे पर हल्का सा हाथ रखा और सुझाव दिया कि अब यह सब समाप्त हो चुका है और तुम अपने उस जीवन के दुःख भूल जाओ।

अपने जीवन के अन्तिम क्षणों को स्मरण करते हुए उसने पुनः कहना शुरू किया।

पीटरः मैं अब जा रहा हूँ, इस दुःख पूर्ण जीवन से बहुत दूर बहुत जी लिया और शरीर से बाहर मुझे बहुत राहत मिल रही है, चारों ओर अलौकिक प्रकाश फैला है। अस्पताल के कमरे में मैं नीचे टेबल पर पड़े अपने मृत शरीर को देख रहा हूँ, जिसकी आँखों के नीचे आंसू की धारा सूख चुकी है। ओह! मैं कितना निराश तथा असहाय था। इसी कारण मेरा क्रोध भी चरम सीमा पर था, मैं पूरी दुनिया पर क्रोधित, शांति और करूणा के बूंद का प्यासा। अब मैं जा रहा हूँ। इन सबको छोड़कर, आसमान से फरिश्ते मुझे लेने आए हैं। तन्द्रावस्था में लेटे हुए पीटर के चेहरे पर मुस्कान की लहर सी दौड़ गई मृत्योपरान्त जिन मौत के फरिश्तों को उसने देखा वह मृत्यु के अंतिम क्षणों के दृश्य थे।

फिर मैंने उससे पूछा–

डॉ. रोजरः तुम अब उस जीवन से लौट आए हो, अब तुम्हें वह सुख दुःख नहीं सताएगें, अब वर्तमान में लौट आओ तथा और बताओ कि पूर्व जन्म की परिस्थितियां तथा संकट जो तुमने झेले उनका वर्तमान के जीवन पर क्या प्रभाव व संबंध है?

पीटरः मुझे क्रोध के कारण हमेशा संकट का सामना करना पड़ता है। मुझे विद्रोह तथा लड़ाई-झगड़े से हमेशा आनंद आता है परन्तु मेरे अर्न्तमन का कुछ भाग डरपोक भी है यदि मैं क्रोध में आ जाऊं तो कुछ भी कर सकता हूँ, परन्तु जिस कारण मुझे क्रोध आता था, वह जीवन कितना निरर्थक था, अब मैं अपने भीतर शांति अनुभव कर रहा हूँ। परन्तु इस जीवन में भी एकाकी रहना पसन्द करता हूँ। क्या हमने कभी जीवन में प्यार, सहानुभूति प्रसन्नता इन सबका मूल्य आंका है, यदि यह सब जीवन में न मिलें तो अन्तर्मन इनके लिए तड़पता है और फिर होती है क्रोध की उत्पत्ति, एकाकी रहने की चाहत। पीटर का अप्रसन्न व्यक्तित्व सम्मोहन के इस प्रयोग के पश्चात् सर्वधा परिवर्तित हो गया। सम्मोहन की तन्द्रावस्था से पीटर ने जब आंखें खोली तो उसके चेहरे पर मुस्कराहट थी और उसके मुंह से सहसा निकलाः

"आई एम फाइन"

मैं अब बिल्कुल ठीक हूँ और स्वयं को शांत तथा परिवर्तित अनुभव कर रहा हूँ। इस जीवन में ऐसा कुछ नहीं है जिसके कारण मैं क्रोधित हो संकू। अपनी समस्या का समाधान मुझे मिल गया हैं जिस प्रेम, ममता और सहानुभूति से मैं अपने पूर्व जीवन में वंचित रहा हूँ, इस जीवन में मुझे प्राप्त है और मैं भी अन्य लोगों में इसे बांटने का प्रयत्न करूंगा क्योंकि मैं समझ चुका हूँ कि जितना प्यार, सहयोग बांटो उतना ही मन शांत रहता है।

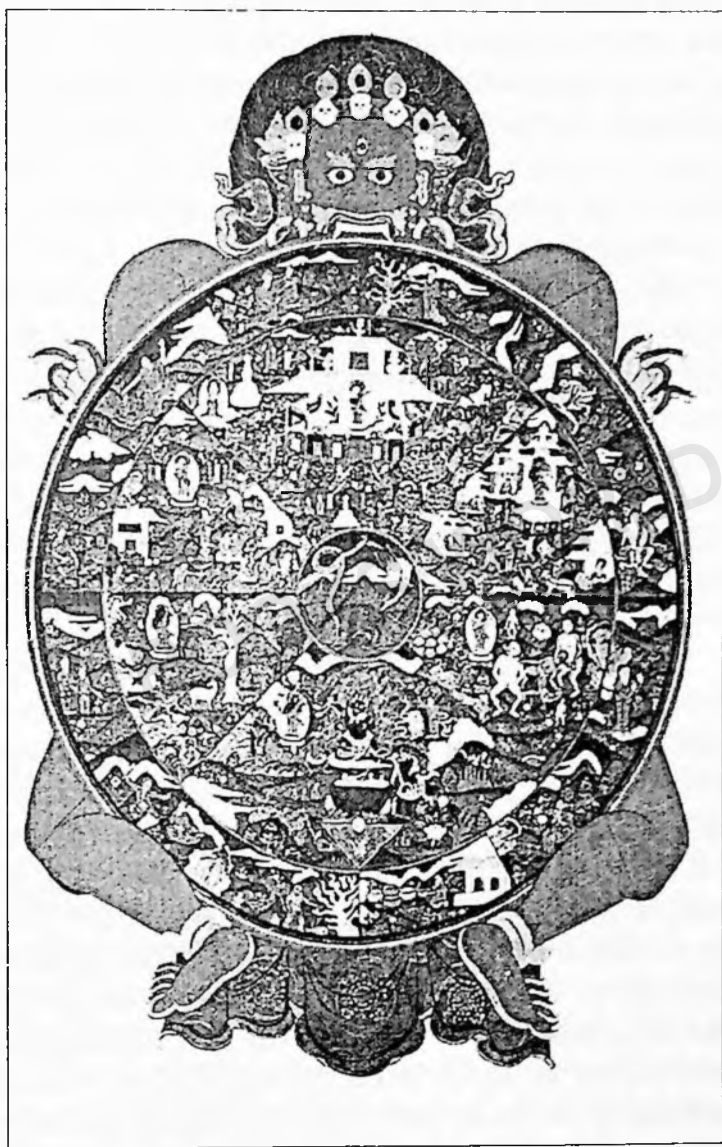
17. एक आत्महत्यारिन का पुनर्जन्म

ऐना ने पूर्वजन्म में गोली मार कर आत्महत्या की थी, सम्मोहन की तंद्रावस्था में उसने अपने आत्महत्या करने का रहस्य खोला। सुप्रसिद्ध परामनोवैज्ञानिक हैलन स्टीवार्ट वैमबैच ने पुर्नजन्म तथा अलौकिक रहस्यों पर निरन्तर शोधकर्ता किया है, सम्मोहन की तंद्रवस्था में, स्मृतियां उजागर हो उठने में भी वह पूर्ण विश्वास रखती हैं तथा इस क्षेत्र में उन्होंने कई सफल प्रयोग भी किए हैं।

परामनौविज्ञान के इस क्षेत्र में खोज कार्य करने के लिए उन्होंने एक समिति बनायी और इसी समिति की सदस्या थी। ऐना, ऐना पर सम्मोहन का प्रयोग करते समय ऐना को अपने पूर्वजन्म की स्मृतियां स्पष्ट उभर आयीं और सम्मोहन की तंद्रवस्था में उसने पूर्व जन्म में व्यतीत हुए समय को पुनः जिया और ऐसा महसूस किया जैसे कि वह ऐना नहीं, कोई और ही है।

ऐना, जिनका जन्म 1938 में न्यूजर्सी में हुआ तथा अब साधारण घरेलू महिला का जीवन व्यतीत कर रही है, के व्यवहार और उसकी असामान्य रुचियां तथा उसकी समस्याओं को देखते हुए वैमबैच ने उसे सम्मोहित करके, उसके अचेतन में दबी भावनाओं को जानना चाहा, प्रारम्भ में तो केवल इतना ही था, परंतु सम्मोहन की तंद्रावस्था में जब 'ऐना' एक-एक वर्ष करके उसे जन्म से पहले जाने का सुझाव दिया, तो उसके चेहरे पर भय के चिन्ह प्रकट होने लगे जैसे की कोई उसे भयभीत कर रहा हो, शायद तन्द्रावस्था में वह अपने पूर्वजन्म के अंतिम क्षणों का अनुभव कर रही थी।

वह वर्ष 1917 का था, और ऐना ने उन क्षणों मे जो कुछ हुआ उसे पुनः जीते हुए विस्तार से बताना शुरू किया, परन्तु यह आवाज़ ऐना की नहीं किसी औऱ की ही थी, तब वह अपने घर के मुख्य कमरे (बैठक) की खिड़की पर बैठी हुई



थी। उसकी आवाज़ व भाषा से यह स्पष्ट महसूस हो रहा था कि वह अपने पूर्व जन्म में अधिक पढ़ी-लिखी नहीं थी। ऐना ने अपनी बदली आवाज़ में कहना शुरू किया। उसकी आवाज़ में उत्साह एवं प्रसन्नता नहीं थी, बल्कि निराशा और उदासी भरी हुई थी। वैमवैच ने उस शहर का नाम जानना चाहा, तो ऐना ने बड़ा अस्पष्ट-सा उत्तर दिया, शायद वह भाषा का अंतर था, शहर का नाम जानने के लिए वैमवैच ने ऐना को सुझाव दिया कि वह कमरे में रखा कोई भी समाचार पत्र पढ़े, सुझाव के अनुसार समाचार पत्र पढ़ने से पता चला कि ऐना अपने जिस पूर्व जन्म का विवरण दे रही है वह 'न्यूजर्सी' के ही 'वैस्टफील्ड' शहर में हुआ था।

ऐना ने पुनः कहना शुरू किया कि किस प्रकार वह अपने घर तथा उस कमरे के साथ मानसिक रूप से जुड़ी हुई हैं, जहाँ उसने अपने जीवन के कई वर्ष अकेले व्यतीत किए हैं, जिस खिड़की पर वह बैठी हुई है, कैसे उसने उस खिड़की के पर्दे अपने हाथों से बनाए थे। इतना कहते-कहते ऐना की आवाज़ किसी आंतरिक दुःख के कारण भारी हो उठी और उसने कहा कि उसे अपनी पूरी जवानी के कितने ही वर्ष अकेले ही बिताने पड़े हैं, क्योंकि उसका पति 'यूनाइटेड स्टेट्स' की सेना में उच्चाधिकारी है तथा अब वह युद्ध के मोर्चे पर लड़ाई के लिए गया हुआ है, अकेले रहते-रहते अकेलेपन की आदत-सी पड़ गयी है, पर हर समय जीवन में एक कमी सी अनुभव होती रहती है जो कई बार सहन नहीं होती।

ऐना ने आगे बताया कि उसके दोस्त, उसके पड़ोसी सब अच्छे हैं, और उसका अपना काम भी अच्छा है, परन्तु अपना काम कहते-कहते ऐना की जबान थरथराने लगी, और उसके चेहरे पर पुनः भय की छाया नजर आई, शायद वह अपने काम से संतुष्ट नहीं थीं अथवा पूर्वजन्म में वह कोई ऐसा कार्य करती थीं, जिसके परिणामों से वह भयभीत थी। ऐना ने बताया कि जिस स्थान पर उसका घर है, वहाँ से थोड़ी दूर पर कोने से एक सप्लाई स्टोर बना हुआ हैं, पति के सेना में भरती होते ही उसे इस घर में अकेले रहना पड़ा, उसके पति कभी-कभी घर आते बहुत समय ऐसे ही बात गया, फिर युद्ध शुरू हुआ, पति मोर्चे पर चला गया, महंगाई बहुत बढ़ गई, वह भी अपने जीवन से ऊब चुकी थी और कुछ करना चाहती थी, वह अपने रोजमर्रा का सामान लेने के लिए नुक्कड़ के सप्लाई स्टोर पर लगभग रोज जाती थी। एक दिन अचानक उसने स्टोर के मालिक से मंहगाई के बारे बातचीत की तभी स्टोर के मालिक ने उसे नया ही रास्ता सुझाया कि वह सभी सामान सेना के स्टोर से लिया करे और वह सामान उसके स्टोर पर बेच दिया करे

तो उसे अच्छे पैसे मिलेंगे, क्योंकि सेना के अधिकारी की पत्नी होने के नाते वैसे भी उसे सेना के स्टोर से सामान सस्ता मिलेगा। ऐसा करने से उसका दिल भी लगा रहेगा, और उसे ब्लैक के पैसे भी बहुत मिल जाया करेंगें, ऐना पहले तो ऐसा काम करने से बहुत घबरायी, परंतु अपने एकाकी जीवन की बोरियत खत्म करने के लिए उसने स्टोर पर सामान बेचने का काम शुरू कर दिया, परन्तु अब उसकी आत्मा और भी व्याकुल रहने लगी।

भेद खुल जाने का भय हमेशा उसके मन में बना रहता, उसने खूब पैसा बनाया, परंतु यह सोचकर वह भय के मारे कांप जाती कि यदि पता चला कि उसका पति तो देश की रक्षा के लिए युद्ध के मोर्चे पर अपनी जान की बाजी लगा कर लड़ रहा है और वह यहाँ सेना के काम आने वाली वस्तुओं को ब्लैकमार्केटिंग करके पैसा कमा रही है, तो उसकी क्या दशा होगी, बस यही भय उसे भीतर ही भीतर खत्म करता जा रहा था।

सन् 1917 के दिनों में जबकि जर्मनी के साथ युद्ध चल रहा था, उसने भी जर्मनी से बहुत घृणा की थी और अपने देश अमेरिका के प्रति अपना प्यार तथा देशभक्ति प्रदर्शित की थी, परंतु वास्तव में वह क्या थी, एक ब्लैक मार्केटियर, सेना के सामान से पैसा कमाने वाली, देशद्रोही अपना मन बहलाने के लिए वह कितना नीच कार्य करती रही है और इसी आंतरिक भय ने उसे आत्महत्या करने को विवश कर दिया, पूर्वजन्म में उसे मारने वाला कोई और नहीं बल्कि वह खुद ही।

ऐना को सम्मोहित करके उसकी तन्द्रावस्था में परामन वैज्ञानिक वैमबैच ने उसक पूर्वजन्म के संबंध में जनकारी हासिल कर ली थी, परंतु यह जानकारी प्रमाणित नहीं थी, वैमबैच तन्द्रावस्था में बताए गए तथ्यों की सत्यता पर खोज करना चाहती थी, वैमबैच ने स्थानों के नाम तथा व्यक्तियों के नाम, समय, तारीख वगैरह पूरे विवरण की खोज के लिए ऐना को कई बार सम्मोहित किया।

ऐना ने सम्मोहन की तन्द्रावस्था में कई स्थानों के नाम बताये, उसने बताया कि उसका घर, किसी 'मडलेन' पर स्थित था तथा उसे लेन पर नुक्कड़ पर जो सप्लाई स्टोर था उसके मालिक का नाम भी ऐना ने याद करने का प्रयत्न किया परन्तु वह बता नहीं पायी, तन्द्रावस्था में उसने कहा कि वह जिस "केप्टन ओ नेल" के संबंध में बात कर रही है, वह उस शहर का बड़ा पुलिस अधिकारी था। ऐना ने सन् 1896 में वैस्ट फील्ड में लगी उस भयानक आग का भी जिक्र किया, उस अग्निकांड के जिक्र ने तो वैमबैच को तो क्या सभी को आश्चर्यचकित कर दिया,

क्योंकि ऐना ने एक बार कहा कि आग लगने पर अलार्म बजाया गया, जबकि सन् 1896 तक आग लगने पर अलार्म बजाने का रिवाज नहीं था और न ही उसकी सुविधा थी परन्तु इसके आगे पूछने पर रहस्य खुला। उसने कहा कि जब भी किसी शहर पर कोई संकट की घड़ी आती थी तो स्कूल की घंटी को जोर-जोर से बजा दिया जाता था, जिससे शहर के लोग सतर्क हो जाते थे और इस 'अग्निकांड' के समय भी इसी स्कूल की घंटी को तीन बार बजाया गया था।

इन सभी कथनों की सत्यता को जानने के लिए ऐना के पूर्वजन्म सन् 1884 से लेकर 1917 तक के समय से संबंधित जो भी रिकार्ड उपलब्ध हो सकते थे। उनकी खोज तथा स्थानों की खोज करने के लिए वैमवैच ने वैस्ट फील्ड जाने का निर्णय किया। वैमवैच की खोजी टीम को यह जान लेने की इच्छा थी की सम्मोहन की तन्द्रावस्था में ऐना ने जो कुछ भी कहा क्या उसमें कुछ सत्यता है, वैमवैच के अपने निवास स्थान से वैस्ट फील्ड.... केवल किलोमीटर की दूरी पर है।

वैस्ट फील्ड पहुंच कर पुराने रिकार्डों का निरीक्षण करने के लिए सबसे पहले तो वहाँ के स्थानीय समाचार पत्र के कार्यालय पहुंचे, जो कि वहाँ का सबसे पुराना तथा विश्वसनीय समाचार पत्र समझा जाता था। समाचार पत्र के कार्यालय से उन्हें पता चला कि उनके पास पिछले सौ वर्ष के प्रकाशित समाचार पत्र की प्रतिलिपियां, माइक्रो फिल्म के रूप में उपलब्ध हैं।

सन् 1884 के बाद के रिकॉड्र्स का निरीक्षण करने पर, ऐना के कथनों की सत्यता आंशिक रूप से प्रमाणित हो गयी। पता चला कि वास्तव में 1896 में वैस्ट फील्ड में भयंकर अग्निकांड हुआ था और उस जमाने मे अलार्म के स्थान पर स्कूल की घंटी का इस्तेमाल किया जाता था। कैप्टन ओ नेल का चित्र छपा था, जिस प्रकार कैप्टन के बारे मे तन्द्रावस्था में बताया था, वह चित्र में वैसा ही खूबसूरत जवान लग रहा था। ऐना द्वारा बताए गए अन्य स्थान व व्यक्तियों के नाम भी सत्य पाये गये।

इन सब नामों के बीच ऐना ने जो अपनी लेन 'गली' का नाम बताया था वह था मडलेन, वैमबैच तथा उसके खोजी सहायकों को मडलेन खोजने में बहुत परेशानी उठानी पड़ी, क्योंकि अब नक्शे पर इस नाम का कोई स्थान नहीं था, वैस्ट फील्ड में पुराने समाचार पत्रों का निरीक्षण करते हुए सन् 1924 में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार मडलेन का नाम बदलकर 'क्रेस्ट वुड ड्राइव' रख दिया था।

ऐना के पूर्वजन्म के पति के संबंध में पूरी जानकारी हासिल की गयी, वह सेना में अधिकारी था और वह अक्सर घर से दूर रहता था और 1917 में वह युद्ध के मोर्चे पर था। परंतु पूर्वजन्म में मृत्योपरांत ऐना के दफनाये जाने का कोई प्रमाण नहीं मिला, कैप्टन ओ नेल तथा ऐना की कब्र खोजने के लिए वैस्ट फील्ड के तमाम कब्रिस्तानों का निरीक्षण किया गया।

अनुमान लगाया गया कि हो सकता है क्योंकि उसने पूर्वजन्म में देश के साथ गद्दारी की थी और फिर आत्महत्या कर ली थी, शायद इसलिए उसकी कब्र पर उसके नाम का कोई पत्थर न लगाया गया हो।

18. बालक ने पति-पत्नी का जायजा लेना शुरू किया

मंदिर के सत्संग भवन में महिलाओं का संकीर्तन चल रहा था। एक तीन-चार वर्ष का बच्चा महेश चालीस वर्षीय रामकली देवी को टुकुर-टुकुर देखे जा रहा था। कीर्तन की आवाज रूकते ही वह बच्चा रामकली देवी की ओर इशारा करके कहने लगा कि ये मेरी पत्नी हैं। मेरे तीन लड़के और तीन लड़कियाँ हैं। सारी औरतें उस नन्हें से बच्चे के मुंह से ये बातें सुनकर भौंचक्की रह गईं। रामकली देवी शरमा गईं। चार साल पहले ही उनके पति का स्वर्गवास हुआ था। औरतों ने महेश से कुरेद-कुरेद कर पूछना शुरू किया तो उसकी माँ उसे वहाँ से ले गई। रामकली देवी भी कीर्तन बीच में छोड़कर चली गई।

पचास वर्षीय लाला बुद्धसेन की बरेली जिले के आंवला कस्बे में बड़ी प्रतिष्ठा थी। वह बहुत भले जमींदार थे। बात सन् 1956 की है। लालाजी को लंबी बीमारी के कारण लगा कि अब मैं नहीं बच पाऊंगा। अतः उन्होंने हरिद्वार जाने की इच्छा प्रकट की। रामकली देवी ने चन्दौसी से अपने भाई मदनलाल और आंवले के दूसरे मौहल्ले से नन्दोई तुलाराम को बुला लिया। दूसरे दिन लाला बुद्धसेन को हरिद्वार ले गए। भीम गोण्डा पर एक कमरा किराए पर मिल गया। दो वर्ष के विष्णु को रामकली अपने साथ ले आई थीं। तीन वर्ष के राकेश, छः वर्ष के राजेन्द्र तथा तीन बड़ी लड़कियों को ननद कृपा देवी की देख-रेख में आंवले ही छोड़ दिया गया। दो दिन बाद मदनलाल और तुलाराम भी उन लोंगो को हरिद्वार छोड़कर वापस आ गए।

हरिद्वार में लाला बुद्धसेन को मानसिक शांति मिल रही थी। रामकली गंगा किनारे स्नान-ध्यान और भगवान की पूजा-अर्चना करके लालाजी की सेवा में लगी

रहती। बीच-बीच में जगह-जगह से नाते-रिश्तेदार देखने आते रहते थे। यों ही छः महीने गुजर गए। रामकली देवी पति को खुश देखकर आंवले में रह रही कच्ची गृहस्थी की चिन्ता भूल जाती थी। पर उनकी यह खुशी स्थायी नहीं रहीं। एक दिन वह विष्णु को गोद में लिए गंगा में स्नान कर रही थीं कि वह हाथ छूट गया और भंवर में फंस गया। रामकली देवी असहाय सी चिल्लाने लगीं। इसी समय एक चमत्कार हुआ। कहीं से एक साधु ने आकर विष्णु को भंवर से निकाल दिया और रामकली देवी के हाथों में सौंपकर अन्तर्ध्यान हो गए कि देवी अब तुझ पर कोई बड़ा संकट आने वाला है। रामकली देवी विष्णु को सीने से चिपकाए कमरे में आ गई। लालाजी को ठीक-ठाक देखकर उन्हें शांति मिली।

अचानक रात को बारह बजे भंयकर तूफान आया। रामकली देवी खुद कहती है कि ऐसा भंयकर तूफान उन्होंने कभी नहीं देखा था। इस तूफान ने उनका सुहाग छीन लिया था। उनके प्राण निकलते ही तूफान थम गया था। मृतदेह को खाट से उतारने के लिए रामकली देवी का साथ देने वाला कोई नहीं था। फिर चमत्कार हुआ। वही साधू लालाजी की मृतदेह को खाट से उतरवा कर अन्तर्ध्यान हो गए। कम पढ़ी-लिखी रामकली देवी ने रात में ही हरिद्वार स्टेशन से आंवले और चन्दौसी खबर कराई। रातभर वह पति की मृतकाया के पास विष्णु को सीने से चिपकाए आंसू बहाती रहीं। दूसरे दिन पतित पावनी गंगा के किनारे लालाजी का दाह संस्कार करके सब लोग आंवले आ गए। रामकली देवी दिल पर पत्थर रखकर अपने अथक प्रयासों से कच्ची गृहस्थी को पालने में लग गई। जमींदारी चली गई थीं। बॉण्ड्स और किराए की आमदनी का सहारा था। पति का ध्यान उन्हें हिम्मत देता था। जब उन्हें पता चला कि पति ने आंवले में ही उनके मोहल्ले में पुनर्जन्म लिया है तो स्वाभाविक रूप से बहुत खुश हुई। सारा परिवार उस बच्चे के रूप में लालाजी को बार-बार देखना चाहता था। बद्रीप्रसाद के परिवार में जन्में महेश भी पूर्वजन्म के घर जाने के लिए मचलता रहता था। उस छोटे महेश के अन्दर तो लालाजी बुद्धसेन की आत्मा विद्यमान थी, जो हर पल अपने परिजनों के बीच आने को उत्सुक रहती थी। एक बार वह बालक बहुत जिद करके अपने पूर्वजन्म के घर आ गया। उसने राजो, सियादुलारी, कमलेश, सभी लड़कियों को नाम से पुकारा। कृपा बहन और तुलाराम बहनोई को भी पहचान लिया। अपने से भी बड़े बच्चों राजेन्द्र, राकेश और विष्णु को वह ऐसे देख रहा था जैसे पिता अपने बच्चों को प्यार करना चाह रहा हो। लालाजी जब हरिद्वार गए थे तो ऊपर का कमरा बन रहा था, महेश ने उसके विषय में भी पूछा जैसे कोई बड़ा बुजुर्ग कार्य की जानकारी ले

रहा हो। महेश ने रामकली देवी से जमींदारी बॉण्ड्स के बारे में भी पूछा। लालाजी की मृत्यु से कुछ साल पहले ही दो दुकानें किराए पर दी थीं। महेश ने उन किराएदारों के बारे में भी जानकारी ली।

महेश अपने पूर्वजन्म के घर पर ही रहना चाह रहा था, पर उसके इस जन्म के घर वाले उसे जबरदस्ती ले गए। उसके बार-बार रोने-धोने पर उसे उसकी नानी के घर भेज दिया गया। उन्हें डर लगने लगा कि कहीं महेश अपने पूर्वजन्म के घर पर ही न चला जाए। मोहल्ले वाले भी उसमें रूचि लेने लगे थे।

जब महेश तीन-चार वर्ष बाद नानी के यहाँ से लौटकर आया तो वह सब कुछ भूल चूका था। इस जन्म के संस्कारों ने उसकी पूर्वजन्म की याद को मिटा दिया था। अब महेश हलवाई की दुकान चलाता है।

19. मिस्र के अन्तिम फराहो कालीकरेट्स का पुनर्जन्म

जाने-माने परामनोवैज्ञानिक तथा पुनर्जन्म पर खोजकर्ता डॉ. हेमेन्द्रनाथ बैनर्जी ने अपनी पुस्तक द वन्स एण्ड फ्यूचर लाइफ में एक ऐसे व्यक्ति "ऐलन ली" के सोलह पूर्वजन्मों के विचित्र विवरणों के सम्बन्ध में जानकरी दी है, जो सम्मोहन की तन्द्रावस्था में हजारों वर्ष पूर्व के समय में पहुंच गया और कालीकरेट्स फराहो के रूप में व्यतीत हुई जीवन पुनः जीने लगा।

ऐलन ली के पिता माइकेल लैवी की जब मृत्यु हुई तो ऐलन बहुत छोटा था। कुछ समय पश्चात् ऐलन की माँ ने गोल्ड वर्ग से दूसरी शादी कर ली और श्रीमती माइकेल लैवी, श्रीमती सांडरा गोल्ड वर्ग बन गई।

समय बीतता गया और ऐलन की माँ ऐलन के बड़े भाई शैल्डन लैवी को साथ लेकर फिलाडेल्फिया में रहने लगी।

सांडरा तथा शैल्डन को ऐलन की बचपन की बातें स्पष्ट रूप से याद है जबकि वह केवल चार वर्ष का था। वह क्या-क्या किया करता था तथा क्या-क्या बोला करता था, डॉ. हेमेन्द्रनाथ बैनर्जी के साथ एक साक्षात्कार के दौरान उन्होंने सब बताया।

ऐलन ली बचपन में अपने मित्रों के साथ मिलकर एक खेल खेला करता था जिसे 'आदिवासी तथा चरवाहे' का खेल कहा जाता था, इस खेल को खेलते हुए जब ऐलन के मित्र अपने काम में मस्त हो जाते तो ऐलन अपने सिर पर एक बड़ा सा तौलिया बांध लेता था, जो ठीक उसी प्रकार का लगने लगता, जैसे मिस्त्र के फराहो अपने सिर पर ताज पहना करते थे और बिस्तर पर बिछाने वाली चद्दर अपने कंधों पर टांग लेता जो चलने में उसके पीछे-पीछे जमीन पर घिसटती

चलती। कपड़े टांगने के हैंगर को सीधा करके वह दो सलाइयां सी बना लेता और अपनी छाती के सामने उन्हें क्रास बनाकर पकड़ लेता। अपनी माँ के गहने उठा लाता और उन्हें अपने हाथों, बाजुओं व गले और सिर पर सजा लेता। इस तरह अपने को सजा-सवार कर सीधी अपनी गर्दन को गर्व से ऊंचा करके घोषणा करता, "मैं फराहो कालीरेट्स हूँ" और फिर अपने मित्रों, साथियों को फराहो के अंदाज में ही हुक्म देने लगता।

तब वह केवल चार वर्ष का था, ऐलन की माँ का कहना है कि कितनी दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि उस समय हम यह नहीं जानते थे कि वह अपने पूर्वजन्मों की स्मृतियों को तथा उन क्षणों को दोहरा रहा है। शैल्डन ऐलन के बड़े भाई ने कहा कि उस समय, आज से तीस वर्ष पहले पूर्वजन्म, पुर्नजन्म की बातों को अमेरिका में अंधविश्वास तथा कपोल-कल्पित समझा जाता था। परन्तु आज तो परामनोवैज्ञानिक के सतत प्रयास से अमेरिका की सत्तर प्रतिशत जनता पुर्नजन्म पर विश्वास करती है। ऐलन के बचपन के विचित्र व्यवहार तथा उसके अनुभव उसके सोलह पूर्वजन्म की स्मृतियों तथा दावों को विश्वसनीयता प्रदान करते हैं। परामनोवैज्ञानिक तथा सम्मोहन द्वारा चिकित्सा करने में सुप्रसिद्ध इरविंग मारडैस द्वारा ऐलन को सम्मोहित किया गया।

ऐलन ने सम्मोहन की तन्द्रावस्था में पहले भी अपने पूर्वजन्मों के संबंध में विवरण दिए थे। ऐलन के साथ एक विचित्र बात यह थी कि वह अन्य व्यक्तियों की तरह सम्मोहित होकर एक ही स्थान पर लेटे-लेटे अपने स्मृतियों के विवरण नहीं बोलता था बल्कि वह सम्मोहित होकर तन्द्रावस्था में उठ खड़ा होता और जिस युग के तथा जिस व्यक्ति के रूप में अपने पूर्वजन्म का विवरण देता उसके चेहरे पर वैसे ही हाव-भाव तथा वह उसी समय की भाषा भी बोलने लगता। चाहे वह मिस्र की भाषा हो अथवा रोम की अथवा इटली की। स्पष्ट है कि ये भाषाएं उसने अपने इस जीवन में नहीं सीखी थी। जो इस बात का प्रमाण हैं कि व्यतीत हुए समय को दुबारा जीने लगता था। इतिहास कहता है कि आरटैक्सारस ऑफ पैरशिया ने युद्ध में जब मिस्र पर विजय प्राप्त करके मिस्त्र पर अपना अधिकार जमा लिया तो उस समय फराहो का तीसवां और आखरी राजवंश मिस्र पर राज्य कर रहा था और उस वंशज का नाम था, 'कालीकरेट्स'। ऐलन ने जब तन्द्रावस्था में अपने पूर्वजन्म का विवरण देना प्रांरभ किया—जब वह कालीरेट्स था, तो उसने न केवल यह दावा ही किया बल्कि उस समय की भाषा भी बोलनी शुरू कर दी तथा तन्द्रावस्था में जबकि उसकी दोनों आंखें बंद थी। इसी प्राचीन भाषा में चित्र बनाकर बीजाक्षर (हायरोग्लिफ्स)

भी लिखे जो उनके पूर्वजन्म में फराहो होने को प्रमाणित करते हैं क्योंकि इस जीवन में अमेरिकन होते हुए उसके पास कोई ऐसा अवसर नहीं था कि वह अन्य प्राचीन भाषाओं के साथ मिस्र की इतनी प्राचीन भाषा सीख पाता।

तन्द्रावस्था में अपने पूर्वजन्म में कालीकरेट्स होने के दावे तथा विवरण के अनुसार उसने मिस्र पर केवल दो वर्ष तक राज्य किया था, परन्तु इतिहासकार तथा पुरातत्ववेत्ता मिस्र के अंतिम फराहो का नाम 'नैक्टानेवो द्वितीय' बताते हैं। परन्तु जब ऐलन ने अपने को कालीकरेट्स तथा फराहो बताया तो इन तथ्यों की सत्यता जानने के लिए इस पर और गहराई से खोज की गई और जो कुछ खोज से पता चला वह ऐलन के दावे को और भी प्रमाणित करता है। पता चला कि जब मिस्र पर पैरशिया ने आक्रमण किया, उस समय तथा उसके पश्चात् के दो वर्ष के समय में नैक्टोनेवो द्वितीय का जिक्र नहीं है क्योंकि वह उस आक्रमण में मारा गया था। हो सकता है कि उन दो वर्षो का जिक्र ऐलन करता हो और वह उस समय मिस्त्र पर राज्य करता रहा हो। इस विवरण के अनुसार कालीकरेट्स ही अन्तिम फराहो था और अपनी तन्द्रावस्था में ऐलन फराहो की तरह ही भाषा तथा व्यवहार करता है। अपनी गर्दन अभिमान से ऊँची कर के चलता है और कुछ बोलते हुए बीच में टोके जाने पर गुस्सा हो जाता है व टोकने वाले को बड़े क्रोध भरे लहजे में कहता है, 'थाइस'। थाइस मिस्र की बहुत प्राचीन भाषा का शब्द है जिस का अर्थ होता है, 'खामोश'। सम्मोहन की तन्द्रावस्था में जब ऐलन अपने पूर्वजन्म में कालीकरेट्स होने का विवरण बयान कर रहा था तो उसे अपने राज्य की सीमाओं के बारे में बताने का सुझाव दिया गया। तन्द्रावस्था में ऐलन की आंखें बंद थीं। वह बंद आँखों के साथ एक टांग पर दूसरी टांग रखकर बैठ गया। उसके हाथ में नक्शा बनाने के लिए कलम दी गई जिसे उसने इस प्रकार बांए हाथ में पकड़ा जैसे पेंट करने वाले ब्रुश को पकड़ते हैं और फिर उसने अपने राज्य की सीमाओं को अंकित कर दिया। मिस्र पर खोज करने वालों (इजिप्टोलौजिस्ट) को उस समय आश्चर्य का ठिकाना न रहा जबकि कालीकरेट्स के समय मिस्र की सीमाओं का विवरण इतिहास में दिए गए विवरण से बिल्कुल मेल खाता था।

ऐलन के दावे को कुछ लोग यह कहकर झुठलाने की कोशिश करते हैं कि संभव है कि ऐलन ने कालीकरेट्स के संबंध में किसी पुस्तक या इतिहास में पढ़ा हो और तन्द्रावस्था में उसे अपनी कल्पना में जीता हो। इसमें कोई दो राय नहीं कि ऐसा होना संभव है परन्तु ऐलन के मामले में ऐसा नहीं है क्योंकि ऐलन केवल उस समय घटनाओं का विवरण ही नहीं देता बल्कि उस समय की भाषा भी लिखता

भी है जो कि इस जीवन में वर्तमान में नहीं सिखी जा सकती और जिस कुशलता से वह प्राचीन भाषा बोलता है, उससे यही प्रमाणित होता है कि वास्तव में कालीकरेट्स के रूप में इस धरती पर जन्म लेकर जी चुका है। डॉ. हेमेन्द्रनाथ बैनर्जी लिखते है कि ऐलन के पूर्वजन्मों पर अन्य कई जाने-माने परामनोवैज्ञानिकों ने भी खोज कार्य किया। मैरी लैड विश्वविद्यालय की मनोविज्ञान की शाखा के निर्देशक डॉ. जैम्ज डौयल तो ऐलन पर किए गए सम्मोहन के कई प्रयोगों के समक्ष स्वयं उपस्थित थे, उनका मानना है कि ऐलन जब तन्द्रावस्था में अपने किसी पूर्वजन्म के व्यतीत हुए समय को पुनः जीता है तो वह वही व्यक्ति लगता है। फिर वह उस समय ऐलन ही नहीं होता। उसके हाव-भाव, उसकी भाषा, यहाँ तक की उसकी मानसिक व शारीरिक शक्ति सभी कुछ बदल जाती है। बाल्टीमोर के एटोरनी जनरल विलियम कपूर, जिन्होंने ऐलन के मामले में अत्यधिक रूची ली तथा तथ्यों की सत्यता जानने के लिए सम्मोहन के प्रयोगों के समक्ष स्वयं उपस्थित रहे, का कहना है कि मैं उस समय सबसे अधिक आश्चर्यचकित हुआ जब ऐलन ने अपने आंखें बंद होते हुए भी मिस्र की प्राचीन भाषा में बीजाक्षरों के चित्र बनाए।

इस दृश्य को स्वयं देखते हुए मैं अपनी आँखों पर विश्वास न कर सका।

डॉ. सैसिल रंडर ने भी इसे प्रमाणित किया कि सम्मोहन के समय उसने स्वयं ऐलन को कई अन्य भाषाएं बोलते हुए सुना है जिसे वह किसी प्रकार भी सीख नहीं सकता।

तन्द्रावस्था के ऐलन ने अपने पूर्वजन्मों के राज को खोला है जिनमें से कालीकरेट्स के रूप में पूर्वजन्म से संबंधित सभी तथ्य इतिहासकारों तथा पुरातत्ववेत्ताओं व मिस्र पर खोज करने वालों ने प्रमाणित किया हैं।।

20. एक अमर प्रेम कथा का आधा पुनर्जन्म

लंदन में जन्मी डोरोथी ने तीन हजार वर्ष पूर्व मिस्र में बैन्ट्रीशी के रूप में हुए अपने पूर्वजन्म की स्मृति का दावा मिस्र में अपना सारा जीवन व्यतीत कर सिद्ध कर दिखाया।

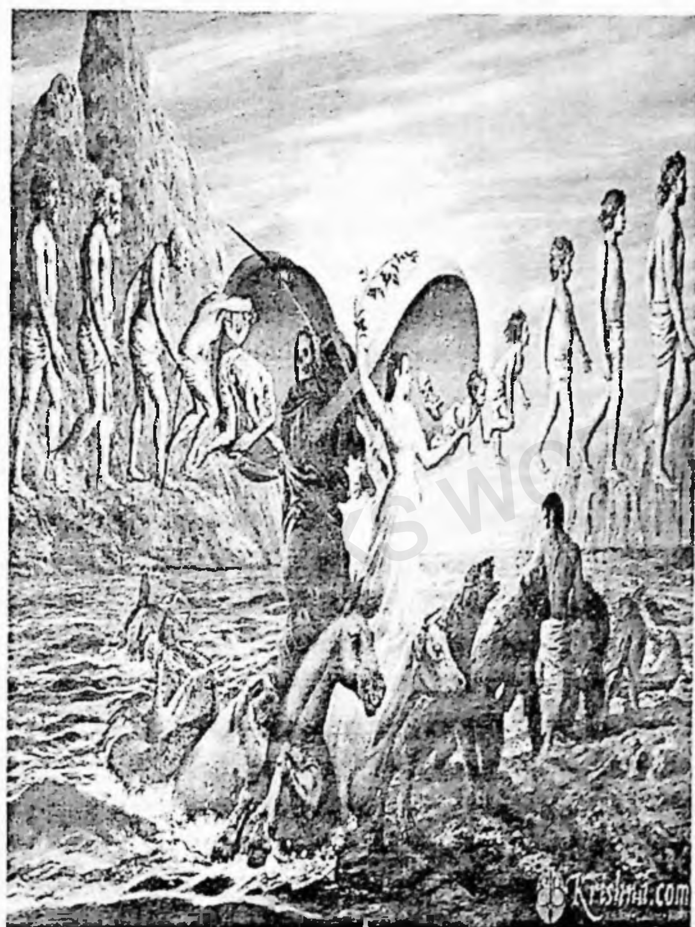
पुनर्जन्म पर शोधकर्ता 'जोनाथन कौंट' ने डौरोथी लोउजे इड़ी के पूरे जीवन का गहन अध्ययन तथा परीक्षण करने के पश्चात् 'द सर्च फॉर होमसिटी' नाम से एक पुस्तक प्रकाशित की है, जिसमें डोरोथी के पूर्वजन्म तथा इस जन्म में तीन वर्ष की आयु में मृत्यु तथा पुनः जीवित होने से लेकर पूरा जीवन एविडौस मिस्र में विताने तथा उसकी वहीं मृत्यु तक का विवरण है। 16 जनवरी, 1904 में डोरोथी लाउजे इडी का जन्म हुआ। सन् 1097 में जब वह केवल तीन वर्ष की थी, 'ब्लैक हीथ' लंदन के स्लम इलाके में बने तीन मंजिला मकान की सीढ़ियों से नीचे गिर गई। ऊपर की मंजिल से जब डोरोथी की माँ 'कैरोलिन इडी' ने अपनी बेटी को गिरते देखा तो उसका दिल धक से रह गया। हौंसला कर गिरती हुई बच्ची के पीछे-पीछे वदहवास सी वह नीचे फर्श पर पहुंची, जहाँ उसकी बच्ची अचेतावस्था में औंधी पड़ी थी। विक्षिप्त की भांति माँ ने उसे गोद में उठाया और डॉक्टर को बुलाने के लिए चिल्लाई, डॉक्टर ने स्टेथस्कोप से पूरा मुआयना किया उसके मुंह के सामने शीशा रखा और एक पंखा लेकर उसके मुंह पर फिराया और मायूस होते हुए बच्ची की आंखें हाथ से बंद कर दी और उसे मृत घोषित कर दिया। डोरोथी की अचानक इस प्रकार हुई मृत्यु की सूचना उसके पिता को भेजी गई। श्रीमान् 'रियूबैन इडी' पेशे से दर्जी थे और उस समय अपनी दुकान पर थे और यह सुनते ही उन्होंने अपनी माँ तथा बहन को सूचना भिजवाई तथा तीनों घर पहुंचे, जहाँ चीख-पुकार मची हुई थी। डॉक्टर

यह कहकर चला गया था कि वह लाश को पोंछने का कार्य करने के लिए एक नर्स को साथ लेकर अभी लौटेगा और फिर जिस प्रकार दुर्घटना के कारण डोरोथी की तत्काल मृत्यु हुई है उसका एक मृत्यु प्रमाण पत्र (डेथ सर्टिफिकेट) बना देगा। तब तक लाश को सोने के कमरे में लिटा दिया जाए।

कुछ समय पश्चात् डॉक्टर तथा नर्स मृत्यु प्रमाण पत्र लिए हुए वापिस पहुंचे तथा सीधा सोने के कमरे में चले गए। परन्तु अब उन्हें वहाँ मृत डोरोथी दिखाई नहीं दी और न ही रोने-धोने की आवाजें सुनाई दीं बल्कि बिस्तर पर एक खूबसूरत बालों वाली छोटी सी लड़की, जिसका मुंह चॉकलेट से भरा हुआ था, बैठी थी और खिलखिला कर हंस रही थी। डोरोथी को इस प्रकार देखकर डॉक्टर अवाक् रह गया। उसके मुंह से कोई शब्द नहीं निकल रहा था, हाथ में पकड़ा हुआ प्रमाण पत्र उसने फाड़कर फेंक दिया और श्रीमान इडी से क्षमा माँगने लगा कि उसने सूक्ष्म रूप से पूरी तरह निरीक्षण करने के पश्चात् ही मृत्यु की घोषणा की थी। यह अवश्य ही कोई चमत्कार है। बच्ची के माथे पर घाव का ताजा निशान अब भी चमक रहा था मृत्यु की घोषणा के कारण जो दुःख परिवार को सहना पड़ा था। उसके लिए श्रीमान इडी डॉक्टर से नाराज थे, परन्तु स्वयं भी वह पहेली समझ नहीं पा रहे थे कि बीस मिनट तक हृदय गति रूकी रही और डोरोथी मृतक के समान फर्श पर पड़ी रही तो पुनः जीवित कैसे हो गई? इस दुर्घटना के पश्चात् डोरोथी धीरे-धीरे सामान्य होती गई परन्तु उसे एक विचित्र सा स्वप्न लगातार सताने लगा जिसके कारण वह कुछ व्याकुल सी रहने लगी। स्वप्न में उसे विशाल मीनारों वाला एक भवन दिखाई देता, जिसके आगे फूल और फलों से लदा एक हरा-भरा उद्यान जिसके चारों ओर फैले ऊंचे-ऊंचे पेड़ उसे दिखाई देते।

अपने इस विचित्र स्वप्नों के संबंध में डोरोथी ने अपने माता-पिता को बताया। अक्सर उसके माता-पिता डोरोथी को कभी अपने कमरे अथवा कभी खाने की मेज (डाइनिंग टेबल) के नीचे बैठकर रोता हुआ पाते, जिनका उन्हें कोई स्पष्ट कारण समझ में न आता और जब उसके पिता उससे रोने का कारण पूछते तो वह एक ही उत्तर देती, 'मैं अपने घर जाना चाहती हूँ।'

माँ उसे झिड़क देती, 'पागल मत बनो। यही तो तेरा घर है? और कौन सा घर है तेरा। परन्तु माँ के लाख समझाने-बुझाने, डांटने पर भी डोरोथी का रोना बंद न होता और न ही अपने घर जाने की रट बंद होती। परन्तु जब उसे यह विश्वास हो जाता कि वह अपनी बात किसी को भी समझा नहीं पा रही तो धीरे-धीरे उसका रोना-धोना भी बंद हो जाता। कुछ महीने तो इस प्रकार बीत गए फिर उसके माँ-बाप ने उसे चिढ़ाना शुरू कर दिया। वह समय-समय पर उससे पूछते'—


Krishna.com

'डोरोथी तेरा घर कहाँ हैं?'

वह बड़ी संजीदगी से उत्तर देती......।

"मैं नहीं जानती। परन्तु, मैं अपने घर जाना चाहती हूँ।" डोरोथी अब चार वर्ष की हो चुकी थी। उनके यहाँ डोरोथी की मौसी अपनी छुट्टियां बिताने आई हुई थीं। एक दिन रियुबेन इडी ने कार्यक्रम बनाया कि क्यों न वह अपनी पत्नी और साली को ब्रिटिश म्यूजियम दिखा लाए? वह चाहते थे कि अपने साथ अपनी उदास तथा चिड़चिड़ी बेटी डोरोथी को भी ले जाए, क्योंकि इससे पहले जब वह उसे अकेला छोड़कर कहीं जाते थे तो डोरोथी के साथ कोई न कोई दुर्घटना घट जाती थी। चाहे वह कुछ समय के लिए ही अकेली क्यों न रही हो। उन्होंने डोरोथी को अपने साथ ले जाना ही उचित समझा। इस प्रकार परिवार अपनी उदास बेटी को अजायबघर (म्यूजियम) में एक विभाग से दूसरे विभाग में घुमाते रहे और घूमते-घूमते वारी आई मिस्र के विभाग की (इजपिशियन गैलेरीज)। 'डोरोथी' अचानक अपने माँ-बाप का हाथ छुड़ाकर पागलों की तरह सब कमरों में दौड़-दौड़ कर जहाँ तक पहुंच सकती थी, उसने सब बुतों के पांव चूमे। अब उसके चेहरे पर अत्यन्त प्रसन्नता तथा प्रफुल्लता की चमक नजर आने लगी थी। उसके पिता ने उसे जबरदस्ती पकड़ा और शान्त किया।

इस विभाग के ऊपर की मंजिल पर थी मिस्र के इतिहास से संबंधित एक और गैलरी। जब पूरा परिवार उसे देखने ऊपर पहुँचा तो एक बार फिर डोरोथी माँ-बाप से अलग हो गई और दौड़ती हुई शीशे के केस में बंद एक 'ममी' के पास पहुंच गई। शीशे में बंद ममी को पहले तो वह निहारती रही और फिर फर्श पर उसके पास ही बैठ गई। माँ-बाप ने जब उसे देखा तो वह उसे और आगे चलने को कहने लगे, परन्तु वह वहाँ से टस से मस नहीं होना चाहती थी। डोरोथी के पिता ने यह सोचकर कि शायद चलते-चलते यह बहुत थक गई है उसे वहाँ कुछ देर के लिए छोड़ शेष म्यूजियम देखने आगे बढ़ गए। लगभग आधे घंटे पश्चात लौट कर उन्होंने ममी वाले कमरे में डोरोथी को आवाज दी और उसे घर चलने को कहा परन्तु उन आवाजों को सुना-अनसुना करके डोरोथी वहीं बैठी रही।

पिता ने कहा, 'डोरोथी' अब हमें घर चलना चाहिए, बहुत देर हो चुकी है। परन्तु डोरोथी तो अपने ध्यान में इतनी मग्न थी कि जैसे उसे कुछ सुनाई न दिया हो। श्रीमती इडी ने जब झुककर जबरदस्ती उसे फर्श से उठाना चाहा तो डोरोथी ने शीशे के केस का एक कोना पकड़ लिया और विचित्र सी आवाज में बोली—

"मुझे यहीं छोड़ दो, यह सब मेरे अपने लोग हैं।"

यह आवाज निश्चय ही डोरोथी की नहीं थी। भय से कांपते हुए श्रीमती इडी ने उसका हाथ छोड़ दिया और फिर उसके पिता ने बड़ी कठिनाई से जबरदस्ती वहाँ से उठाया और घर लेकर आए।

इस घटना के कुछ ही महीनों पश्चात् एक दिन रियूबैन इडी एक पुस्तकों की दुकान के सामने से गुजर रहे थे कि अचानक उनकी नजर खिड़की में प्रदर्शित की गई एक पुस्तक पर पड़ी। यह पुस्तक 'आर्थर मी' द्वारा संकलित की गई, बच्चों की एन्साइक्लोपीड़िया थी जो कई भागों में प्रकाशित हुई थी और इस पुस्तक के कुछ महत्वपूर्ण पृष्ठ खिड़की में नजर आ रहे थे। यह सोचकर कि अब डोरोथी कुछ बड़ी हो गई है, इस संकलन का कुछ हिस्सा उसे भेंट स्वरूप देने के लिए अच्छा रहेगा। वह इसे पाकर अति प्रसन्न होगी। अतः उन्होंने एक भाग खरीद लिया और डोरोथी को भेंट कर दिया।

संयोग की बात थीं कि पुस्तक का जो भाग उन्होंने खरीदा उसमें मिस्र के प्राचीन इतिहास से संबंधित बहुत से चित्र थे और डोरोथी की नजर ज्यों ही उन चित्रों पर पड़ी, वह समझ गई वह चित्र तो उसके पूर्वजन्म के घर के हैं।

फिर कई सप्ताह तक इडी परिवार के यहाँ जब भी कोई आता डोरोथी मिस्त्र से संबंधित पृष्ठ उठाकर उसके पास ले जाती और पृष्ठ उसे हाथ में थमा कर मिस्र के बारे में पढ़कर सुनाने की प्रार्थना करती क्योंकि वह स्वयं अभी पूरी तरह से पढ़ न पाती थी। उसकी माँ कैरोलिन इडी डोरोथी की इस आदत से इतनी परेशान हो चुकी थी कि एक दिन उन्होंने डोरोथी से कहा, "यदि तुम स्वयं इस पुस्तक को पढ़कर समझना चाहती हो तो मैं तुम्हें पढ़ना सिखाऊंगी। छोटे बच्चे जल्दी लिखना-पढ़ना सीख जाते हैं।"

श्रीमती कैरोलीन इडी यह नहीं समझ पाती थी कि डोरोथी इस पुस्तक के एक विशेष पृष्ठ को 'मैग्नीफरइड ग्लास' (आतशी शीशे) की सहायता से क्यों देखती रहती है? ऐसा क्या है जो वह पढ़ना चाहती हैं? उस पृष्ठ पर मिस्र के एक प्राचीन शिलालेख का चित्र छपा हुआ था, जिसकी लिखावट वह समझने की कोशिश करती रहती थी। (मिस्र की प्राचीन तीन भाषाओं में लिखा गया यह शिलालेख अब 'ब्रिटिश म्यूजियम' में पड़ा है।) तीन हजार वर्ष पुरानी मिस्र भाषा परन्तु डोरोथी से श्रीमती इडी ने यही कहा कि अब वह इतना तो सीख ही चुकी है कि कुछ-कुछ शब्द वह पढ़कर समझ सकती है।

डोरोथी उस समय पुस्तक में से अपना प्रिय पृष्ठ निकाल कर फर्श पर लेटे हुए। मैग्नीफाइड ग्लास (आतिशी शीशे) से उसे पढ़ने की कोशिश कर रही थी कि उसकी माँ ने उसे पुनः कहा, "ऐसा क्या है जो तुम्हें यह सोचने पर मजबूर करता है कि कभी तुम इसे पढ़ पाओगी, जबकि यह ऐसी भाषा में लिखा है जिसे तुम जानती तक नहीं।"

डोरोथी ने एक बहुत ही गहन तथा विचारशील व्यक्ति की तरह उत्तर दिया। मैं यह भाषा भली प्रकार जानती हूँ, बस कुछ-कुछ भूल गई हूँ। अगर मैं इसकी नकल कर सकूं तो इसे याद कर लूंगी।

डोरोथी अब पूरे सात वर्ष की हो चुकी थी। अब उसे अपने पूर्वजन्म की घटनाएं तथा अपना घर स्पष्टतया स्मरण हो आया था। तीन वर्ष की आयु में घटित घटना के पश्चात से जो स्वप्न वह प्रत्येक रात देखती आई थी। ऊँची मीनारों वाला वह भवन तथा उसके सामने बना वह उद्यान ऊंचे-ऊंचे पेड़ अब उसे इन सबका रहस्य समझ आ गया था। हुआ यों कि एक दिन श्रीमान इडी अपने काम से घर लौटने के समय अपने साथ पुरानी पत्रिकाएं लाए। खाली समय में फर्श पर औंधे लेट कर डोरोथी अपना मन बहलाने के लिए उन पत्रिकाओं के पन्ने उलटने-पुलटने लगी कि अचानक एक भवन का चित्र देखकर हतप्रभ रह गई जिसके नीचे लिखा था,

"ऐविडास में प्रथम सैटी का मंदिर।"

"द टैम्पल औफ सैटी द फर्स्ट ऐट एविडोस।"

उसे यह चित्र देखकर ऐसा अनुभव हुआ जैसे वह सांस नहीं ले पाएगी और पत्रिका को दोनों हाथों में भींचकर अपने पिता के पास भागी और वह पृष्ठ जिस पर चित्र छपा था अपने पिता की आँखों के सामने जोर-जोर से झुलाकर चिल्लाई।

"यही मेरा घर है। यही मेरा घर है। यही वह जगह है जहाँ मैं पिछले जन्म में रहती थी और फिर थोड़ी और एकाग्रता से चित्र को देखते हुए बड़े दुःख के साथ बोली, परन्तु यह इतना टूटा-फूटा क्यों है और इसके सामने बना उद्यान कहाँ गया?"

डोरोथी का पिता अपनी बेटी का उत्साह तथा उसकी बातें सुन-सुनकर अब थक चुके थे। अब डोरोथी अपने पूर्वजन्म के संबंध में जब भी कोई बात करती थी तो वह उसे अनसुना कर देते थे। परन्तु आज वह चित्र देखकर उसकी बात को अनसुना नहीं कर पाए क्योंकि चित्र में जो भवन था, उसका विवरण डोरोथी अपने स्वप्नों में देखे गए भवन के रूप में कई बार कर चुकी थी। और यह चित्र उस विवरण से मिलता-जुलता था, परन्तु फिर भी प्रत्यक्षतः उन्होंने डोरोथी से कहा—

"झूठी वातें वनाना बुरी वात है डोरोथी। तुम अच्छी तरह से जानती हो कि तुम इस स्थान पर कभी नहीं गई, यह एक पुरानी इमारत का चित्र है। शायद हजारों वर्ष पुरानी........, यह टूटा-फूटा है क्योंकि यह बहुत पुराना है और इसके सामने का उद्यान अब नहीं है क्योंकि यह भवन रेगिस्तान में है और रेगिस्तान में पेड़ व उद्यान नहीं उगते। वहाँ केवल रेत ही रेत होती है सो अव और झूठ नहीं। अव जाकर सो जाओ।"

डोरोथी के पिता ने डोरोथी को समझाने के लिए यह सब कह तो दिया परन्तु अपने भीतर वह समझ गए थे कि पिछले चार वर्षों से डोरोथी इस भवन को अपने स्वप्नों में देखती आई है।

पूर्वजन्म के अपने घर का चित्र पाकर डोरोथी उसी चित्र को निहारती रहती और न जाने किन विचारों में खो जाती कि कुछ दिन कुछ और पत्रिकाएं देखते हुए उसकी नजर मिस्र की सुरक्षित 'ममियों' के चित्रों पर पड़ी। देखते-देखते वह एक 'ममी के चित्र पर स्थित हो गई। असाधारण रूप से जीवित दिखाई देने वाली तथा सुरक्षित रखी गई यह ममी फराओं के उन्नीसवें साम्राज्य के प्रथम सैटी की 'ममी' थी। इस चित्र को देखकर एक बार फिर डोरोथी अपने आपे से बाहर हो गई और अपने पिता को वह चित्र दिखाने के लिए भागी और इस वार उसने कसम खाते हुए कहा कि वह चित्र के इस आदमी को जानती है क्योंकि वह एक भला और ईमानदार आदमी था।'

रियूबैन इडी अपनी वेटी की इन वातों से तंग आ चुके थे, परन्तु वह यह भी जानते थे कि उसकी बातों में सच्चाई है क्योंकि यह बच्ची किसी तरह से भी यह नहीं जान सकती थी कि जिस "ममी का यह चित्र है वह एक फराहों था जो तीन हजार वर्ष पूर्व मिस्र पर राज्य करता था और भला आदमी था और उसका नाम सैटी था। केवल चित्र को देखकर यह विवरण कैसे जाना जा सकता है जबकि उसके नीचे कुछ लिखा ही नहीं। श्रीमान इडी डोरोथी को हैरान होकर देख रहे थे, परन्तु प्रत्यक्षतः उन्होंने फिर डोरोथी से यही कहा कि यह सब झूठ है और झूठी कहानियां गढ़ना बंद करो।"

अपने पिता की यह बात सुनकर डोरोथी का दिल टूट गया।

डोरोथी का घर तो कहीं था..... इस घर में जन्म लेकर वह स्वयं को अजनबी सा महसूस करती थी। पूर्वजन्म के अपने घर की तस्वीर पाकर उसका मन और व्याकुल हो उठा था, तीन हजार वर्ष से बिछुड़े अपने प्रेमी फराहों सैटी ने स्वप्न में

उसे जो कुछ कहा था। उसके परिणामस्वरूप अपने पूर्वजन्म की सभी घटनाएं उसे स्मरण हो गई।

बैन्ट्रीशी कौन थी उसका सैटी से क्या संबंध था? इतिहास भी उस संबंध का गवाह है व पुनर्जन्म अवधारणा का यह प्रमाण है कि लंदन में जन्मी डोरोथी ने इन्हीं स्मृतियों के कारण अपना पूरा जीवन मिस्र में व्यतीत किया व वहीं उसकी मृत्यु हुई।

मिस्र में रहते हुए उसे सब 'ओम सैटी' के नाम से ही जानने लगे, बैन्ट्रीशी के रूप में पूर्व की घटनाएं अत्यन्त मर्मस्पर्शी तथा विचित्र थीं।

मिस्र का प्राचीन पवित्र शहर ऐविडौस रेगिस्तान में बसा यह शहर जहाँ की रेत नाइल नदी के पानी से घुल कर आती है और तांबे सी चमकती है। इसी के बीचोंबीच था। सफेद पत्थर का बना एक विशाल मंदिर जिसके भिन्न-भिन्न खण्ड मिस्र के प्राचीन देवताओं की मूर्तियों से सुसज्जित थे व भवन के पश्चिमी भाग के बाहर एक विशाल उद्यान, जिसके ऊंचे-ऊंचे पेड़ों की हरियाली की छाया भवन को ठंडक देती थी।

इसी उद्यान के बीचोंबीच कमल के फूल की आकृति का एक छोटा सा तालाब और तालाब के चारों ओर यासमीन के फूलों की सुन्दर क्यारियां......।

तीन हजार वर्ष हमें एक सुहानी सुबह नीली आँखों व सुनहरी बालों वाली चौदह वर्षीय एक बाला जिसका नाम बैन्ट्रीशी था, चहल-कदमी करते हुए फूल तोड़ रही थी और हल्के-हल्के कोई गीत गुनगुना रही थी। हुआ यूं कि उसी दिन उस विशाल मंदिर का निर्माण करवाने वाला 'फराहों सैटी प्रथम ऐवीडौस आने वाला था। ऐवीडौस में भी वह एक और विशाल मकबरे का निर्माण करवा रहा था, जहाँ उसकी मृत्यु के बाद उसकी आत्मा विश्राम करेगी। मंदिर की विशाल सम्पत्ति तथा मकबरे का निर्माण कार्य देखने के लिए वह ऐविडौस में आ चुका था। अपने कर्मचारी तथा मंदिर के पुजारियों के साथ ज्यों ही वह उद्यान से गुजरा कि उसके कानों में बैन्ट्रीशी द्वारा गुनगुनाने की मधुर आवाज पड़ी।

बैन्ट्रीशी को जब उद्यान में बहुत से व्यक्तियों की चलने की आवाज सुनाई दी तो फूलों से लदी झाड़ियों में छिपकर वह अपनी ओर आते हुए सैटी व उसके कर्मचारियों को देखने लगी। 'सैटी' के बिल्कुल पास आने पर उसे सम्मान देने के लिए वह झुकी, परन्तु भोलेपन से फिर अकड़कर सीधी खड़ी हो गई। फराहो सैटी को उसका भोलापन भला लगा और मुस्कुराते हुए उसने बैन्ट्रीशी को बुलाया। बैन्ट्रीशी

फराओ के सामने आकर पुनः झुकी। फराहो ने उसे पुनः उसी प्रकार खड़ा हो जाने को कहा और वड़े प्यार से उसका नाम पूछा, "मेरा नाम बैन्ट्रीशी है महाराज।"

सैटी : तुम्हें बैन्ट्रीशी शव्द का अर्थ मालूम है?

बैल्ट्रीशी : हाँ, खुशियों की वीणा।

सैटी : क्या तुम मुझे जानती हो? मैं कौन हूँ?

बैन्ट्रीशी : 'निसोउ-वैटी-मैं-मात-रा' महाराज यही आपका पूरा नाम है।

सैटी : तुम्हारे माता-पिता कौन हैं?

बैन्ट्रीशी : मैं एक अनाथ लड़की हूँ, मेरी माँ यहाँ सब्जी वेचा करती थी। मेरे पिता सेना में सिपाही हैं और इस वक्त वो 'वासित' में हैं।

सैटी : और तुम यहाँ इस वक्त क्या कर रही हो?

बैन्ट्रीशी : मैं लेडी आइसिस के मन्दिर की देवदासी हूँ, मंदिर के सबसे वड़े पुजारी 'ऐनटेफ' की देखरेख में मैं अध्ययन कर रही हूँ ताकि एक पवित्र नाटक में अभिनय कर सकूं जिसमें 'ओएसिस' के जन्म-मृत्यु तथा पुनर्जीवन को दर्शाया जाना है।

इस संक्षिप्त वार्तालाप के पश्चात् कुछ समय चुप्पी छायी रही। सैटी उस वाला की ओर टकटकी लगाकर न जाने क्या देखता रहा? उसकी नीली आंखें शेप लोगों से भिन्न थीं क्योंकि बैन्ट्रीशी के पूर्वज मिस्र में 'ऐचाइन' से आए थे और वहाँ वस गए थे।

लोग इन्हें समुद्री मानव कहते थे, जो यूनान से आए थे उनके सुनहरी वाल तथा नीली आंखे हुआ करती थीं।

बैन्ट्रीशी फराहो सैटी की आँखों में देखने का साहस नहीं कर पा रही थी, परन्तु इस बात का उसे अहसास हो गया था कि सैटी पचास वर्ष की आयु में भी सुन्दर है। यद्यपि सैटी उसे चुभने वाली निगाहों से देख रहा था परन्तु वह उन निगाहों की ओर आकर्पित होती जा रही थी। इस प्रथम मिलन के पश्चात् वैन्ट्रीशी ने सैटी को दूर से कई बार देखा। सैटी उद्यान में बने कमल जैसे तालाव की मुंडेर पर आकर बैठ जाता और बैन्ट्रीशी उसे दूर से देखकर अपने फूल चुनने के काम में लग जाती।

एक शाम इसी प्रकार सैटी तालाव की मुंडेर पर अकेला बैठा था। वैन्ट्रीशी को फूल चुनते और गुनगुनाते देख अपने पास बुलाया और उसे पास बैठने को कहा।

जब वह निःसंकोच उसके पास बैठ गई तो सैटी ने बड़े प्यार से वैन्ट्रीशी का हाथ अपने हाथ में ले लिया। कुछ समय खामोशी छाई रही। बैन्ट्रीशी की निगाहों में घबराहट साफ दिखाई दे रही थी। सैटी ने जब यह महसूस किया तो अचानक

बैन्ट्रीशी को वहाँ से चले जाने को कहा। तुम यहाँ से भागो, भाग जाओ और फिर इस तरफ मत आना।

बैन्ट्रीशी वहाँ से भागी, परन्तु अधिक दूरी तक नहीं भाग पाई, उद्यान के एक और तक पहुंचकर उसने मुड़कर देखा और सैटी को वहाँ बैठे पाया। सैटी दोनों हाथों में अपना सिर झुकाए बैठा था। वह मुड़ी और पुनः दौड़कर सैटी के पास पहुंच गई। सैटी 'ऐविडौस' से वापिस लौटने में तरह-तरह के कारण से देरी करने लगा और इतने दिन बैन्ट्रीशी तथा सैटी उद्यान में प्रतिदिन मिलने लगे और यही उन्होंने मिस्र की एक कहावत के अनुसार बिना पकी मुर्गी खाई।

मिस्र की यह कहावत यहाँ इसलिए युक्तियुक्त है क्योंकि बैन्ट्रीशी का सम्बन्ध अब केवल मंदिर से था वह आजीवन मंदिर की सेवा के लिए बाध्य थी और बाहरी किसी भी व्यक्ति को उसे छूने का कोई अधिकार नहीं था।

यदि बैन्ट्रीशी परित्यकता, विधवा अथवा मुक्त स्त्री होती तो बात दूसरी थी। सैटी के साथ अनुचित सम्बन्ध को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता परन्तु बैन्ट्रीशी तो मंदिर की अविवाहित देवदासी थी और यह सम्बन्ध मिस्र के धर्म के अनुसार एक भयानक अपराध था, जिसे क्षमा नहीं किया जा सकता था।

मंदिर के प्रधान अधिकारी 'ऐन्टेफ' अपने मंदिर की देवदासियों तथा कर्मचारियों पर कड़ी नजर रखते थे। जब किसी ने आकर ऐनटेफ को सूचना दी कि बैन्ट्रीशी माँ बनने वाली है तो बैन्ट्रीशी को पकड़ लिया गया और उसे ओसीरिस के मकबरे के नीचे बने तहखाने में ले जाया गया जो सैटी के मंदिर के पीछे बना हुआ था और बैन्ट्रीशी पर दबाव डाला गया कि अपना जुर्म कबूल कर ले। पहले तो बैन्ट्रीशी ने ऐन्टेफ के प्रश्नों का उत्तर देने से इंकार कर दिया परन्तु जब उसे कहा गया वह ओसिरिस की मूर्ति पर हाथ रखकर कसम खाए कि उसे कुछ नहीं मालूम तो बैन्ट्रीशी झूठ नहीं बोल पाई और फिर चिल्ला कर बोली,

हाँ, हाँ मेरा एक प्रेमी भी है।

परन्तु लाख जुल्म सहने पर भी बैन्ट्रीशी ने सैटी का नाम नहीं लिया।

यही वह समय था कि सैटी को ऐविडौस छोड़कर अचानक 'नूबिया' जाना पड़ा, क्योंकि वहाँ पर सोने की खानों में मजदूरों का झगड़ा हो गया था और सैटी का वहाँ पहुंचना बहुत जरूरी था। उसने जाते हुए बैन्ट्रीशी से कहा कि वह वापिस जरूर आएगा और फिर वह उसी के साथ लंबे अरसे तक रहेगा, परन्तु कुछ ही दिनों बाद घटनाएं तेजी से घटने लगी और पासा ही पलट गया। जिस पानी के जहाज पर सैटी

वापस लौट रहा था उस जहाज का कहीं पता न था, यह समझा गया कि सैटी जहाज के साथ समुद्र में डूब गया।

कुछ दिनों पश्चात् ऐन्टेफ ने वैन्ट्रीशी को पुनः बुलवा भेजा और अब की बार जबकि सैटी के मरने की खबर फैल चुकी थी, वैन्ट्रीशी ने कबूल कर लिया कि उसका प्रेमी सैटी ही था।

ऐन्टेफ ने अपना फैसला सुनाया कि बैन्ट्रीशी का गुनाह सजा के काबिल है जो मौत से कम नहीं हो सकती।

परन्तु मिस्र में तब यह कानून था कि किसी को मृत्यु की सजा नहीं हो सकती, जब तक उस पर पूरी तरह से मुकदमा न चलाया जाए और यदि मुकदमा चलाया जाता तो सैटी के प्रेम का रहस्य उजागर हो जाता। वैन्ट्रीशी ने अपने गुनाह को गहनता से समझा और सैटी जिससे वह प्यार करती थी, उसका नाम वह अपना जीवन पाने के लिए उजागर करना चाहती थी। इसलिए उसने अपना जीवन स्वयं ही समाप्त कर लिया। परन्तु जब कुछ समय व्यतीत हो जाने पर सैटी जीता-जागता ऐबिडौस लौट आया और जब उसे वैन्ट्रीशी के आत्महत्या करने की सूचना मिली तो उसका दिल टूट गया। उसने कहा–"मैं बैन्ट्रीशी को कभी नहीं भूलूंगा और जन्मों-जन्मों तक उसके मिलने की प्रतीक्षा करूंगा।" यही तीव्र इच्छाएं आत्मा को मृत्यु के पश्चात् भटकने पर बाध्य करती है। डोरोथी (ओम सैटी) की गुप्त डायरी के पन्नों से उसके स्वप्नों के रहस्य खुलते हैं, जिसमें सैटी के साथ जो बातें स्वप्नों में हुई लिखी हुई है। तीन हजार वर्ष पश्चात् वैन्ट्रीशी ने पुनः जन्म लिया तो उसे अपना पूर्वजन्म याद था।

चौदह वर्ष की होने के पश्चात् डोरोथी मिस्र के एक निवासी इमाम एवडेल मैगुइड के साथ मिस्र आ गई जहाँ उसे पुरातत्व विभाग में नौकरी मिली और बहुत समय पश्चात् उसे ऐबिडौस में सैटी के मंदिर भेज दिया गया जहाँ सारा जीवन रहकर उसने गाइड के रूप में कार्य किया तथा वहाँ के निवासियों के सुख-दुःख में साथ दिया और अंत में पूर्वजन्म के 'अपने घर' में रहते हुए उसकी मृत्यु हो गई। अब न जाने अगले कौन से जन्म में वह सैटी ने पुनः मिल पाएगी और दोनों आत्माओं को अनन्त शान्ति मिलेगी। डोरोथी (ओम सेटी) की गुप्त डायरी का एक पृष्ठ जिसमें अपने स्वप्न में सैटी के मिलने का जिक्र है–

हिज मैजेस्टी कल आधी रात के पश्चात् एक बजे आए मैं अभी जाग रही थी। मैंने अपने कमरे की बत्ती बुझा दी, परन्तु सो नहीं पाई यद्यपि स्वयं को थका-थका

महसूस कर रही थी। सैटी मेरे पास ही लेट गए और मुझे अपनी बाहों में समेटते हुए बोले, 'बैन्ट्रीशी' मुझे तुम्हारे पास आना ही पड़ा तुम से दूर रहना मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। उन्होंने मुझे प्यार करना शुरू किया ही था कि मैंने विषय बदलते हुए कहा, 'यूअर मैजेस्टी' क्या आप मुझे दोबारा तीन हजार वर्षो के लिए खो देना चाहते हैं। कुछ देर चुप्पी छाई रही, मैंने ही दोबारा पूछा, "मुझे बताओ आप मेरे पास किस रास्ते से आए हो?" कुछ देर सोच कर तथा एक लंबी सांस लेने के बाद उन्होंने कहा—"तुम बहुत बुद्धिमान हो और मैं एक बुरा आदमी। तुमसे मिलने की और तुममें खो जाने की मेरी इस लालसा को पूरा होने दो, भले ही हमारी आने वाली खुशियां हमसे हमेशा के लिए छिन जाएं। मुझे क्षमा करना। मैं तुमसे इतना प्यार करता हूँ कि स्वयं को रोक नहीं सकता.............. बैन्ट्रीशी।'

मैंने दबी आवाज में उत्तर दिया, "क्षमा करने के लिए आपने कोई अपराध नहीं किया। आपका प्यार मेरे लिए बहुमूल्य है, हमें बुद्धिमता से काम लेना चाहिए और उचित समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए।" वह उठकर खड़े हो गए और मुझे कुर्सियों की ओर ले गए फिर हम साथ बैठे।

मैंने उनसे कहा, "मैं एक प्रश्न पूछना चाहती हूँ।" परन्तु यदि उसका उत्तर ऐसा हो जो मुझे नहीं जानना चाहिए तो मुझे क्षमा करें और भूल जाएं कि मैंने यह प्रश्न पूछा था। इस पर वह कहने लगे नहीं बैन्ट्रीशी निःसंकोच पूछो। क्या आपको अपनी मृत्यु का समय याद है? कैसे हुई थी आपकी मृत्यु?

उन्होंने आश्चर्य मिश्रित दृष्टि से मुझे देखा और कहा, "क्या तुम्हें अपनी मृत्यु का अनुभव याद नहीं।" मैंने हाँ में सिर हिलाया और वह कहने लगे, "मैं सुनाता हूँ तुम्हे। बड़ी ही विलक्षण अनुभूति थी वह जैसे कि तुम्हारी आत्मा सूक्ष्म शरीर (आंख) को पांच तत्वों से बने भौतिक शरीर से मुक्ति मिली हो, परन्तु विचार तथा अनुभूतियां तो वैसे की वैसी ही रह गई। परन्तु शंका के कारण अथवा भय के कारण, अपने शरीर से पृथक होने के पश्चात् भी मैंने यह आशा करने की इच्छा की कि तुम मेरे वापिस लौटने की प्रतीक्षा कर रही होगी और फिर अचानक मुझे अपने किए हुए पाप का स्मरण हो आया, कितना गंभीर अपराध किया था मैंने? कुछ क्षणों के लिए मैंने अपने आसपास पृथ्वी में जिए जीवन जैसा वातावरण अनुभव किया—मैंने अपने मृत शरीर को देखा जो उसी कमरे में रखे किसी बिस्तर पर पड़ा था, जिसे तुम जानती हो। मैंने अपने मित्र को अपने मृत शरीर के पास रोते हुए देखा अपने पुत्र 'रेमेसिस' को फर्श पर पड़े देखा जो रोते-रोते बेहोश हो चुका था और अपने कर्मचारियों को देखा जो रो रहे थे और बार-बार एक ही रट लगाए हुए थे कि मैं उन्हें छोड़कर न जाऊं। यह

वड़ा भयानक तथा दिल को दहला देने वाला दृश्य था, बैन्ट्रीशी। तुम अपनी दुनिया के लोगों को समझाओं कि वह मृत्यु की आत्मा को रोककर कष्ट न पहुँचाया करें, अगर वह वास्तव में प्यार करते हैं तो? मेरी वेटी भी कुछ देर के लिए रोई और मेरी महारानी जिसकी खूबसूरत आंखें मेरी मृत्यु पर सूखी थी और चट्टान की तरह खामोश व गुमसुम थी। अन्तिम विदाई के समय उसने मेरे माथे को चूमा और फिर अचानक वह दृश्य मेरे सामने से धुंधला होता चला गया और मैंने स्वयं को सितारों के बीच आसमान में पाया।"

तुम्हें अच्छी प्रकार से समझ लेना चाहिए कि जब मैं सूक्ष्म लोक में पहुंचा तो तुम्हें प्राप्त न कर पाने के गम में डूबकर पागल हो गया था। मैंने सोचा था, मैं तुम्हें पा लूंगा, मैं तुम्हें ढूंढ लूंगा, परन्तु ऐसा न हुआ। मैंने तुम्हें वहुत खोजा, वहुत पूछा, परन्तु कोई फायदा नहीं। मुझे एक ही उत्तर मिला, वो जिसे तुम खोज रहे हो, यहाँ भी नहीं है और पृथ्वी पर भी नहीं है। जव मैंने और पूछताछ की तो पता चला कि तुम सूक्ष्म लोक में आई थी और पुनर्जन्म लेने के लिए दोवारा पृथ्वी पर चली गई।

मेरे यह पूछने पर कि उन्हें कव पता चला कि मैंने दोवारा जन्म लिया है और कव लिया है? तो वह कहने लगे, "अनेक युगों तक तुम्हारी जुदाई का दुःख भोगने के बाद समय का पता ही नहीं चला। हजारों वर्षों बाद लार्ड ओसिरिस ने मुझ पर दया की और एक सभा वुलाई और फिर मुझे वताया गया कि तुम अंधकार भरे लोक में गहन निद्रा में हो, परन्तु समय निकट आ रहा है जव तुम पुनर्जन्म लेकर पैदा होने वाली हो, इससे मुझे राहत मिली..........।"

कुछ अरसे बाद मुझे वताया गया कि तुम पृथ्वी पर जन्म ले चुकी हो, वैसी ही सुन्दरता लिए जैसे तुम तीन हजार वर्ष पहले थी वैसी ही। फिर तुम्हें पृथ्वी पर खोजने की अनुमति मिली, तुम्हें खोजने के लिए मैं पूरी दुनिया में भटकता रहा और इस खोज के दौरान मैंने अनेक विचित्र चीजें तथा आश्चर्यजनक दृश्य भी देखे और अन्त में मैंने तुम्हें खोज निकाला। तुम छोटी थी, केवल तीन वर्ष की और उसके बाद क्या हुआ यह तो तुम जानती ही हो।

21. इरावदी नदी के उस पार

पुनर्जन्म की यह सनसनीपूर्ण घटना जब प्रकाश में आयी थी तो सुनकर सभी स्तब्ध हो उठे थे। इस कथा का नायक एक अंग्रेज़ सैनिक था। उसका जन्म 1889 में हुआ था। वह बचपन के दिनों से ही नींद में बड़बड़ाता रहता था। यूं नींद में, सोते समय या फिर स्वप्न की अवस्था में ऐसा देखा जाता है कि कुछ लोग बड़बड़ाया करते हैं, परन्तु उसका क्रियाकलाप इस सामान्य बात से भिन्न था। क्योंकि वह अंग्रेज़ परिवार में जन्मा था और बर्मी भाषा बोलता था जिससे उसके वर्तमान जीवन का दूर-दूर तक कोई संबंध नहीं था और यहीं विचित्र बात थी।

खैर! यह बालक बड़ा हुआ और 1907 में उसने सेना में सर्विस कर ली। दो वर्ष बाद जब उसकी उम्र सिर्फ बीस वर्ष थी, उसका स्थानांतरण हुआ और वह बर्मा (अब म्यांमार) आ गया। इस नयी जगह में जहाँ वह पहली बार आया था, उसे प्रतीत होता था मानो समूचे परिवेश से उसका गहरा नाता रहा हो, पर समृतियों में बार-बार झांकने पर भी वह किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सका। उसने लगातार प्रयास किया और एक-एक चीज़ को गौर से देखा तो लगा कि यहाँ का सब कुछ उसका देखा-भाला है, यह वर्षों तक यहाँ रहा है। इरावदी नदी को देखने के पश्चात् तो उसका सारा संशय जाता रहा।

आखिरकार उसने अपने उच्च्य सैनिक अधिकारी लांस कार्पोरल कैरीगन को एक दिन यूं ही बताया, "सर! मैं बर्मा कभी नहीं आया, परन्तु जाने क्यों मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं यहाँ हमेशा रहा हूँ? बचपन से बर्मी भाषा स्वयमेव मेरे कंठ से फूटती रही है जबकि मेरे घर-परिवार में बर्मी कोई नहीं जानता। मैं यहाँ आकर खुद चकित हूँ। मुझे यहाँ के जर्रे-जर्रे का पता है, ऐसी बात बार-बार मेरे मन में आती है।"

"यदि ऐसा है तो बताओ कि इरावदी के उस पार क्या है?"



अंग्रेज़ सैनिक ने तत्काल उत्तर दिया, "सर! इरावदी के उस पार एक भव्य देवालय है और उसकी छत से नींव तक दीवार में एक लंबी दरार है। उस देवालय में इस दरार के पास ही एक बहुत बड़ा घंटा बंधा है।"

लांस कार्पोरल कैरीगन को अपने उस सैनिक की यह सारी बातें सचमुच वड़ी विचित्र प्रतीत हुई थीं। वह सामान्य रूप से ऐसी विचित्र बातों को, जिसे लोग पुनर्जन्म माना करते थे, स्वीकार करने को तैयार नहीं था। उसने सैनिक की बातों की सच्चाई जानने का खुद निश्चय किया और एक दिन इरावदी के उस पार जहाँ सैनिक ने देवालय तथा उससे संबंधित बातों का खुलासा किया था, वह सैनिक अधिकारी जा पहुँचा। सचमुच वह सैनिक द्वारा बतायी गयी एक-एक बात की सच्चाई को अपनी आँखों से देखकर देर तक विस्मय में डूबा रहा, चमत्कृत रहा फिर बुदबुदा उठा, "तुमने एक सत्य को उजागर किया है। सचमुच तुम अपने पूर्वजन्म में यहाँ रहे हो और उसकी समृतियां आज भी ताजी हैं। निश्चय ही यह तुम्हारा पुनर्जन्म है।"

22. टीवी स्टार लूसली बाल का पुनर्जन्म

इधर पिछले दिनों पुनर्जन्म के जो मामले आये हैं, उनमें सबसे अधिक आश्चर्यजनक और रहस्यमय घटना टीवी स्टार लूसली वाल के कथित पुनर्जन्म की है। अपनी माँ की कोख से जन्म लेते ही एक बच्ची ने यह बताकर डॉक्टरों और नर्सो को स्तब्ध कर दिया कि वह लूसली वाल है और फिर से जन्म लिया है।

लम्वे समय तक चलने वाले टीवी सीरियल 'आई लव लूसी' के कुछ रोचक प्रसंगों को सुनाकर बच्ची ने सभी को अचम्भे में डाल दिया। विश्वविख्यात परामनोवैज्ञानिक शोधकर्ता डॉ. चार्ल्स फ्लेचर ने इस अद्‌भुत बच्ची के बारे में अपनी राय जाहिर करते हुए बताया है,"मुझे पूर्ण विश्वास है कि लूसली बाल की आत्मा इस बच्ची में निवास कर रही है। बच्ची न सिर्फ लूसली के टीवी प्रदर्शनों के रोचक प्रंसगों को दोहराने में ही सक्षम है, बल्कि लूसली की जिन्दगी की ऐसी अंतरंग बातें भी बताती है, जिन्हें लूसली के सिवा कोई और नहीं जान सकता। एक नवजात शिशु के मुंह से यह सब सुनकर अचम्भा ही होता है।"

झबराले लाल बालोंवाली बच्ची के माता-पिता ने उसका नाम लूसी ही रख दिया है।

प्रसव कराने वाले डॉ. वारेन हार्टन को बच्ची की पहचान को लेकर किसी प्रकार का कोई भ्रम नहीं है। लेकिन उसके लाल वालों को देखकर आश्चर्य अवश्य है। वे बताते है माँ के गर्भ से पूरी तरह बाहर निकलने से पहले ही बच्ची ने आंखे खोली और मुझे देखा। उसने किलकारी मारी और बोली, "आप लोग आंखें फाड़कर क्या देख रहे हैं? यह तो मैं हूँ—लूसी।"

प्रसूति-कक्ष में छायी आश्चर्यजनक खामोशी उस समय भंग हो गयी, जब बच्ची ने चुटकुले सुनाना शुरू किया और स्वयं हंसी से लोट-पोट होने लगी।

यह सब देखकर बच्ची की माँ सिंथिया को जबरदस्त झटका लगा और वह बेहोश हो गयी। जब डॉ. हार्टन सिंथिया को होश में लाने का प्रयत्न कर रहे थे, तो बच्ची की ओर से सबका ध्यान हट जाने के कारण वह झुझंला उठी और चिल्लाने लगी। उसने लूसी के लहजे में कहा, "वाहहह!"

होश में आने और स्वस्थचित होने के बाद सिंथिया अपनी बच्ची के साथ घर लौटी। उनका घर वाल्वरहैम्पटन, इंग्लैण्ड के बाहरी इलाके में है। फिर तो आये दिन मनोवैज्ञानिकों, परमनोवैज्ञानिकों और लूसली के प्रशंसकों की अपार भीड़ बच्ची को घेरने लगी।

पिता जेम्स का अपनी बच्ची के सम्बन्ध में कहना है, "मेरी बच्ची खटोले में लेटे-लेटे ही टी.वी. के साथ-साथ लूसी की पंक्तियों को दोहराती रहती है। वह सुर-ताल में जरा भी भूल नहीं करती। जब लोगों का जमघट उसके आसपास नहीं रहता, तो वह चिड़चिड़ी हो उठती है।"

अपने पूर्वजन्म के सम्बन्ध में यह रहस्यमयी बच्ची भविष्य में क्या-क्या आश्चर्यजनक बातें बताएगी, यह आनेवाला समय ही बता पाएगा।

23. पुनर्जन्म की एक सत्य घटना

हलेना गाँव। दोपहर के दो-ढाई बजे एक तीन-चार साल का बालक भल्लू एक ट्रक के पीछे भागने लगा। जब ट्रक आँखों से ओझल हो गया, तो वह उसी तरफ देखता खड़ा रह गया जिधर ट्रक गया था। भल्लू के पिता सिकंदर ने उसे भागते देख डांटकर पूछा, "ट्रक के पीछे क्यों भाग रहा था?"

"यह मेरा ट्रक था, जो भाग गया," भल्लू ने कहा।

"यह क्या बकवास करता है कि ट्रक तेरा था," सिकंदर ने डांटा। इस पर भल्लू ने और दृढ़ता से कहा, "वह ट्रक मेरा था। मैं खेडली बड़ागाँव का सेठ माँगीलाल हूँ।" सिंकदर ने सोचा कि लड़के को कुछ हो गया है। लेकिन इसके बाद कोई विशेष बात नहीं हुई। कुछ समय बाद उसने इस बात को दोहराया और यह भी बताया कि उसके छह लड़के और एक लड़की है, पत्नी है, नाती-नातिनें हैं। खेडली गाँव में उसकी कपड़ें की दुकान है, मकान है, धर्मशाला है।

माँ-बाप ने उसकी इन बातों पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया बल्कि वे इस तरह की बातें सुनने के आदी हो गये। वैसे, उसकी बातें गाँववालों के लिए कौतुहल का विषय बन गयी।

गाँव के बाल विधालय के व्यवस्थापक राजाराम ने भल्लू की बातों में रूचि ली और उसके बताये पते पर खेडली गाँव के एक व्यापारी रामजीलाल बद्रीप्रसाद को पत्र लिखा। पत्र में सारी घटना का जिक्र करते हुए उन्होनें आग्रह किया कि वह सेठ माँगीलाल के बारे में जानकारी दें व माँगीलाल के घरवालों को भी इस बात की सूचना दें।

पत्र खेडली गाँव में पहुँचा और यह जानकारी सेठ माँगीलाल के पुत्रों को मिली। सेठ माँगीलाल को मरे लगभग पांच साल हो चुके थे। सेठजी के घर परिवार के बारे में भल्लू ने जो बातें बतायी थी, वे सब सच थी। अतः सेठजी के दूसरे नंबर के पुत्र

ओमप्रकाश गुप्ता, जो एम.ए.,एल.एल.बी. है और जयपुर में आयुर्वेद विभाग में निर्देशक है, रमेश को लेकर भल्लू को देखने उसके गाँव हलेना पहुंचे। भल्लू के घर पर अच्छी-खासी भीड़ इकट्ठी हो गयी। एक बुजुर्ग आदमी ने भल्लू से कहा कि "तू बार-बार अपने छह लड़कों की बात करता है, क्या तू अपने लड़के को पहचान सकता है? "भल्लू ने उस भीड़ में से हर एक को देखने के बाद ओमप्रकाश गुप्ता को हाथ लगाकर कहा, "यह मेरा बेटा प्रकाश है।"

दूसरे दिन ओमप्रकाश भल्लू को उसके पिता सिकंदर के साथ लेकर खेडली गाँव वापस लौटे। भल्लू ने वे सारी बातें, जगहें व व्यक्तियों की पहचान बतायी, जिन्हें सेठ माँगीलाल ही जानते थे। इन सब से इस बात में कतई शक नहीं रहा कि सेठ माँगीलाल ने ही भल्लू के रूप में पुनर्जन्म लिया है।

एक बार भल्लू जयपुर में मिला। जयपुर में भल्लू अपने पुत्र सुरेशचंद्र गुप्त एडवोकेट के यहाँ सीकर हाउस में ठहरा हुआ था। उस समय भल्लू चाय के साथ रोटी खा रहा था। रोटी खाने के बाद उसने रोटी की तश्तरी और चाय का प्याला अपने आप धोकर रख दिया। सुरेशचंद्र की पत्नी ने बताया कि मेरे श्वसुर स्व. सेठ माँगीलाल भी खाना खाकर खुद ही इसी तरह बरतन धोकर रखा करते थे।

इस मामले में और गहरी खोजबीन के लिए ओमप्रकाश गुप्ता भल्लू को लेकर उसके गाँव खेड़ली गये। खेड़ली जाने के लिए जयपुर-आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग पर 120 किलोमीटर दूर महुंआ (सवाई माधोपुर जिले की तहसील) नामक स्थान पर उतरना पड़ता है, फिर वहाँ से 20 किलोमीटर की दूरी पर गाँव है खेड़ली।

खेड़ली में बस से उतरते ही सामने एक भवन को दिखाते हुए भल्लू ने कहा, "यह मेरी धर्मशाला है" और फिर उसके अंदर की तरफ इशारा करते हुए बताया, "वह मेरी छतरी है।"

धर्मशाला से आगे की ओर बढ़ने पर, रास्ते में एक नवनिर्मित मकान को दिखाकर ओमप्रकाश ने भल्लू से पूछा, "यह किसका मकान है?" जिसका भल्लू कोई उतर नहीं दे सका, क्योंकि मकान सेठ जी की मृत्यु के बाद ही बना था।

घर जाकर अकेले में भल्लू से बातचीत कर, छोटी से छोटी और सालों साल पुरानी ऐसी-ऐसी बातें और ब्यौरे पूछे गये, जिनके उसने जो जवाब दिये वे पुष्टि करने पर सही निकले। सेठ जी के दूसरे मकान पर भी ले जाया गया। वहाँ एक वृद्धा आयी और उसके आते ही चाय पीते-पीते जब भल्लू से पूछा, "यह कौन है?" तो भल्लू ने कहा, 'घरवाली'। फिर उसने उनका नाम और गाँव भी बतलाया। भल्लू ने उससे कहा "मुझे भी भूख लगी है।" उसने कहा, "ठहरो, पुड़ियां बन रही है," लेकिन उसने

जिद की और सुबह की बासी चपाती ही खाने लगा। इस पर उसने बतलाया कि सेठ जी भी कभी गरम रोटी का इंतजार नहीं करते थे, और ठंडी-बासी खाकर ही दुकान पर चले जाते थे।

इसके बाद भल्लू के गाँव हेलना जाया गया। हेलना के लिए पहले तो महुआ वापस लौटे, फिर वहाँ से राजमार्ग पर 50-60 किलोमीटर दूर स्थित हेलना गाँव पहुंचे। भल्लू के बाप का नाम सिकंदर और माँ का नाम लच्छो। सिकंदर गरीब मुसलमान रंगरेज हैं, जिसके चार बच्चे हैं। सिकंदर से बातचीत करते हुए पूछा गया कि भल्लू को नमाज पढ़ाने ले जाते हो या नहीं?

साहब, यह जाता ही नहीं। कहता है "मैं मुसलमान नहीं हूँ, बनिया हूँ। नमाज नहीं पढूंगा, इसलिए मैं भी नहीं ले जाता।"

"क्या इसका खतना करा दिया?"

उत्तर में सिकंदर ने कहा, "नहीं, क्योंकि यह अपने आपको सेठ माँगीलाल कहता है, गाँववाले भी इसे माँगीलाल का पुनर्जन्म मानते हैं और हम भी, इसलिए मैं इसका खतना नहीं करा पाया।"

"भल्लू को तुम प्रकाश के साथ क्यों भेज देते हो?" इस प्रश्न के उत्तर में सिकंदर ने कहा, "इनके प्रेम के कारण भेज देता हूँ। वैसे, बच्चा किसको प्यारा नहीं होता।"

जानकारी के अनुसार भल्लू खेड़ली गाँव दो बार गया है। एक बार वहाँ दो दिन रहा और दूसरी बार एक दिन। लेकिन इतने छोटे बच्चे को पूरा घटनाचक्र व ब्यौरा इस तरह कंठस्थ हो, अपने आप में रहस्यमयी है।

24. और उसे उसका वर्तमान याद नहीं आया

बात 1933 की है, खासी चर्चित एवं अलौकिक-सी प्रतीत होने वाली, सत्य एवं पुनर्जन्म की दास्तानों में मील के पत्थर सरीखी। घटना का केन्द्र स्थल था हंगरी। एक इंजीनियर के घर में उसने जन्म लिया था। उस समय वह मुश्किल से पंद्रहवें बसंत में थी और मृत्यु-शय्या पर पड़ी थी। सच में तो उस लड़की के प्राण-पखेरू उड़ गये थे और शय्या पर केवल मृत देह थी। घर-परिवार के लोग उसकी मौत को स्वीकार कर चुके थे और शायद अंतिम संस्कार का बंदोबस्त करने की सोच रहे थे।

परन्तु कुछ देर बाद उन सबने प्रतीत किया कि लड़की की मृत देह फिर से चेतना से जैसे परिपूर्ण हो गयी है। हठात उसने अपनी पलकें खोल दीं, अपने चारों ओर विचित्र दृष्टि से एक-एक चीज को देखा, फिर अपनी मातृभाषा हंगरी की जगह स्पेनी भाषा बोलने लगी। सब चकित थे, क्योंकि स्पेनी भाषा से उसका कभी कोई संबंध नहीं था। लोगों ने हस्तक्षेप किया तो और हैरत में पड़ गये। उसने दो टूक कहा, "आप सब कौन हैं?"

किसी ने कहा—"अरे, तुम अपने माता-पिता को नहीं पहचानती?"

"आप कैसी बातें कर रहें हैं,? यह लोग मेरे माता-पिता कैसे हो सकते हैं? मैं यह मानती हूँ कि आप सब दयालु लोग हैं, मेरे प्रति सहृदय हैं और अच्छा व्यवहार कर रहे हैं, परन्तु मैं वह नहीं हूँ जो आप सब समझ रहे हैं।"

"बेटी! आखिर तुम्हें हो क्या गया है? तुम हमें भूल गयीं।"

"आप नहीं मानते तो मैं खुद वताती हूँ।" लड़की ने कहा, "मेरा नाम सेनोरे ल्युसिड अल्टोरज डी सैलवियो है। मेरा घर मैड्रिड में है और मेरे पति कारीगर हैं, मैं उनके 14 वच्चों की माँ थी परन्तु....... ।"

"तुम यह सब क्या कह रही हो..... क्या अपने पूर्वजन्म......?"

"मैं पूर्वजन्म या पुनर्जन्म की नहीं अपने जीवन की वास्तविकता वता रही हूँ। उस समय मेरी उम्र यही कोई चालीस वर्ष थी और मैं वीमारी के दौर से गुजर रही थी, फिर मैंने कुछ दिन पूर्व प्रतीत किया था कि मैं मर रही हूँ, शायद मैं मर गयी थी पर अब फिर जी उठी हूँ। इस अनजान घर में, इस अनजान देश में इन अपरिचितों के वीच।"

"तो क्या तुम्हें अपना वर्तमान जीवन बिल्कुल विस्मृत हो गया है?"

"मैंने कहा न कि शायद मैं मरी नहीं थी उसका एहसास भर हुआ था या फिर मरते-मरते वच गयी थी। वस यह वात समझ में नही आ रही है कि मैड्रिड से यहाँ कैसे आ गयी?"

"और यही वात हम तुम्हें समझाना चाहते हैं कि तुम वह नहीं हो जो समझ रही हो। तुम यहीं जन्मी थी, यहीं हो.........., हाँ एक-दो क्षण तक नहीं कुछ देर तक मृत अवस्था में रही हो फिर देह में चेतना का संचार हो गया है।"

"आपकी वात मेरी समझ में नहीं आती। मैं सैलवियो थी और वही हूँ।"

लोगों ने वहुतेरा प्रयास किया पर उसे उसका वर्तमान याद नहीं आया।

25. टीटू पूर्व जन्म में सुरेश था

मार्च सन् 1990 युनाइटेड किगंडम में बी.सी.सी. चैनल पर "भारत में एक पुनर्जन्म पर बड़ी विचित्र फिल्म प्रदर्शित की गई...आगरा के सुरेश वर्मा का पुनर्जन्म आगरा से केवल 13 किलोमीटर दूर बसे गाँव 'बाद' में हुआ...। चालीस मिनट की इस फिल्म ने विदेशों में धूम मचा दी क्योंकि पुनर्जन्म की यह घटना अपने आप में पुनर्जन्म की अवधारणा का जीता जागता प्रमाण थी।

इस छोटी फिल्म में था टीटू सिंह एक छः वर्ष का बालक जो पूर्वजन्म में सुरेश वर्मा होने का दावा करता था और उसने पूर्वजन्म में अपनी हत्या तक की घटना पूरे विवरण के साथ बता दी थी...। टीटू सिंह के इस जन्म के माता-पिता व उसके पूर्वजन्म के माता-पिता, पत्नी और बच्चों के साक्षात्कार में को चित्रित किया गया था जिसे देखकर पुनर्जन्म को न मानने वाले भी पुनर्जन्म की इस घटना की सत्यता को नकार नहीं सके...।

टीटू सिंह का जब जन्म हुआ तो उसे सिर पर दो बड़े विचित्र निशान थे... यह निशान कुछ इस प्रकार थे कि जैसे किसी ने माथे की तरफ से लोहे का कोई सरिया डाला हो ओर सिर के पीछे निकाल लिया हो... ऐसे निशान जैसे इस प्रकार की घटना के बाद जख्म भर जाने पर हो जाते हैं...नवजात शिशु के सिर पर ऐसे निशान देखकर माता-पिता तथा अन्य देखने वालों को बहुत अचम्भा हुआ..., परन्तु बात आई गई हो गई..., बालक बड़ा होने लगा और उसके सिर पर बाल उगने भी शुरू हो गए...। जब कुछ बाल उग आये तो निशान नजर आने बन्द हो गये। माता-पिता उन निशानों को भूल गए... परन्तु बालक टीटू सिंह उन निशानों को नहीं भूला...क्योंकि पूर्वजन्म में उसकी हत्या की गई थी और यही निशान उसकी हत्या का कारण थे... वह जानता था और उसे पूरी तरह से अपनी हत्या और



मृत्यु की स्पष्ट स्मृति थी... कि उसे गोली मारकर खत्म किया गया था। गोली उसके भेजे के आर-पार हो गई थी...।

केवल सिर पर बने निशान ही टीटू सिंह के पुनर्जन्म का प्रमाण नहीं थे बल्कि उसे अपने पूर्वजन्म की एक-एक बात..., एक-एक घटना स्पष्ट याद थी... जब वह. .. सुरेश वर्मा था...। उसका कहना था कि वह टीटू सिंह नहीं हैं... वह सुरेश वर्मा है... उसे अपने पूर्वजन्म का नाम याद था...।

सिर पर के निशानों की बात जब भी सामने आती वह अपने पूर्वजन्म की बातें बताने लगता... उसका कहना था कि आगरा में उसकी रेडियो, टेलीविजन तथा वीडियों की दुकान थी...। वह उस दुकान का मालिक था...। उसकी शादी हुई थी और उसकी पत्नी बहुत ही सुन्दर थी जिसका नाम उमा था...। वह अपनी पत्नी से बहुत प्यार करता था... क्योंकि उसकी पत्नी ने दो पुत्रों को जन्म दिया था जिन्हें पाकर वह बहुत प्रसन्न हुआ था। रोनू और सोनू..., दोनों बच्चों को वह प्यार से इसी नाम से बुलाया करता था... और उसका हंसता खेलता परिवार था...।

टीटू सिंह अभी केवल अढ़ाई वर्ष का ही हुआ था कि उसने अपने पूर्वजन्म की बातें बतानी शुरू कर दी थी... और उसे सभी घटनाओं की स्पष्ट स्मृति थी और विशेष कर हत्या द्वारा अपनी मृत्यु की... वह बताता था कि किस प्रकार उसे मृत शरीर को आग में जलाया गया था और उसकी राख एक नदी में प्रवाहित कर दी गई थी। टीटू सिंह के पिता का कहना है कि प्रारंभ में जब टीटू सिंह ने इस प्रकार की बातें कहनी शुरू की तो हमने उसे सत्य नहीं माना था और उसे ऐसी बातें करने पर डांटते फटकारते भी रहते थे...।

परन्तु कुछ समय बाद ही हमें ऐसा अनुभव होना शुरू हो गया कि जैसे कि टीटू स्वयं को इस परिवार कि हिस्सा नहीं समझता और उसे जबरदस्ती हमारे साथ रहना पड़ रहा है क्योंकि वह हमारे यहाँ पैदा हो गया है....। यद्यपि टीटू अभी साधारण सामान्य ही बच्चा ही था परन्तु कभी-कभी वह ऐसी हरकतें करता था जैसे कि वह बच्चा न होकर एक पूर्ण समझदार व्यक्ति हो। टीटू की सारी बातों से पूरा परिवार दुःखी हो चुका था... और अन्त में परिवार ने यह फैसला लिया कि टीटू जिन बातों के दावे करता है और जिस सुरेश वर्मा की... रेडियो, टेलीविजन की दुकान की व पत्नी उमा की बातें करता है... आगरा जाकर पता लगाया जाए कि वास्तविकता क्या है?... हम लोग 'बाद' (एक छोटे गाँव का नाम) में रहते हैं और जो हमारे गाँव से 8 मील (13 किलोमीटर) की दूरी पर है... टीटू के बड़े भाई को यह सब पता लगाने के लिए आगरा भेजा गया। आगरा कोई छोटा सा शहर तो है नहीं... परन्तु

पूछते-पूछाते... व रेडियो और टेलिविजन की अन्य दुकानों से पूछताछ करते हुए एक दुकान का पता चला जिसका नाम था "सुरेश रेडियो"।

टीटू का भाई पता लगाते हुए "सुरेश रेडियो" तक पहुंच गया...एक पुराना-सा वड़ा वोर्ड लगा था जिस पर दुकान का नाम लिखा हुआ था...। दुकान के भीतर जाकर पता चला कि इस दुकान की मालकिन एक महिला है... जिसका नाम उमा है। 'उमा' से कुछ और पूछताछ की गई तो सत्य तथा तथ्य सामने आ गए जैसा कि टीटू बताता था... उमा विधवा थी और उसके मृत पति का नाम सुरेश वर्मा था जिसका पुनर्जन्म होने का दावा टीटू सिंह करता था। पूछने पर कि उसके पति की मृत्यु कैसे हुई, 'उमा' ने वताया उनकी मृत्यु नहीं वल्कि गोली मारकर हत्या की गई थी...।

उमा वही सव वता रही थी जिसे टीटू का भाई टीटू के मुंह से हजारों वार सुन चुका था... अव टीटू के भाई ने आगरा आकर दुकान की खोज व उमा से मिलने का मकसद वताया... तो उमा आश्चर्यचकित रह गई... क्या उसके मृत पति ने वास्तव में पुनर्जन्म लिया है...? यह समाचार पाकर उसे मन को एक अजीव धक्का सा लगा और वह गुमसुम होकर न जाने पूर्व की किन स्मृतियों में खो गई। कुछ मीठी कुछ कड़वी स्मृतियों-उस दिन जिस दिन उसके पति की हत्या की गई थी? उस दिन वह तमाम भयानक दृश्य उसकी आँखों के सामने नाचने लगे जव भी उसे उस भयानक दिन की याद आती थी तो वह इतनी भयभीत हो जाती थी कि उसका पूरा वदन कांपने लगता...। जिस दिन उसके पति की हत्या हुई थी..., अचानक उसे अपने पति की कार की आवाज सुनी थी... फिर एक ठक की आवाज हुई उसने समझा था कि शायद गाड़ी का पिछला हिस्सा किसी दीवार से टकरा गया है...। आवाज सुनकर वह वाहर निकली थी... वह कार के पास पहुंची परन्तु उसने देखा उसके पति कार के अन्दर ही थे वाहर नहीं निकले थे... और उसने ज्यों ही कार का दरवाजा खोला... तो उसके पति की लाश उस पर गिर पड़ी... खून से लथपथ... चीत्कार कर उठी वह... उसके पति की किसी ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। उसका पति अब किसी दूसरे शरीर में जन्म ले चुका है यह बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी और न ही वह इस बात पर विश्वास कर रही थी। टीटू के भाई से यह समाचार सुनकर वह हैरान अवश्य हुई और सोचने लगी कि उसे ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए? टीटू के भाई को लेकर वह अपने घर गई और वही वातें अपने सास-ससुर को वताई... सास-ससुर ने जब पुनर्जन्म का समाचार सुना तो वह भी आश्चर्यचकित रह गए और उनकी आँखों के सामने भी अपने वेटे की हत्या के दृश्य नाचने लगे, उनकी आँखों में आंसू थे...। उसके परिवार ने यह गुप्त फैसला किया कि वह... दूसरे

दिन टीटू के घर उसे गाँव आएंगे और स्वयं टीटू से मिलकर इस बात का पता लगाएंगे... यह बात टीटू के भाई को नहीं बताई। दूसरे दिन जब वर्मा परिवार टीटू के गाँव 'बाद' पहुँचा तो उस समय टीटू... घर के बाहर नहा रहा था... वर्मा परिवार ने क्योंकि टीटू को पहले कभी देखा न था इसलिए वह उसे पहचानते न थे और नहीं गाँव में कोई उन्हें जानता था... बल्कि वह गाँव ही उन्होंने पहली बार देखा था परन्तु टीटू वर्मा परिवार को देखकर चिल्ला उठा... और अन्दर घर में बताने के लिए... उसके दूसरे परिवार वाले उससे मिलने आए हैं... गाँव में जैसा कि रिवाज हैं—वर्मा परिवार का स्वागत किया गया... बाहर बरामदे में बिछी खाटों पर सभी को बिठाया गया... उमा उसके सास-ससुर दूर खड़े टीटू की ओर एक टक देख रहे थे और टीटू उनकी ओर देखकर खड़ा मुस्करा रहा था... शायद वह भी देखना चाहता था कि उमा उसे इस जन्म में पहचानती है या नहीं... अन्त में उसी ने उमा से बात की और पूछा कि क्या उसने उसे पहचाना है...? उसने ना में जवाब दिया... टीटू ने (पूर्वजन्म में घटित) एक पुरानी घटना का जिक्र किया व अपने बच्चों के सम्बन्ध में भी पूछताछ की। टीटू ने उमा से ही पूछा कि क्या उसे याद है... जब वह पड़ोस के एक गाँव में मेला देखने गए थे... और वहाँ से खूब सारी मिठाइयां खरीद कर लाए थे...? उमा यह सब सुनकर आश्चर्यचकित रह गई क्योंकि उस मेले पर जाने की बात केवल वह जानती थी अथवा उसके मृत सुरेश वर्मा... उनकी नई-नई शादी हुई थी और वह मेले पर किसी को साथ नहीं ले जाना चाहते थे... इसलिए वह किसी को भी बताकर नहीं गए थे...। गाँव की इस संक्षिप्त मुलाकात के पश्चात् सुरेश वर्मा के माता-पिता व उसकी पत्नी उमा को विश्वास हो चला था कि टीटू सुरेश वर्मा का ही पुनर्जन्म है। इतने समय में सुरेश वर्मा के टीटू सिंह के रूप में पूनर्जन्म का समाचार दूर-दूर तक फैल चुका था... समाचार पत्रों के संवाददाता... परामनोवैज्ञानिक...व पुनर्जन्म पर खोजकर्ता इस बच्चे के साक्षात्कार के लिए पहुंचने लगे थे...। पुनर्जन्म अवधारणा पर शोधकार्य में सलंग्न अग्रणीय शोधकर्ता इयान स्टीवेन्सन ने भी इस मामले का निरीक्षण परीक्षण करने के पश्चात् इसे सत्य पाया... व... बी.बी.सी. ने इस पर डाकूमैन्टरी फिल्म बनाई। इस फिल्म को बनाने के दौरान...टीटू को आगरा ले जाया गया... उसे अपनी दुकान पर पहुंचने का रास्ता स्वयं बताने को कहा गया और वह पूरी पार्टी की अगवानी करते हुए सबको सही रास्ते से अपनी दुकान ले गया... जिस दुकान का वह पूर्वजन्म में मालिक था और अब उस की पत्नी चला रही थीं। टीटू के बड़े भाई ने भी अपने छोटे भाई का परीक्षण करने के लिए एक तरकीब निकाली... उसने आगरा में ही बहुत से पड़ोसियों के बच्चों को इकट्ठा किया और उन्हीं में

सुरेश के दोनों बच्चे रोनू और सोनू परन्तु इससे टीटू को कोई फर्क नहीं पड़ा... उसने बच्चों की भीड़ में भी रोनू और सोनू को पहचान लिया। टीटू जब दुकान में था... तो उसने कुछ "परिवर्तन देखा और बताया कि दुकान में क्या-क्या परिवर्तन किए गए हैं... जो वास्तव में सत्य था... सुरेश वर्मा की मृत्यु के पश्चात् वास्तव में दुकान में कुछ परिवर्तन किए गए थे।"

टीटू की माँ से बातचीत करने के दौरान उसे बताया कि उस टीटू से बड़े उसके पांच बच्चे और है... और जब टीटू अपने पूर्वजन्म के परिवार की बातें करता है तो वह इन्हें बुरा नहीं मानती... अब तो वह उन्हें भी अपने ही परिवार का हिस्सा समझती है। किसी समय टीटू मूडी हो जाता है और कहने लगता है... कि वह बोर हो रहा है... और आगरा जाना चाहता है वह अपने परिवार से मिलना चाहता है फिर अपने कपड़े की एक गठरी बनाता है और आगरा जाने की धमकी देता है... इन सब बातों से हमारे दिल को बहुत धक्का पहुंचता है जब हम यह देखते हैं कि टीटू अपने को इस परिवार का सदस्य नहीं समझता। टीटू के पिता से भी बातचीत की गई...। उनका कहना था... कि.... वास्तव में हम केवल इसी बात से दुखित हो उठते हैं जब टीटू अपने दूसरे घर को अपना घर कहता है... और वहाँ जाने की जिद करता है। हमें यह खतरा है कि कहीं टीटू वही का होकर हमारे साथ सारे रिश्ते न तोड़ ले। हम उस से बहुत प्यार करते हैं... हमारा परिवार शिक्षितों का परिवार है परन्तु हम टीटू के साथ... पुनर्जन्म की इस रहस्यमय घटना को समझने में असमर्थ हैं...। सुरेश वर्मा की विधवा उमा देवी को टीटू के रूप में सुरेश वर्मा का पुनर्जन्म होने में कोई संशय नहीं है, उसका कहना है "मैं इसमें पूर्ण रूप से विश्वास करती हूँ कि मेरे मृत पति सुरेशचन्द्र वर्मा ने टीटू के रूप में पूनर्जन्म लिया है।"

बी.बी.सी. टी.वी. की टीम को साक्षात्कार देते हुए उन्होंने कहा... टीटू... क्योंकि आगरा से आठ नौ मील दूर गाँव में रहता है और अब वह एक दूसरा व्यक्ति है... उसका परिवार दूसरा है... मैं समझती हूँ हम केवल आपस में मिलते रह सकते हैं...। बस इससे अधिक और कुछ नहीं... सुरेश वर्मा के माता-पिता का भी इस बात में विश्वास करते हैं कि मृत पुत्र का पुनर्जन्म हैं...। सुरेश वर्मा के पिता का कहना है। वास्तव में यह विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि टीटू ही मेरा मृत पुत्र सुरेश है। वह प्यार से हमारे गले मिलता है जैसे न जाने कब से हमसे बिछड़ा हुआ हो। उसे गले मिलकर हमें ऐसा ही सुखद अनुभव होता है जैसे कि हम अपने सुरेश से ही मिल रहे हो। एक बार वह हमें मिलने आगरा आया हुआ था... बीच गली में उसे पूर्वजन्म की नानी दिखाई दे गयी और वह उससे प्यार से लिपट गया... नानी ने यही

समझा कि वह उमा का बेटा है... और इस पर टीटू बुरा मान गया... और गुस्से में नानी से बोला, "तुम्हें मालूम नहीं कि मैं कौन हूँ...?"

सुरेश वर्मा के पिता ने बड़े दुःख के साथ बताया कि वह जब भी टीटू से मिलते है तो उसी प्रकार बातचीत करते हैं जैसे एक बाप अपने बेटे के साथ करता है परन्तु वह इस बात से डरते हैं कि उसे इस जन्म के वास्तविक माता-पिता को इससे चोट पहुंचेगी। जहाँ तक स्वयं टीटू का प्रश्न है... उसे अपने पूर्वजन्म में हुई हत्या के दृश्य स्पष्ट याद हैं...? अपनी हत्या (समय) को याद करते हुए वह यही कहता है, मैं काम से अपने घर वापिस आ रहा था... और वह गली में दौड़ता हुआ मेरी तरफ बढ़ा और गोली मारकर चला गया... इन प्रश्नों के उत्तर में और अधिक खोज करने की आवश्यकता है...।

बी.बी.सी. वालों ने भी इस प्रश्नों के कोई उत्तर नहीं दिए शायद यह कानून के दायरे में आता है इसलिए... परन्तु सुरेश वर्मा के पोस्टमाटम की रिपोर्ट के साथ टीटू के सिर पर बने निशानों की तहकीकात कर ली गई है...। नाई से सिर के बाल मुडंवा कर निशान का परिक्षण किया गया है जो कि यह साबित करता है कि यह निशान बन्दूक की गोली के हैं जैसे कि जख्म ठीक हो जाने पर पड़ जाते हैं... अन्त में हम इतना ही कह सकते हैं कि इस प्रकार की पुनर्जन्म की अनेक विचित्र घटनाऐं पूरे विश्व में सामने आ रही है जिन पर शोधकार्य चल रहा हैं..., परन्तु ऐसा कोई निश्चित नियम अथवा प्रक्रिया सामने नहीं आई जिसे वैज्ञानिक रूप से प्रस्तुत किया जा सके... अभी और खोज की आवश्यकता है जिसके लिए प्रयत्न जारी है...।

26. पूर्वजन्म की सम्पत्ति की दावेदारी

उसका जन्म थाईलैंड के सुरेन्द्र नामक स्थान में हुआ था। बचपन से ही उसका दावा था कि वह अपने पूर्वजन्म से मृत्यु तक की बातें जानता है और जीवन-यात्रा का हर लेखा उसे ज्यों-का-त्यों याद है। इस विचित्र बालक का नाम था—थियान। बालक बड़ा होकर थाई सेना में भर्ती हुआ और उसने सार्जेन्ट का पद हासिल किया। जन्म के समय उसके शरीर पर कुछ ऐसे निशान थे जिसे देखकर कोई भी परामनोविज्ञानी कहता, "आश्चर्य है पूर्वजन्म के भरे जख्म पुनर्जन्म के शरीर पर।" परन्तु सार्जेन्ट थियान को इसमें कोई आश्चर्य प्रतीत नहीं होता था।

अपने शरीर के उस जख्म के बारे में उसका कहना था, "यह जख्म ही तो मेरे पूर्वजन्म के कृत्य की मुझे स्मृति दिलाते हैं। मुझे पशुओं की चोरी के इल्जाम में गाँववालों ने बहुत मारा था। यह जो जख्म मेरे बायें कान से सिर तक फैला हुआ है यह गाँववालों द्वारा छूरा भोंकने से हुआ था...... तब यह भर गया था और अपना निशान छोड़ गया था....... मेरे इस जख्म में भी यह मेरे शरीर से रंचमात्र भी जुदा नहीं हुआ है और उस नागवार लम्हे की स्मृति दिलाता है। मृत्यु के क्षणों में मैंने अपने शरीर को जिस स्थिति में देखा था उसे आज तक भूला नहीं हूँ।"

थियान कहता है, "पूर्वजन्म में मृत्यु के समय मेरे दाहिने पैर के अंगूठे में एक खुला हुआ जख्म था और हाथ एवं पैर में गोदने के चिह्न। इस जन्म में भी मेरे पैर के अंगूठे में वह ज़ख्म विकृत रूप लिए मौजूद है। बचपन में पूर्वजन्म के वे गोदने सरीखे अस्पष्ट निशान मेरे हाथ-पैर में उसी तरह झलकते थे जिस तरह उस जन्म में थे।"

इस बात कि पुष्टि उसके गाँव के तमाम संभ्रांत व्यक्तियों ने की थी। गाँव के मुखिया ने तो यहाँ तक स्वीकारा था कि वे पूर्वजन्म में भी उसे जानते थे और वर्तमान में वह जो कुछ पूर्वजन्म के बारे में बताता है सब कुछ सच था। दूसरे



तमाम लोग भी उसकी बातों की सच्चाई स्वीकारते हैं। इनमें उसके रिश्तेदार भी हैं और सेना के अधिकारी एवं मित्र भी।

एक हैरतअंगेज बात यह हुई थी कि सार्जेन्ट ने सेना के पड़ाव के निकट की भूमि पर अपना दावा प्रस्तुत किया था। शायद तभी उसके इष्ट मित्र उसे जमींदार की संज्ञा दिये हुए थे। उसका कथन था कि पूर्वजन्म में यह भूमि उसकी संपत्ति थी।

पुनर्जन्म की ऐसी तमाम मिसालें हैं परन्तु अपने पूर्वजन्म की पन्ने-दर-पन्ने अंकित दास्तान के स्मरण की दावेदारी और पूर्वजन्म की संपत्ति का दावा प्रस्तुत करने की मिसाल शायद कम ही हो और सारा मामला भी एक सार्जेन्ट से संबंधित रहा है।

सार्जेन्ट थियान के दावे की तहकीकात करने वाले तमाम लोग इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि उसका दावा सिर्फ कोरा दावा नहीं है, उसके कथन की आधार भूमि है।

27. जैनिफर और गेलियन

रेशमी वालों, नीली आँखों वाली जुड़वा बहनों जेनीफर और गेलियन को उनके माता-पिता अपनी दिवंगत बेटियों का पुनर्जन्म मानते है। जोआना (ग्यारह वर्ष की) और जैकैलीन (छः वर्ष की) नार्थवरलैंड के अपने गाँव हेक्सम में, जहाँ यह परिवार उस समय रहता था, एक दूसरे का हाथ थामे चर्च की ओर जा रही थी कि वे एक मोटरकार के नीचे आ गयीं।

जुड़वा वच्चों के बाप श्रीपोलक ने कहा– "मैनें रोमन कैथेलिक धर्म अंगीकार कर लिया है। इसलिये मुझसे कहा जाता है कि मैं पुनर्जन्म में विश्वास नहीं कर सकता। लेकिन मेरी पत्नी और में इतने दिनों से जो कुछ देख और सुन रहे हैं, उसके कारण मैं अब यह बात मान नहीं सकता।"

लड़कियों की मौत के बाद जव श्रीमती पोलक दुवारा गर्भवती हुई तो श्रीपोलक को विचित्र आभास होने लगा कि उनकी बेटियाँ उनके पास वापस आ रही हैं। वे नहीं चाहते थे कि वे इस पर विश्वास करें और उनकी पत्नी तो यह सुनना भी नहीं चाहती थी। लेकिन गर्भावस्था के दिन पूरे होते-होते यह भावना बहुत ही प्रखर हो गयी और उन्होंने अपनी पत्नी की डॉक्टरी परीक्षा करायी।

डॉक्टर ने कहा कि "इस बात की बिल्कुल कोई सम्भावना नहीं है कि वह एक से ज्यादा बच्चे को जन्म दे; क्योंकि उसे एक ही हृदय की धड़कन और एक ही शिशु के हाथ-पैर का पता चला है।" एक सप्ताह बाद जुड़वा शिशुओं का जन्म हुआ।

श्री और श्रीमति पोलक का ध्यान आकर्षित करने वाली पहली चीज थी कि जैनीफर के माथे पर दायी आँख की तरफ ऊपर से नाम तक एक सवा इंच लंवा असामान्य सफेद निशान था। दोनों लड़कियों में छोटी जैकेलिन के भी ऐसा ही निशान था, जो तीन साल पहले गिर पड़ने का परिणाम था। जैनिफर के निशान साधारणतया कठिनाई से दिखायी पड़ते थे; किंतु सर्दियों में वे स्पष्ट दिखायी देने लगते थे। यही बात जैकेलिन के विषय में भी थी।

जैनीफर के बायें कुल्हे पर लगभग एक शिलिंग के आकार का भूरा जन्मचिन्ह भी है। यह स्वरूप, रंग, आकार और स्थिति के विचार से जैकेलिन के चिन्ह से एकदम मिलता-जुलता है। दूसरी समानताएँ जैनिफर के बढ़ने के साथ-साथ उभरने लगीं। वह लिखने में स्वाभाविक रूचि लेने लगी और कलम या पेंसिल को दाएं हाथ के बीच की उंगलियों में थामने की और पहली उंगली से चलाने की उसे विचित्र आदत पड़ गयी।

गेलियन, जो जोआना से मिलती-जुलती है, पर उसकी समानताऐं इतनी स्पष्ट नहीं हैं। वे ऐसी चीजें हैं, जिन्हें माता-पिता ही आसानी से देख सकते हैं। उदाहरण के लिये छोटे बच्चों के प्रति उसका वही व्यवहार और उनके लिये वही प्यार, उसी तरह अपनी बहन को हाथ थामकर घूमाना, वैसी ही दुबली-पतली, वही स्वभाव और ढंग।

गेलियन को जैनीफर का चेहरा प्यार से दोनों हाथों में लिये यह बताते देखा गया कि जैकेलीन को गिरने पर कैसे-कैसे चोट आयी थी। वह जो कुछ बता रही थी, वह सब सही था। एक मौके पर जब श्रीपोलक ने संयोग से पुराने खिलौनों के एक पार्सल, जो उन्होंने जोआना और जैकेलीन की मौत के बाद अलग रख दिया था, निकाला तो गेलियन ने गुड़ियों के धुले कपड़े निचोड़ने वाला रिंगर छीन लिया और बड़े आवेश में बोली—"डेडी, देखो, वह मेरा रिंगर है।" असल में वह जोआना को दिया गया था।

इसी तरह जब जैनीफर ने जैकेलीन की गुड़िया देखी तो चीख पड़ी—"वह मेरी है।" जैकेलीन इस गुड़िया को ठीक 'मेरी' के ही नाम से पुकारती थी, हाँलाकि जेनीफर ने यह गुड़ियां पहले कभी नहीं देखी थी।

एक ओर अवसर पर श्रीपोलक कुछ रंगाई कर रहे थे और उन्होनें अपने कपड़ों को बचाने के लिये ऊपर से अपनी पत्नी का एक पुराना कोट पहन लिया। श्रीमती पोलक ने यह कोट उस दिन प्रातःकाल के बाद, जिस दिन दोनों लड़कियाँ दुर्घटनाग्रस्त हुई थीं, फिर कभी नहीं पहना।

श्रीपोलक कहते हैं—"जब जैनीफर ने मुझे यह कोट पहनते देखा तो उसने कहा—तुम मम्मी का यह कोट क्यों पहन रहे हो, जो वह स्कूल पहनकर जाती थी।"

श्रीपोलक आश्चर्य से भर गये; क्योंकि यह वही कोट था, जिसे पहनकर श्रीमति पोलक जैकेलीन को स्कूल से लेने जाती थीं।

पुनर्जन्म में एक शरीर के शारीरिक चिन्हों का दूसरे शरीर में चले जाना बल्कि दूसरे शरीर पर उत्पन्न हो जाना कोई असाधारण बात नहीं है।

28. मेरा नाम परमानन्द है, प्रमोद नहीं!

इस घटना का वर्णन वृहस्पतिवार, 25 अगस्त, 1949 की 'नार्दर्न इंडिया पत्रिका' और अन्य अखबारों में भी निकला था। इसकी सत्यता में तनिक भी सन्देह नहीं है। जो निम्नलिखित परीक्षण किया गया उसमें मुरादाबाद के दर्जनों वकील, डॉक्टर, मास्टर, प्रोफेसर आदि सम्मिलित थे। बा. राधे मोहन बी.ए. (पुजेटी गली, मुरादाबाद) ने बताया कि उन्होंने भी उक्त परीक्षा में योग दिया था और जो-जो बातें समाचार-पत्रों में दी गई हैं, अक्षरशः सत्य हैं। अपनी सत्यवादिता के लिए वह अपने इष्ट मित्रों और सम्बन्धियों में प्रसिद्ध थे। अतएव नीचे दी हुई कहानी की सत्यता में सन्देह करने की कोई गुंजाइश नहीं है।

मुरादाबाद में कुमेटी घर के बगल में बिस्कुटों आदि की एक बड़ी दुकान है जिसका नाम है 'मोहन ब्रदर्स।' तीन भाइयों में सबसे बड़े थे मोहन लाल, दूसरे परमानन्द। दुकान की एक शाखा सहारनपुर में भी थी। कुछ समय पहले एक तीसरी शाखा मुरादाबाद की ही सिविल लाइंस में भी थी, किन्तु इस घटना के समय से पहले वह शाखा उठा दी गई थी।

9 मई, 1943 को परमानन्द का सहारनपुर में स्वर्गवास हो गया। इसके ठीक 9 महीने, 6 दिन बाद जिला बदायूं के बिसौली कस्बे के पंडित बांकेलाल शर्मा एम. ए. शास्त्री के लड़का हुआ। शर्मा जी बिसौली के ही एक इंटरमीडियेट कॉलिज में प्रोफेसर थे। संयोग की बात है कि इस लड़के का भी जन्मकुंडली से नाम, परमानन्द ही निकला। किन्तु इसके बड़े भाई का नाम वर्मोद था, अतः लोग इसे प्रमोद कहने लगे।

प्रमोद ने बोलना आरम्भ ही किया था कि वह मोहन मुरादाबाद और सहारनपुर के नाम लेने लगा। जब कुछ बड़ा हुआ तो स्पष्ट रूप से 'मोहन ब्रदर्स' कहने लगा। जब कभी उसके घर वाले मक्खन, बिस्कुट आदि बाजार से खरीदते

थे, वह तुरन्त कहता था कि मुरादाबाद में उसकी एक बिस्कुट फैक्ट्री है। जब भी वह बाजार में किसी बड़ी दुकान से गुजरता तो कहता कि मुरादाबाद में उसकी दुकान इससे भी बड़ी है। वह बार-बार अपने पिता जी से कहता था कि "मुझे मुरादाबाद ले चलो।" जब लोग उसे प्रमोद कह कर पुकारते, वह बलख उठता कि "मेरा नाम परमानन्द है। मुरादाबाद में मेरे भाई, पत्नी, बेटे, बेटी सब है।"

सन् 1949 के आरम्भ की बात है। बिसौली के लाला रघुनन्दन लाल मुरादाबाद में अपने एक सम्बन्धी के घर आए। उन्होंने प्रमोद और मोहन ब्रदर्स का सारा किस्सा अपने उक्त सम्बन्धी को सुनाया, जिन्होंने मोहन लाल से जिक्र किया। मोहन लाल अपने कुछ भाई-भतीजों को लेकर जुलाई, 49 में बिसौली गए और प्रोफेसर बांकेलाल से मिले। प्रमोद उस समय किसी दूर के गाँव गया हुआ था। अतः उन्होंने बांकेलाल जी से कहा कि कभी प्रमोद को लेकर मुरादाबाद आएं। यह निश्चय हो गया कि स्वतन्त्रता दिवस (15 अगस्त) पर वह प्रमोद को लेकर आएंगे।

इधर मुरादाबाद की जनता में इस घटना से हलचल मच गई थी। जनता कुतूहल से 15 अगस्त की बाट देख रही थी। उक्त दिन दर्जनों व्यक्ति-शिक्षित, अशिक्षित, सगे सम्बन्धी और इष्ट मित्र-मोहनलाल के साथ रेलगाड़ी के समय स्टेशन पहुंचे। प्रमोद इससे पहले कभी मुरादाबाद नहीं गया था। गाड़ी से उतरते ही मोहनलाल की ओर दौड़ा और भाई साहब कहता हुआ उनके गले लिपट गया।

प्रमोद को तांगे पर बिठाया गया। जब कुमेटी घर के समीप पहुँचा तब प्रमोद ने कहा कि "अब मेरी दुकान बिल्कुल पास है।" तांगे वाला सधा हुआ था। वह 'मोहन ब्रदर्स' की दुकान छोड़ कर आगे जाने लगा। तुरन्त प्रमोद ने कहा "तांगा रोको। मेरी दुकान तो यही है।"

दुकान पर जाकर प्रमोद उस गद्दी पर बैठ गया जिस पर परमानन्द के रूप में बैठा करता था। तब वह सोडावाटर वाली मशीन पर गया और दिखाने लगा कि मशीन किस प्रकार चलाई जाती है। उसके पिताजी ने बताया कि इस जन्म में उसने ऐसी मशीन कभी नहीं देखी थी। प्रमोद मशीन चलाने लगा, किन्तु उसकी परीक्षा लेने के लिए पानी का सम्बन्ध (Connection) जान-बूझ कर तोड़ दिया गया था। जब उसने देखा कि सोडा वाटर तैयार नहीं हो रहा है तो बोला कि 'पानी का सम्बन्ध टूट गया है।'

अब प्रमोद से कहा गया कि 'अपने मकान चलो।' मकान सामने ही ऊपर के खन पर था। प्रमोद दौड़ा गया और जीने पर चढ़ कर कमरे में पहुँचा। उसकी पिछले जन्म की पत्नी बैठी हुई थी। उसे देखते ही बोला, 'अरे, तुमने चूड़ियां क्यों

तोड़ डाली हैं। मैं तो जिन्दा हूँ।' यह सुनते ही स्त्री फूट-फूट कर रोने लगी। उसने घर की और सब स्त्रियों को भी पहचाना और पिछले जीवन की कई घटनाएं सुनाई। सबने कहा कि सारी घटनाएं सत्य हैं। जब उसने कहा कि 'इस स्थान पर हम सब भाई नीबू का शर्बत आदि पीया करते थे' तो भाइयों की आँखों से अश्रु की धारा बहने लगी।

परमानन्द के एक भाई लगते थे करमचन्द जिनका एक 'विक्ट्री होटल' मुरादाबाद में ही था। प्रमोद ने उस होटल में जाने की इच्छा व्यक्त की। सब लोग उसको साथ लेकर चले। यहाँ भी वह मार्ग बताता चल रहा था। वह सीधा उक्त होटल पहुंच गया। जब उसे ऊपर के खन पर ले गये तो उसने कहा कि 'यह कमरे नये बने हैं।' वास्तव में था भी ऐसा ही।

मुरादाबाद के प्रसिद्ध रईस श्री नन्दलाल सरन उसे अपनी कार में मेस्टन पार्क ले गए और उससे कहा कि बताए कि मोहन ब्रदर्स की सिविल लाइंस वाली शाखा कहाँ पर थी। वह उक्त स्थान पर ले गया। रास्ते में वह कई इमारतों को पहचान कर उनके नाम बताता गया : इलाहाबाद बैंक, जल कल शाला, जिला जेल इत्यादि। मार्ग में उसने ऐसे कई, व्यक्तियों को भी पहचाना जो उसकी दुकान पर आया करते थे।

16 अगस्त को आर्य समाज हॉल में एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें बांकेलाल जी ने बताया कि बचपन से उस लड़के की स्मरण शक्ति का किस प्रकार विकास हुआ था।

प्रमोद किसी प्रकार भी मुरादाबाद से जाने को तैयार नहीं था। 17 तारीख को उसे सोते-सोते ही उठा कर रेलगाड़ी पर ले गये। उसने जितनी भी बातें बताई थीं, उनमें बाल भर भी अन्तर नहीं था और उत्तर देने में कभी एक बार भी न झिझका, न सकुचाया !

29. पूर्वजन्म का निशान

पुनर्जन्म अवधारणा के प्रसिद्ध शोधकर्ता प्रोफेसर इयान स्टीवेन्सन को स्वयं श्रीमती ईस्टलैंड ने अपनी बिटिया 'स्यूसान' के संबंध में बताया कि वह अपनी मृत बड़ी बहन 'विन्नी' का पुनर्जन्म है.....। पूर्वजन्म में उसकी बहन के बाएं कूल्हे पर गहरा घाव हो गया था....। इसी घाव के कारण उसकी मृत्यु हो गई थी। स्यूसान के बाएं कूल्हे पर ठीक उसी स्थान पर वैसा ही घाव का निशान है......., ऐसा निशान जैसा जख्म भर जाने पर रह जाता है।

डॉ. इयान स्टीवेन्सन..... जन्मजात घाव के निशानों को बड़ी महत्व देते हैं तथा इस प्रकार के रहस्यमय मामलों की छानबीन वह स्वयं उस स्थान पर पहुंच कर करते हैं........। चाहे वह स्थान दुनिया के किसी कोने में हो....।

शैश्लौट ईस्ट लैंड को यह पक्का विश्वास हो गया था कि उनकी बिटिया 'स्यूसान' अपनी बड़ी बहन 'विन्नी' का ही पुनर्जन्म है.....।

'विन्नी' की एक कार दुर्घटना में सन् 1961 में मृत्यु हो गई थी जब वह केवल छः वर्ष की थी।

विन्नी की दुर्घटनाग्रस्त होकर मृत्यु हो जाने के ठीक दो वर्ष पश्चात् श्रीमती ईस्टलैंड पुनः गर्भवती हुई और स्यूसान का जन्म सन् 1964 में हुआ। गर्भावस्था के दौरान उन्हें एक बड़ा विचित्र स्वप्न दिखाई दिया था....। स्वप्न में उन्होंने देखा कि.... घर में दावत दी जा रही है और सभी मित्र तथा संबंधी आए हुए हैं..... शायद किसी का जन्मदिन है..... किसका जन्मदिन है वह स्वप्न में भी नहीं जान पाती...... परन्तु यह निश्चित है किसी का जन्मदिन है और अचानक उन्हें अपनी मृत बच्ची 'विन्नी' का ध्यान आता है..... वह सोचती है..... काश! आज के दिन वह भी वहाँ होती......... और उस समय उन्हें बहुत आश्चर्य होता

30. जिप्सी नृत्यांगना का पुनर्जन्म

प्रसिद्ध परामनोवैज्ञानिक स्टीगर द्वारा पुर्नजन्म पर किए गए प्रारंभिक शोध, जो उन्होंने 1960 वर्ष के आसपास किए, में एक ऐसी बालिका की मार्मिक घटना का उल्लेख है जो अपनी प्राणघात अस्वस्थता के पश्चात् मृत्यु के मुंह से बच तो गई परंतु जब लम्बे समय तक बेहोश रहने के बाद उसने अपनी आंखें खोली तो अपने व्यक्तित्व को पूर्ण रूपेण परिवर्तित पाया।

मार्था बैरजन केवल सात वर्ष की बालिका को अच्छी तरह याद है कि बात 1949 की है, जब अस्पताल में उसे होश आया तो उसे अपना आसपास का माहोल सर्वथा अपरिचित सा लगा। लेखक के साथ साक्षात्कार के समय व्यक्त अपने जीवन से संबंधित घटनाओं के अध्ययन तथा अनुभव के परिणामस्वरूप पुर्नजन्म पर अपना विश्वास, मारथा के शब्दों में ....

"स्वस्थ होने पर अपने माता-पिता और अपनी दो बहनों को पूरी तरह से पहचान पाने मुझे काफी समय लगा। होश में आने पर जब मैंने उन्हें पहली बार देखा तो सब अपरिचित लगे। मुझे ऐसा अनुभव हो रहा था कि मैं किसी अज्ञात स्थान पर अनजाने लोगों में आ गई हूँ, लगातार दो घंटे तक मैंने अपनी ओर से पूरा प्रयास किया। मेरे अपने माता-पिता और बहने मुझे अजनबी लग रहे थे।" मैंने डॉक्टर को कहते सुना कि इतनी लंबी बीमारी तथा बेहोशी के बाद ऐसा होना संभव है।

मेरे दिमाग में एक धुंधला सा स्वप्न उथल-पुथल मचाए हुए था। जो मुझे स्पष्ट रूप से याद नहीं आ रहा था फिर मैंने देखा मेरे माता-पिता और बहनों की आँखों से आसुओं की धारा बह रही थी। उनके चेहरे मुरझाए हुए थे। अपने भीतर मैं कही जानती थी कि इन्होंने मेरे स्वस्थ होने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की होगी। इन्ही विचारों में मुझे लगा मैं इन्हें जानती हूँ तथा मेरी स्मृति धीरे-धीरे लौटने लगी, परंतु मैं अभी भी अर्द्धनिद्रावस्था में ही थी।



अस्पताल से घर आ जाने के बाद दूसरे दिन रात स्वप्न में देखे गए दृश्य मेरी आँखों के सामने घूमने लगे। मैंने स्वयं को खिलखिला कर हंसते हुए और इधर-उधर नृत्य की मुद्रा में अपने शरीर के अंगों को नाचते हुए देखा जैसे कोई अत्यन्त आनन्द की मनः स्थिति में नाचने लगता है, मुझे अपने चारो ओर तेज संगीत की ध्वनि के साथ-साथ तालियों की आवाजें भी सुनाई दे रही थी, मेरे सामने आग की लपटे उठ रही थी जैसी आग (कैम्प फायर) में जलाई जाती है और उसी के चारों ओर संगीत की ताल में मैं नाच रही थी और मुझे ऐसा अनुभव हो रहा था कि न जाने मैं कितनी सदियों से इसी प्रकार नाच रही हूँ और न जाने कब तक सांसारिक सुखों का भरपूर आनन्द उठाती हुई सर्वथा स्वतंत्र नाचती रहूँगी। परन्तु वह तो स्वप्न था, यथार्थ बिल्कुल इसके विपरीत।

मेरा परिवार एक रूढ़िवादी परिवार था, पिता चर्च में पादरी थे तथा पुराने धार्मिक विचारों के होने के कारण नृत्य को शैतान की प्रेरणा मानते थे। एक बार रेडियो पर बज रही तीव्र संगीत की धुन के साथ-साथ मुझे नाचते हुए देखे उन्होंने मुझे पकड़ लिया। हालांकि मैं उस समय केवल आठ वर्ष की थी, परन्तु उन्हें लगा कि मेरा इस प्रकार नाचना उनके पुराने रूढ़िवादी विश्वासों तथा विचारों पर एक गहरा तमाचा है और उस दिन से घर में रेडियो बजाने की मनाही हो गई।

ग्यारह वर्ष की आयु तक कभी मैं स्वंतन्त्रता से अपने आप कहीं बाहर जाना भी नहीं सीख पाई थी, मेरी स्कूल की दो मित्रों ने नृत्य सीखना शुरू किया था तथा मेरी यह तीव्र आन्तरिक इच्छा थी कि मैं भी उनके साथ नृत्य सीखूं, मैंने एकान्त में अपनी माँ से बात की। माँ मेरी बात सुनकर न जाने क्यों भय से कांपने लगी? मेरे जिद करने पर उसने मेरी प्रार्थना पिता के सामने रखी और इसका परिणाम यह हुआ कि मेरा जेब खर्च दो सप्ताह तक बंद कर दिया और मुझे अपनी उन दो मित्रों के साथ मित्रता रखने की तथा उनसे बात करने की भी मनाही हो गई।

पिता द्वारा बार-बार कहने का तथा उनके उपदेश का मुझ पर यह असर हुआ कि तेरह वर्ष की होते-होते मैं अपने पिता के विचार समझ चुकी थी। उनका यह मानना था कि नाचना केवल उन औरतो का काम है जिन्हें अपनी मान-मर्यादा का कुछ भी ख्याल नहीं होता। जब मेरे स्कूल के मित्र कभी संगीत मंडली जुटाते और उनके आनन्दजीवी माता-पिता उनकी पार्टियों का प्रबन्ध अपने घरों में करते तो मैं अपने दिल पर पत्थर रखकर अपने अध्ययन की किताबों में खोई रहती तथा अधिक-से-अधिक मैं वह किताबे पढ़ सकती थी, जिन्हें पढ़ने की अनुमति मेरे पिता द्वारा दे दी गई थी। परंतु इस जन्म के सातवे वर्ष में घटित घटना के समय से मेरे

नृत्य करने का जो स्वप्न मुझे पहली बार दिखाई दिया था, वह बार-बार मुझे आन्दातिरेक होकर नृत्य और केवल नृत्य करना तथा स्वप्न की वह मनः स्थिति कितनी आनन्ददायक होती थी जिसे स्मरण कर मैं अपना दिन का समय बिता लेती थी। स्वप्न के दृश्य मेरी आँखों के आगे हर समय घूमते रहते। हवा में लहराते हुए मेरे उन्मुक्त बाल संगीत की ताल तथा नृत्य के समय अंग प्रचालन के साथ-साथ इधर-उधर झूलते रहते। रात के धुंधल के ठण्डी जमीन पर जब मेरे नंगे पांव थिरकने लगते तो शरीर मे विचित्र सी सिहरन दौड़ जाती। संगीत की तेज ताल तथा उसके साथ बजती तालियों की आवाज से हृदय की गति भी तेज हो जाती। स्वप्न में मैं आनन्द की ऐसी स्थिति में पहुंच जाती कि अपने अस्तित्व को भुला देती।

सुबह आंख खुलती तो विपरीत परिस्थितियां मुझे यह देखने को बाध्य कर देती कि परमात्मा क्यों स्वप्न में ऐसे दृश्य दिखा कर मेरी परीक्षा ले रहा है?

मैं अपने स्वप्न चोरी-छिपे अपनी माँ को बता देती परंतु यह भय बना रहता कि इस रहस्य की खबर कभी न कभी पिता को भी लग जाएगी।

तब मेरा सारा उत्साह ठण्डा पड़ जाता। धीरे-धीरे मैं कुंठाग्रस्त होती गई। स्कूल की शिक्षा समाप्त होने वाली थी, मैं सोलह वर्ष की हो चुकी थी। माँ के कहने पर मैंने पुस्तकालय से लेकर मनोविज्ञान की पुस्तकों का अध्ययन शुरू किया तथा पुस्तकों में अपने विलक्षण स्वप्नों का रहस्य खोजने लगी।

क्या यह स्वप्न नाचने की अपनी आन्तरिक इच्छा के पूरी न हो पाने के कारण आते हैं? मैं सोचने पर बाध्य हो हो गई कि घर का धार्मिक तथा रूढ़िवादी वातावरण जिसमें मैं पिता के दबाव में अपनी इच्छा पूरी नहीं कर सकती थी, क्या मेरा अचेतन उस अधूरी इच्छा को स्वप्न में पूरा करता है? अथवा क्या यह स्वाभाविक है कि मेरी सब मित्र, क्योंकि नाचने में रूचि रखती है, इसलिए मुझे नृत्य से प्यार हो गया है और मेरे मन में हमेशा नृत्य करने के विचार ही आते रहते?

अपने ही मन में तर्क-वितर्क करती रहती। एक ही स्वप्न था जो मुझे तब से परेशान किए हुए था जब मैं सात वर्ष की आयु में अपनी बीमारी से स्वस्थ हुई थी। परन्तु क्या मैं अपने इस स्वप्न का रहस्य जान पाने में कभी सफल हुई? नहीं। अन्त में मुझे लगा शायद मेरे अचेतन से पूर्वजन्म की कोई स्मृति जुड़ी हुई है।

नव वर्ष की शाम को मैं और भी परेशान हो उठी। स्कूल का यह अंतिम वर्ष था, मैं सोलह वर्ष पूरे कर चुकी थी। स्कूल के सभी सहपाठियो ने नव वर्ष को मिलजुल कर मनाने का कार्यक्रम बनाया, मेरे सहपाठियों में सभी जानते थे कि स्कूल की शिक्षा प्राप्त करने के बाद मे छोटे चर्च के कॉलेज में समाज सेवा की शिक्षा ग्रहण करूंगी।

हालांकि यौवन की दहलीज पर पांव रखते-रखते मैं अपने सहपाठियों तथा अन्य युवकों को अपनी और ललचाई नजरों की उठते हुए महसूस करने लगी थी। मुझे अपनी सुन्दरता का भी आभास था तथा मेरे लिए मित्रों की कोई कमी नहीं थी, परंतु मेरे पिता एक युवक की भली प्रकार जानकारी रखते थे विशेषकर जो हम तीनों बहनो में से किसी को भी मिलने-जुलने आया करते थे।

इस नववर्ष के अवसर पर मेरे पिता अपना भाषण तैयार करने में व्यस्त थे जो उन्हें चर्च में पढ़ना था, उनका ध्यान मेरे नए मित्र चार्ली नौरिस की ओर नहीं गया। चार्ली नौरिस ने नववर्ष की शाम होने वाली पार्टी में मुझे आमंत्रित किया।

चार्ली दो वर्ष पूर्व स्कूल की शिक्षा समाप्त कर चुका था तथा अब कॉलेज में था, वह अपनी इस आदत के कारण कुछ बदनाम था कि वह अक्सर मिलने पर बियर की बोतलें खाली कर देता था और अपनी डींगे हाँकने लगता था, परंतु पता नहीं क्या मुझे वह अच्छा लगता था? उसने मेरे पिता से पार्टी पर साथ ले जाने की अनुमति यह कह कर ली थी कि वह बहुत ही शिष्ट मित्रों के साथ तथा नववर्ष मनाने के लिए केवल खाने-पीने की पार्टी होगी तथा इसमें शराब नहीं पी जाएगी। परन्तु सच्चाई इसके बिल्कुल विपरीत थी। हॉल के बाहर ही मैंने अन्दर से आते हुए शोरगुल की आवाजें सुनी, पहले तो मैं घबराई परंतु चार्ली के साथ होने के कारण मैंने हिम्मत बांधी और हम लोग पार्टी में शामिल हो गए। पार्टी में आने से पहले मैंने चार्ली से यह वायदा ले लिया था कि वह मुझे शराब पीने के लिए मजबूर नहीं करेगा तथा न ही नाचने के लिए जिसे उसने अपनी ओर से पूरी तरह निभाया, हम कुछ देर अपने स्कूल के मित्रों से मिलते रहे। वह मेरे लिए 'फ्रूट पंच' लाया और फ्रूट पंच लेने के बाद मुझे नींद सी अनुभव होने लगी। मुझे बाद में पता चला कि 'फ्रूट पंच' वोडका नामक रूसी शराब को मिलाकर बनाया गया था। खाने-पीने के पश्चात् बारी आई मिलकर बैठकर गाने बजाने की, सबसे पहले हमारे मित्र क्लेराइज हचिन्स ने अपनी सुरीली आवाज में एक गीत सुनाया..............."गौड ब्लैस अमरिका" गीत सुनते-सुनते मैंने चार्ली से 'फ्रूट पंच' का एक ओर कप लाने के लिए कहा, मेरे चारों तरफ सभी मस्ती में नाच कूद रहे थे। मुझे इस बात की खुशी थी कि मैं अपने होशहवास में थी या शायद मुझे केवल ऐसा महसूस हो रहा था क्योंकि मेरी आंखें नींद के कारण बोझिल हो रही थी।

तभी सहसा कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले ने मेरा नाम पुकारा, अपना नाम सुनकर मेरी आँखों में एक अजीब सी चमक आ गई, कभी चर्च में तो सभी लड़कियों

के गली क्लब में मैंने वड़े सुरीले गीत गाए थे और मेरी आवाज के संबंध में सभी जानते थे।

मेरा नाम पुकारे जाने पर सभी को यही आशा थी कि मैं कोई गीत सुनाऊंगी और इसी आशा में एक सहपाठी मेरा साथ देने के लिए पियानो पर जा वैठा, परन्तु उस समय सब आश्चर्यचकित रह गये जव मैंने यह कहा कि मैं गाने की वजाए अपना नृत्य दिखाऊंगी।

सभी जानते थे कि चर्च पादरी के बेटी कैसे नाच सकती है, जबकि उसके पिता नाचने को शैतान की प्रेरणा मानते है, मैंने पियानो पर वैठे युवक से प्रार्थना की कि वह कोई तेज जिप्सी संगीत वजाए, वस संगीत प्रारंभ होने तक तो मुझे याद है, परन्तु उसके पश्चात् मैं कितनी देर व किस तरह से नाचती रही इसका मुझे कोई होश नहीं।

इस घटना के कुछ महीनों वाद मेरी एक मित्र का पत्र मिला जिसमें लिखा था–"पार्टी में तुम्हारा नृत्य देखा, वह स्पेन के जिप्सी लोगों का प्राचीन नृत्य है। परन्तु तुमने यह कठिन नृत्य कब सीखा? तुम वाकई जिप्सियों की तरह कुशलता से नाच रही थी।"

यह पत्र आने से पहले भी पार्टी में आए बहुत से लोगों ने मुझे वताया था कि मैं किस प्रकार नाची थी तथा वह सव मुझे वहीं वता रहे थे जो मैं वचपन से स्वप्न में प्रतिदिन देखती आई थी, परंतु यह मेरा अंतिम नृत्य था क्योंकि इसके वाद न ही मैं उस नृत्य की नकल दोबारा कर पाई और न ही मुझे वह स्वप्न फिर दिखाई दिया।

मारथा वैरजन के साथ घटी घटना का उत्तर क्या मनोवैज्ञानिक की कितावों में ढूंढा जा सकता है? यह रहस्यमय स्वप्न किसी दवी इच्छा की पूर्ति है। यह उत्तर उस स्थिति में निरर्थक है जवकि विना सीखे विधिवत ढंग से वह स्पेन के जिप्सियों का नाच नाचती है। सात वर्ष की अवस्था में मृत्यु के समीप पहुंचकर जो स्वप्न प्रारंभ हुआ और उसकी स्मृति उजागर हो उठी क्या वह प्रेतात्मा का साया हो सकता है? यदि ऐसा है तो प्रेतात्मा उससे क्या चाहती थी? स्पष्ट है कि मारथा वैरजन किसी स्वतंत्र जिप्सी नर्तकी का पुर्नजन्म है जिसकी आत्मा इस जन्म में नृत्य का पूर्ण ज्ञान अपने साथ लेकर जन्मी है और पूर्वजन्म में अधूरी रह गई अपनी नृत्य कला का प्रदर्शन करने की तीव्र इच्छा उसे तव तक परेशान किए रहती जव तक कि वह उसे पूरा नहीं कर लेती।

31. आखिर तुम कौन से बेलगाँव में पैदा हुई थी ?

"मम्मी! मुझे मेरे घर ले चलो। मुझे अपनी बहन से मिलना है। यहाँ मुझे अच्छा नहीं लगता।" साढ़े चार वर्षीय सुनीता की बातें सुनकर उसके माता-पिता दंग रह गये। उन्हें अपनी भोली-भाली बिटिया के बारे में चिन्ता हो गयी। वे इस दिशा में सोचने लगे कि कहीं सुनीता को कुछ हो तो नहीं गया, कोई हवा-बयार तो नहीं लग गयी!

दीपावली का पर्व था। घर में पकवान बन रहे थे। हंसी-खुशी का माहौल था। ऐसे में सुनीता की बातें और उसके बालहठ से पूरा परिवार चिन्तित हो उठा। माता-पिता के पूछने पर सुनीता ने बताया कि उसका (पूर्वजन्म का) घर बेलगाँव में है। उसने अपनी बहन सुमित्रा और पिता चन्द्रभान के बारे में बहुत-सी बातें विश्वासपूर्वक बतायीं। आखिर सुनीता के पिता मदन लाल को विश्वास करना ही पड़ा कि सुनीता को अपने पूर्वजन्म की समृति आ गयी है।

मदन लाल जी चण्डक महाराष्ट्र के अन्तर्गत यवतमाल जिले के वेणीकोठा गाँव के निवासी हैं। इक्कीस वर्ष के वैवाहिक जीवन के बाद 12 अक्टूबर, 1673 को मदनलाल जी के घर जुड़वां लड़कियों का जन्म हुआ था। उनके नाम सुनीता और अनीता हैं।

सुनीता ने अपने पूर्वजन्म के गाँव-घर के बारे में यह भी बताया कि उसका गाँव बेलगाँव नदी के किनारे है। उसका मकान कच्चा और पुराना है। गाँव में कोई स्कूल नहीं है। नदी की रेत में मूंगे बहुत हैं। वह अपनी छोटी बहन सुमित्रा से मिलना चाहती है। उसे सुमित्रा के पांच रूपये वापस करने हैं। गाँव के बाहर एक गृहस्थ टापरे की किराना की दुकान है। घर के सभी लोग मराठी बोलते हैं।

उपर्युक्त जानकारी नागपुर से प्रकाशित होनेवाले समाचार-पत्रों में नवम्बर, 1678 प्रकाशित हुई थी। यह समाचार पढ़ते ही पूना के श्री शऊसाहब काले ने महाराष्ट्र के कुल अठाईस 'वेलगाँवों' की शैगोलिक स्थिति लिख भेजी। सुनीता के 'वेलगाँव' का पता चलाने में सवसे वड़ी कठिनाई यह थी कि इनमें से छः वेलगाँव नदी के किनारे बसे थे।

सुनीता के वालहठ और उसकी वेचैनी से तंग आकर मदन लाल जी उसके कथित वेलगाँव की खोज में निकल पड़े। 21 जनवरी, 76 को वह वुलढाणा जिले की मेहकर तहसील में स्थित वेलगाँव गये। फिर 22 फरवरी, 76 को छिंदवाड़ा जिले की तहसील सौंसार के वेलगाँव और 24 फरवरी को वर्धा जिले के वेलगाँव गये, किन्तु सुनीता के कथनानुसार इनमें से कोई उसका 'वेलगाँव' नहीं था।

26 फरवरी, 76 को सुनीता के माता-पिता उसे साथ लेकर अमरावती जिले की तहसील आर्वी स्थित वेलगाँव गये। इस वेलगाँव की सीमा में प्रवेश करते ही सुनीता उछल पड़ी। उसकी आँखों में अनोखी चमक आ गयी और वह उत्साह में आकर अपने पूर्व परिचित स्थलों के वारे में वताने लगी।

यह वेलगाँव नारा से 5 मील की दूरी पर वर्धा नदी के किनारे प्रकृति की सुरम्य गोद में वसा है। गाँव के दूसरे किनारे पर एक विशाल टीला है। यहाँ 150 घरों की वस्ती है। गाँव के वाहर वरगद का एक छतनार पेड़ है। आम के वाग भी हैं। सुनीता ने नदी का वह घाट अपने माता-पिता को दिखाया, जहाँ वह अपने पूर्वजन्म के वचपन में सहेलियों के साथ नहाया करती थी और रेत में से गुंजे (मूंगा) वीनती थी।

सुनीता की चर्चा पूरे गाँव में फैल गयी और अच्छी-खासी भीड़ इकट्ठी हो गयी। लोग आश्चर्य में पड़कर सुनीता की वातें सुन रहे थे। थोड़ी देर में ही अड़ोस-पड़ोस के नारा, खुसन्दा, मानिकवाड़ा, कारंजा (घाटगे), आरंभी, तरोडा, सावरडीह, खपरी और खराला आदि गाँवो के लोग भी इकट्ठा हो गये थे। इनमें सरपंच राधोजी वकाराम ध्सुर्वे, कृष्णरावजी वाध, पुण्डलीकराव सोनारे, पुलिस अधिकारी पाटिल दियाकर, नारायणराव देशमुख, श्ररवणजी सोनारे, वृजमाहन जी टावरी और पत्रकार पी. एस. जोशी आदि प्रतिष्ठित व्यक्ति भी वहाँ मौजूद थे।

गाँव में प्रवेश करके सुनीता एक मकान के सामने जाकर रुक गयी। उस कच्चे और ताज़ी मरम्मत किये हुए मकान को कुछ क्षण देखने के वाद सुनीता ने वेझिझक दरवाजा खोला और अन्दर चली गयी। घर के भीतर सुनीता ने अपने उठने-वैठने, खाने और सोने के स्थानों को बताया। उसने दृढ़ता के साथ कहा कि यही उसका पिछले जन्म का घर है।

उस मकान के मालिक श्री चन्द्रभान और लक्ष्मणराव कालमेघ साधारण मराठी किसान थे। वे भीड़ देखकर घबरा गये थे। इधर सुनीता का यह हाल था कि उसने चन्द्रभान जी को देखते ही पहचान लिया और उन्हें अपने पूर्वजन्म का पिता बताया। इसी तरह लक्ष्मणराव जी को उसने 'काका' कहा।

सुनीता ने अपने पूर्वजन्म की बहन सुमित्रा के बारे में पूछताछ की। कालमेघ-बन्धु भौंचक्के-से होकर उसकी बातें सुन रहे थे। पत्रकार श्री जोशी ने उन्हें सुनीता के बारे में बताया, तो उनकी उलझन आश्चर्य में बदल गयी।

पूछताछ से यह पता चला कि लगभग पच्चीस-छबीस वर्ष हमे चन्द्रभान जी के दो पुत्रियां-शान्ता और सुमित्रा थीं। बड़ी लड़की शान्ता पांच वर्ष की आयु में ही दिवंगत हो गयी थी। छोटी लड़की सुमित्रा अब तीस वर्ष की है और वह अरावली जिले में ही तीवसा के निकट फतेपुर जावरा गाँव में अपने पति सुखदेवराव वाधमारे के साथ रहती है। वह पांच बच्चों की माँ है।

अब यह स्पष्ट हो गया कि सुनीता ही सुमित्रा की बड़ी बहन शान्ता थी, जिसे अपने पूर्वजन्म की स्मृति आ गयी थी।

सुनीता अपने पूर्वजन्म के गाँव-घर को देखकर ही सन्तुष्ट नहीं हुई। वह तो अपनी छोटी बहन सुमित्रा से मिलने के लिए बेचैन थी। अगले दिन ही एक आदमी भेजकर सुमित्रा को उसकी ससुराल से बुलवाया गया। सुमित्रा को देखते ही सुनीता दौड़ पड़ी। वह सुमित्रा को सम्बोधित करके उसे अपने बचपन की बातें याद दिलाने लगी। वह इस तरह खुश थी, जैसे उसे उसकी कोई खोयी हुई वस्तु मिल गयी हो।

सुनीता का उत्साह, उसकी खुशी और उसकी बातों ने सुमित्रा को चकित करने के साथ ही उलझन में डाल दिया। दोनों 'बहनों' के तात्कालिक मनोभावों में बहुत अन्तर था। सुनीता के स्वाभाविक अपनत्व के बावजूद सुमित्रा को ऐसी कोई अनुभूति नहीं हो रही थी, जो इतने लम्बे अन्तराल के बाद अपनी बड़ी बहन से मिलने पर होनी चाहिए थी। उसकी उम्र लगभग तीस वर्ष थी और उसे अपनी बड़ी बहन शान्ता के बारे में कोई विशेष स्मृति भी नहीं रह गयी थी। इसलिए वह उस पांच वर्षीया अपरिचित बालिका के साथ अपना भावनात्मक सम्बन्ध जोड़ नहीं पा रही थी।

इसके विपरीत सुनीता उसे अपनी छोटी बहन मानकर दुलार रही थी। इसी बीच भीड़ में से किसी ने एक सत्तर वर्षीया वृद्धा की ओर संकेत करके सुनीता से उसका नाम पूछ लिया। सुनीता ने फौरन उसका नाम बायनाबाई पाटलीन बताया और उसका हाथ पकड़कर पड़ोस के एक घर की ओर ले गयी। सुनीता ने यह भी

बताया कि वह बचपन में उसी वृद्धा के घर से दूध ले आती थी। उसने पाटलीन के घर के सामनेवाले एक फाटक की भी चर्चा की, जो अब मौजूद नहीं था और जिसके पास वह दूध खरीदने के लिए खड़ी रहती थी।

सुनीता की इन सभी बातों की पुष्टि गाँववालों ने की। सुनीता ने गाँव के पुण्डलीकराव सोनारे और शान्ताबाई शामतकर के घरों को भी पहचान कर बताया। इन्हीं सोनारे की बेटी के साथ वह बचपन में खेला करती थी।

इस घटना का आँखों देखा विवरण नागपुर के दैनिक समाचार-पत्र 'नागपुर टाइम्स' एवं अन्य समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुआ। उन दिनों अमरीका की वर्जीनिया यूनिवर्सिटी के डॉ. इयान स्टीवेंसन एम. डी. और उनकी शिष्या प्राध्यापिका कुमारी सतवन्त पसारिका बेंगलोर में रह रहे थे। इन्होंने अखबारों में सुनीता के बारे में पढ़ा, तो उससे मिलने के लिए उत्सुक हो उठे। वे बेलगाँव गये और सुनीता का साक्षात्कार लिया। उन्होंने उसके कई फोटोग्राफ भी लिये, जिनकी प्रतियां उन्हींने विश्लेषण के लिए अमरीका भेज दीं।

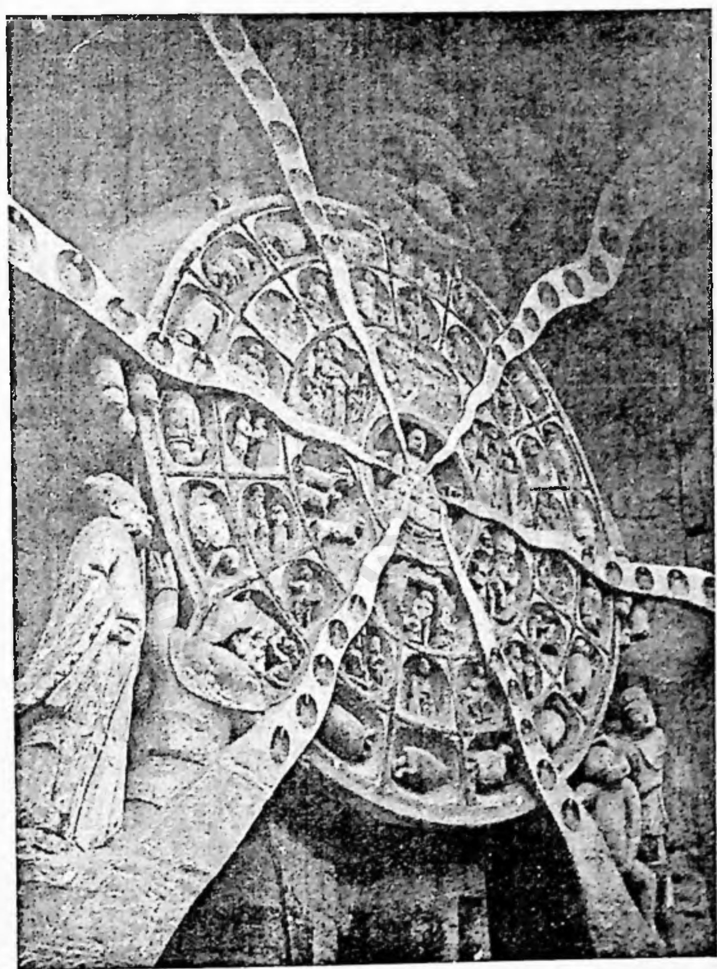
32. गोपाल कहता था— 'मैं शक्तिपाल शर्मा हूँ!'

अपने पापा की अंगुली पकड़े नन्हा गोपाल शादी की चहल-पहल देखने में मस्त था। बैंड-बाजों का शोर, नये-नये कपड़ों में सजे-धजे लोग और सजावट! आखिर उसकी उम्र ही क्या थी? यही कोई आठ-नौ वर्ष। इतना-सा बच्चा खोया-खोया बैंड की धुनों में मग्न नहीं होगा तो और क्या करेगा?

लेकिन यह क्या! अचानक उसके मुंह से एक चीख निकल गयी। न जाने किस व्यक्ति पर उसकी नजर पड़ी थी कि वह उसे देखते ही आतंकित हो उठा और डर के मारे अपने पापा से लिपट गया। पिछले जन्म की बात एक-एक करके उसके दिमाग में घूम गयी और वह बेतरह रोने-चिल्लाने लगा, "पापा, चलो! यहाँ से चलो! यह आदमी...मुझे मार डालेगा, यह आदमी......इसने पहले भी मेरा खून किया था।"

नन्हा गोपाल डर के मारे कांप रहा था और अपने पापा की टांगों से लिपटा जाता था। उसका अचानक इस प्रकार रोना-चिल्लाना सुनकर उसके पापा भी चौंक उठे थे और विवाह में शामिल हुए लोगों में से दो-चार अन्य लोगों का ध्यान भी इस ओर आकृष्ट हो उठा था।

गोपाल के पिता जानते थे कि गोपाल छोटी उम्र से ही इस प्रकार की अनाप-शनाप बातें किया करता है। जब वह ढाई साल का था तभी से उसने कहना आरंभ कर दिया था कि वह मथुरा का रहने वाला है, उसका असली नाम शक्तिपाल शर्मा है। मथुरा में उसका पूरा परिवार है। 'सुख संचारक कंपनी' के नाम से एक बड़ी फर्म है। गोपाल गुप्ता की माँ समझती थी कि शायद गोपाल पिछले



जन्म की बातें बता रहा है। और पिछले जन्म की बात याद रह जाये का मतलब होता है बच्चे की मौत—बड़े बूढ़ों का ऐसा ही कहना था।

खैर, ऐसा कुछ तो गोपाल के साथ न हुआ, क्योंकि गोपाल गुप्ता आज भी जीवित है और दिल्ली में ही अपने माँ-बाप के साथ रह रहा है। उसके पिता 'गैस स्टेशन मैनेजर' हैं और वह अपने माता-पिता की इकलौती और लाडली संतान है। परंतु शुरू-शुरू में माँ अपने इकलौते बेटे के मुंह से ऐसी बातें सुनती तो उसे डांटकर चुप कर दिया करतीं और किसी अनजानी आशंका से रह-रहकर उसका दिल धड़कने लगता। आखिर गोपाल उसका इकलौता बेटा था, वह उसके बारे में किसी भी तरह की जोखिम उठाने को क्यों तैयार होती? गोपाल के पिता ने भी बच्चे की उन बातों पर कभी ध्यान नहीं दिया था।

लेकिन उस दिन, सीताराम बाजार में जब वह पिता के साथ एक विवाहोत्सव में सम्मिलित होने को गया तो आठ-नौ वर्षीय गोपाल अचानक एक व्यक्ति को देखकर जिस प्रकार रोया-चिल्लाया, उससे गोपाल के पिता भी चौंके बगैर न रह सके। वह उसे इस कदर आतंकित देखकर एकबारगी किंकर्त्तव्यविमूढ़ रह गये और इससे पूर्व की शादी में आये लोगों की भीड़ का ध्यान उस ओर आकर्षित होता, सीधे उसे घर ले आये।

घर आकर भी गोपाल की स्थिति में कोई फर्क न पड़ा। वह बुरी तरह डरा हुआ था और रह-रहकर रोने लगता था। आखिर उसकी इस स्थिति को देखकर माता-पिता ने सिलसिलेवार सारी बात उससे पहली बार जानने की कोशिश की। सौभाग्य से उसी दौरान घर में गोपाल के पिता के दो-तीन अंतरंग मित्र भी आ गये थे। अब सभी ने मिलकर गोपाल से बातचीत की तो सबके सामने एक प्रश्नचिन्ह खड़ा हो गया। आश्चर्य में डूबे वे सभी एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। सबके चेहरों पर एक ही सवाल था, क्या यह पुनर्जन्म की घटना है या बच्चे के दिमाग का कोई पेंच ढीला है अथवा कल्पना की कोरी उड़ान?

गोपाल ने बताया था, शादी में जिस आदमी को देखकर वह डरा था, उसने ही उसका खून किया था और पूर्वजन्म में वही उसका सगा भाई था, उसने उसे गोली मार दी थी।

आखिर काफी सलाह-मशविरा करने के बाद गोपाल के पिता और उसके मित्र इस नतीजे पर पहुंचे कि इस घटना की पूरी तफरीश की जाये और गोपाल को मथुरा ले जाकर देखा जाये कि वह वहाँ के रास्तों और गलियों को पहचानता भी

है या नहीं। इससे यह भी पता चल जायेगा कि उसकी दूसरी बातों में कितनी सच्चाई है।

नतीजा यह हुआ कि गोपाल को उसके पिता अपने दो-तीन मित्रों के साथ मथुरा ले गये। गोपाल ने बताया था कि वहाँ अमुक गली के नुक्कड़ पर पान वाले की दुकान है।

आखिर वे सब मथुरा पहुंचे और गोपाल को एक ऐसे स्थान पर छोड़ दिया, जहाँ गलियों और रास्तों की खासी भूलभुलैया थी। देखना यह था कि गोपाल इन गलियों को पहचानता हुआ अपने बताये हुए सही ठिकाने पर पहुंचता भी है या नहीं। अपने जन्म के बाद से गोपाल अब तक कभी मथुरा नहीं आया था। मगर वह उन पेचीदा गलियों में से ऐसे गुजरता चला गया, जैसे वह उनसे काफी पहले से परिचित है—न किसी मोड़ पर उसने रूककर सोचा और न किसी चौराहे पर वह ठिठका। आखिर उसने गली के नुक्कड़ पर पान की दुकान दिखायी तो सब चौंक पड़े। गोपाल की बात बिल्कुल सच थी।

उसके बाद वह चलते हुए एक बड़ी फर्म के सामने रूका और बोला, "यही मेरी फर्म है—सुख संचारक कंपनी।"

उसकी इस बात पर भी लोग चौंके। परंतु कुछ एक ने संदेह भी व्यक्त किया कि संभव है, गोपाल ने उसका साइनबोर्ड पढ़कर यों ही यह बात कह दी हो। इसलिए गोपाल के पिता के साथ आये मित्रों में से एक ने कहा, "अच्छा बेटा, अब अपना घर पता करो।"

और गोपाल अत्यंत स्वाभाविक ढंग से अपने पूर्वजन्म के निवास-स्थान की ओर चला। उसके कदम इतने स्वाभाविक ढंग से उठ रहे थे, मानो वह उन रास्तों पर वर्षो तक आता-जाता रहा हो।

इस बीच कानों-कान यह बात बाज़ार के लोगों में भी उड़ गयी थी कि एक बच्चा है जो दिल्ली से लाया गया है और अपने आप को दवाइयां बनाने वाली मशहूर फर्म 'सुख संचारक कंपनी' का स्वामी शक्तिपाल शर्मा बतलाता है। यह बात मथुरा के पुराने निवासी जानते ही थे कि 'सुख संचारक कंपनी' के स्वामी श्री शक्तिपाल शर्मा का देहाँत सन् 1948 में हो गया था। तब फिर यह उनके लिए चौंका देनेवाली बात ही थी कि उसी का पुनर्जन्म आठ वर्ष बाद सन् 1956 में दिल्ली में हुआ था। मजेदार बात यह थी कि उस बच्चे को अपने पूर्वजन्म की याद ज्यों-की-त्यों बनी हुई थी। ऐसी अजीबोगरीब खबरों पर एक अच्छी-खासी भीड़ गोपाल और उसके पिता के मित्रों के पीछे हो गयी कि देखें, इस बात में कितनी सच्चाई है। पुनर्जन्म

क्या वाकई कोई हकीकत है या ये सब किसी सिरफिरे ने बेपर की उड़ायी है?

मगर उस वक्त सब लोग चौंक पड़े, जब एक आलीशान मकान के सामने पहुंचकर गोपाल गुप्ता ने लोगों को बताया कि पिछले जन्म में यही मेरा घर था। लोग हैरत में डूबे एक-दूसरे की ओर देखने लगे। उस लंबे-चौड़े आलीशान भवन की एक बालकनी में खड़ी एक महिला भी इस दृश्य को आश्चर्य से देख रही थी। इस अजूबे को देखकर वह अपने आप को रोक न सकी। उसने उस छोटे से लड़के को इशारे से ऊपर बुलाया।

गोपाल उस भवन के सभी दरवाजों, सीढ़ियों और कमरों से पूर्वजन्म से ही भली प्रकार परिचित था। इसलिए वह तेजी से मकान में दाखिल हुआ और बेझिझक द्वारों, सीढ़ियों और बरामदों को पार करता हुआ दौड़कर क्षण भर बाद ही उस महिला के पास जा पहुंचा। लोग यह देखकर आश्चर्य में पड़ गये कि जहाँ वह महिला खड़ी थी वहाँ तक पहुंचने के लिए भवन के अनेक पेचीदा रास्तों से होकर जाना पड़ता था, तब फिर गोपाल वहाँ तक कैसे पहुँचा? क्या सचमुच गोपाल का पुनर्जन्म हुआ है? क्या यह गोपाल पिछले जन्म का शक्तिपाल शर्मा ही है? एकाएक हजारों सवाल लोगों में कानाफुसियों के साथ-साथ उठने और उठाये जाने लगे।

इस बात पर स्वयं गोपाल, यानी पूर्वजन्म के शक्तिपाल शर्मा के परिवार के लोग भी चौंके बिना न रह सके। गोपाल ने बताया कि मेरी पत्नी मुझसे सैदव चिढ़ी-चिढ़ी रहती थी। उस दिन उससे मैंने पांच हजार रूपये देने के लिए कहा तो वह नाराज हो उठी और गुस्से में बोली, 'जाओ, अपनी कंपनी के एकाउंट से निकलवा लो।' शक्तिपाल शर्मा निराश होकर अपनी फर्म की ओर चला आया था। इस बात की स्वयं गोपाल की पूर्वजन्म की पत्नी ने भी स्वीकार किया। गोपाल ने यह भी बताया कि उसी दिन उसके छोटे भाई ने गोली मारकर उसकी हत्या कर डाली! उसने वह स्थान भी दिखाया, जहाँ उसकी हत्या की गयी थी।

उसके बाद गोपाल को 'सुख संचारक कंपनी' ले आया गया। यहाँ भी वह हर चीज और स्थान को पूरी तरह पहचानता था और उसके व्यवहार में जरा भी असामान्यता नहीं थी। यहाँ आकर उसने अपने पूर्वजन्म के सेवकों से वैसा ही व्यवहार किया, जैसा वह पिछले जन्म में करता था। उसने अपने बैठने का स्थान, मेज, कुर्सी आदि भी ठीक-ठीक बतायीं।

लेकिन इतना सब हो जाने पर भी गोपाल के पूर्वजन्म के, यानी मृत शक्तिपाल शर्मा के एक मित्र श्री हरयाणा ने कहा, "ठहरो, मैं इसकी परीक्षा लेता हूँ। अगर यह उसमें सफल हो गया तो..........।"

और वह कहीं से एक पुरानी एलबम उठा लाया। फिर उसमें से एक पुराना फोटो निकाल कर गोपाल के सामने रखा और बोला, "बताओ, इस चित्र में तुम कहाँ हो और यह किस वक्त का चित्र है?"

चित्र में अनेक चेहरे नजर आ रहे थे और इससे पूर्व कि उत्सुक लोग यह अनुमान लगाते कि इनमें से कौन-सा चेहरा शक्तिपाल शर्मा का होगा, गोपाल ने तुरंत पर्दे की ओट से नीचे नजर आती एक आदमी की टांगों की ओर इशारा करके कहा, "यह मैं हूँ, मेरा चेहरा और शरीर पर्दे की ओट में छिप गया है। यह उस वक्त का चित्र है, जब आस्ट्रेलियन हाई कमिश्नर आये हुए थे और मुझे उनके साथ नाव पर...........।"

और गोपाल के पूर्वजन्म के मित्र श्री हरयाणा फटी-फटी आँखों से सिर्फ देखते रह गये, क्योंकि गोपाल ने उस चित्र में न केवल अपने आप को पहचान लिया था, बल्कि यह भी सही-सही बता दिया था कि वह किस अवसर पर लिया गया चित्र है।

गोपाल आज भी जीवित है और दिल्ली में ही अपने माता-पिता के साथ रहता है।

33. जिसे पिछले दस जन्मों की याद है....

देश-विदेश में पुनर्जन्म पर काफी शोध कार्य हो रहा है। पुनर्जन्म की घटनायें भारत ही नहीं वरन् अमरीका, कनाडा, जापान, थाइलैंड, अफ्रीका, मिस्र आदि देशों में भी घटी हैं।

कनाडा के प्रो. ब्लेकस्ले ने दक्षिण अफ्रीका की एक बालिका की घटना प्रस्तुत की है जो अपने पिछले दस जन्मों का वृत्तान्त बताती है। इस लड़की का नाम है--जॉय वर्वे। उसका दृढ़ विश्वास है कि वर्तमान जन्म से पूर्व उसके दस जन्म और हो चुके हैं। वह कहती है कि उसके एक पूर्वजन्म का अन्त तब हुआ जब उसका सिर काट दिया गया था। जॉय ने विस्तारपूर्वक अपने पूर्वजन्मों का विवरण देते हुये बताया कि उसके पूर्व जीवनों का सम्बन्ध उन सैकड़ों वर्षों के कालखंड से है, जो पाषाण युग से लेकर बाइबिल के मिस्र, प्राचीन रोम, 15 वीं शताब्दी के इटली व 17 वीं शताब्दी के दक्षिण अफ्रीका के जंगलों में रहने वाली जाति में समाप्त होता है। दक्षिण अफ्रीका के प्रिटोरिया नगर की इस बालिका ने अपने पूर्व-जीवन के सम्बन्ध में तभी से बताना प्रारंभ कर दिया था, जब उसने बोलना सीखा ही था।

जॉय के विगत जन्मों की प्रमुख घटनाओं का विवरण उसी के शब्दों में इस प्रकार है:—

- एक डायनोसॉर प्राचीन भीमकाय जंगली पशु ने उसका पीछा किया था।
- एक जन्म में वह दासी थी और उसका सिर काट दिया गया था।
- वह रोम में रहती थी और रेशमी धागे से कंबल बुनती थी।
- वह एक ऐसे देश में भी उत्पन्न हुई थी जहाँ दीवारों तथा पेड़ों पर बड़े-बड़े चित्र बनाये जाते थे।

- वह एक जन्म में उन ठिगने पीले रंग के लोगों में से थी जो बचपन में रेत मैं दबे हुए अंडों को खोद निकालते थे।
- वह सन् 1883 से सन् 1900 तक ट्रांसवाल में तत्कालीन राष्ट्रपति स्टेफन्स जोहन्स के पास आया करती थी।
- ईश्वर के पुत्र के आगमन की बात करने वाले एक धर्मोपदेशक को उसने पत्थर दे मारा था।

जॉय के पिता एडवर्ड माइकल वर्वे आरंभ में जॉय की बातों को हंसकर टाल दिया करते थे। उसकी माता कैरोलीन फ्रांसिस एलिजाबेथ को जब उसकी बातों पर विश्वास हो गया तो वह जॉय की प्रत्येक बात को डायरी में लिखने लगी।

उसके पिता वर्वे ने प्रो. आर्थय ब्लेकस्ले को बताया—"जब जॉय दो या तीन वर्ष की बच्ची थी, तभी से वह अविश्वसनीय बातें कहने लगी थी। पढ़ने-लिखने के बहुत पहले से ही वह पुराने समय के ऐतिहासिक दृश्यों तथा प्रयोग में आने वाली वस्तुओं के चित्र बनाने लगी थी।"

पहाड़ की गुफा तक डायनोसॉर नामक पशु द्वारा पीछा किये जाने की घटना का वर्णन करते हुए जॉय ने बताया कि वह पशु मकान से भी बड़ा था। उसने बताया—"उस पहाड़ी गुफा का केवल एक ही प्रवेश द्वार था। गुफा के बाहर पानी का एक झरना बहता था। गुफा में शेर, बाघ आदि जंगली जानवर आसानी से आ जा सकते थे। जब कभी जानवर भीतर आ जाते, दूसरे दिन प्रातःकाल रक्त का एक ढेर दिखाई देता था और उस समय हम यह जान जाते थे कि हममें से कोई शेर या बाघ के चंगुल में फंस गया। एक बार मैं घर से निकलकर समुद्र तट पर घूम रही थी कि एक जंगली पशु शायद डायनोसॉर ने मेरा पीछा किया। मैं दौड़कर गुफा में घुस गई। चूंकि गुफा का मुख छोटा था अतः जंगली पशु घुस नहीं सकता था। वह लौट गया। मैं कांपते-कांपते गुफा से बाहर निकली और घर लौट गई।"

उसके एक अन्य पूर्वजन्म का विवरण इस प्रकार है—"जब वह बहुत छोटी थी, तभी उसने एक, 'दासपोत' का चित्र बनाया जिसके विषय में उसने बताया कि हम दास लोगों को कभी बोलने नहीं दिया जाता था। यदि हम ऐसा करते थे तो हमारी जीभ काट दी जाती थी। दासी के रूप में हम सब महल में एक मूर्ति के सामने गोलाकार घूम-घूमकर चिल्लाते और नाचते हुए सूर्य की प्रार्थना किया करते थे।

जॉय ने यह भी बताया कि बादशाह एक भयंकर व्यक्ति था। उसकी एक सुन्दर रानी थी, जिसके लम्बे-लम्बे बाल थे। एक दिन बादशाह रानी से नाराज़ हो गया। उसने एक सैनिक को रानी का सिर काटकर थाली में लाने का आदेश दिया।

सैनिक ने राजा के आदेश का पालन किया। सोने की एक थाली में उसका सुन्दर सिर लंबे वालों से ढका था। वादशाह ने उस पर थूका और फिर उसे जमीन में गड़वा दिया।

एक दिन उस क्रूर वादशाह ने मुझे बुला भेजा। मैं इतनी भयभीत हो गई थी कि वे उसके सामने नहीं जाना चाहती थी। पर एक विशालकाय काला पुरूष वलात् मेरा हाथ पकड़कर घसीटता हुआ वादशाह के सामने ले गया। वादशाह के आदेशानुसार उसने वरामदे में एक भारी लकड़ी पर लिटाकर मुझे जवर्दस्ती पकड़े रखा। एक दूसरे आदमी ने एक लंबे-चौड़े चाकू से मेरा सिर धड़ से अलग कर दिया। तदनन्तर मेरे सामने घोर अन्धकार छा गया। उसके वाद क्या हुआ? इसका मुझे कुछ पता नहीं।"

अपने पिछले जन्मों में जिन-जिन स्थानों पर वह रह चुकी थी, उनमें से बहुत से स्थानों के नाम तो वह नहीं बता सकी, परन्तु वहाँ के निवासियों की रीति-रिवाजों एवं स्थानों के विवरण से भौगोलिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से उन स्थानों को खोज लिया गया।

ऊंट पर बैठकर सवारी करने की उसकी कहानी से यह वात स्पष्ट हो गई कि वह मिस्र देश की चर्चा कर रही थी।

अपने एक जन्म में जब वह रोम में थी तो उसने लकड़ी का खड़ाऊ तथा युद्ध की पोशाक और ऐसी चमड़े की ढाल का वर्णन किया, जिस पर तांबे और सोने के बेल-बूटे की कढ़ाई की जाती थी। उसने बताया—"रोम में मैं एक कुलीन परिवार की युवती थी। मैं रेशम के धागे से रंग-बिरंगे कंबल बुना करती थी।" उसने वताया—"एक असाध्य बीमारी के कारण मेरा देहान्त हो गया।"

यह चौथे पूर्वजन्म की बात है।

अंडे खोदकर निकालने वाली कहानी ने गुडहोप अंतरीप में रहने वाले उन जंगली लोगों की स्मृति करा दी जो वहाँ 17 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में रहा करते थे। जॉय ने बताया कि जंगली लोग वहाँ बड़े-बड़े अंडे भूमि के नीचे दबाया करते थे, फिर निशानी के रूप में वहाँ लकड़ी गाड़ दिया करते थे। हम बच्चों को इन लकड़ियों को उखाड़कर उन पर लगे हुए पशुओं के रक्त के निशान पोंछकर मिटा देने में बड़ा मजा आता था।

जॉय की इन अनोखी कथाओं का तब से प्रचार हुआ, जब वह—'कूगर हाउस' देखने गई थी, जहाँ ऊमपोल रहा करता था। वह 15 वीं शताब्दी के गणतंत्र का प्रधान था। जब जॉय अपनी दो बहिनों कैसेल तथा एडना के साथ संग्रहालय देख रही थी

जो उसने कहा—"इस स्थान में संग्रहालय बनने से पूर्व में यहाँ आई थी और प्रधान ऊमपोल की मैं व्यक्तिगत रूप से जानती थी।" ऊमपोल की मृत्यु स्विट्रजरलैण्ड में निर्वासित अवस्था में सन् 1904 में हुई थी। उसने बताया—"ऊमपोल की प्रथम पत्नी, सोलह वर्षीय मेरिया डूप्लोसिस की मृत्यु एक बच्चे को जन्म देते समय हुई थी। उसकी दूसरी पत्नी जो पहली पत्नी की भतीजी थी, से उसके ग्यारह बच्चे हुए।" बाद में जांच करने पर यह बात बिल्कुल सत्य निकली।

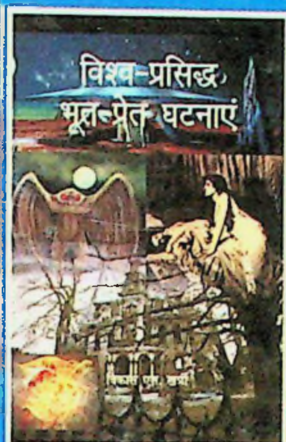
अपने अंतिम पूर्वजन्म का वृत्तान्त बतलाते हुए जॉय ने बताया कि इस जन्म के पूर्व वह स्पेन की सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी की पत्नी थी। एक मोटर दुर्घटना में उसका देहान्त हो गया था। उस समय उसकी आयु छत्तीस वर्ष की थी। अपनी मृत्यु के बाद का विवरण बतलाये हुए वह कहती है:—

"जब मेरी दुर्घटना में मौत हो गई तो वहाँ कुछ समय बाद ही मुझे अपने सूक्ष्म शरीर का भान हुआ। मेरी चेतना एक बगीचे में लौटी जो वैसा ही बाग था जैसा युवाकाल में उसके पति के घर में था। उस बगीचे में मैंने अपने दिवंगत माता-पिता, भाई आदि को मौजूद पाया। मेरी माँ तब उतनी ही सुन्दर थी जितनी युवावस्था में थी। एक विराट कक्ष में मेरा स्वागत किया गया। वहाँ विभिन्न प्रकार की संगीत की स्वर लहरियां उठ रही थीं। जहाँ तक मुझे ज्ञात है, मैं थोड़े समय तक वहाँ रही। तदनन्तर किसी दबाव का अज्ञात प्रेरणा से मैं नीचे धकेल दी गई।" जॉय ने इस प्रकार और भी अपने पूर्वजन्मों की घटनाओं का जिक्र किया।

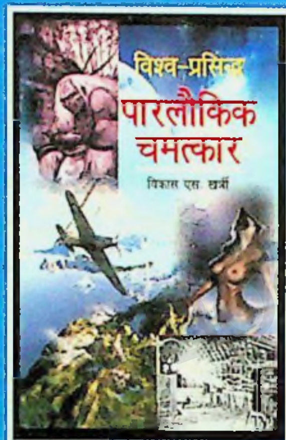
परामनोवैज्ञानिकों के अनुसार शिशु के जन्म लेने के पश्चात् जब कोई प्रोटोप्लाज्म स्वतः जागृत हो जाता है अथवा उसके जीवन में कोई ऐसी आकस्मिक घटना घट जाती है, जो प्रोटोप्लाज्मा को जागृत कर देती है तो उसके स्मृति पटल में पिछले जन्म की घटनाएं उभर आती हैं। पूर्वजन्म की घटनाएं वैज्ञानिक के लिये अनुसंधान का विषय अवश्य है।

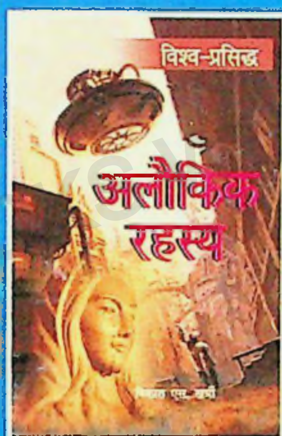


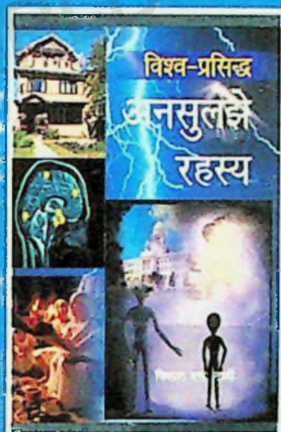
विकास एस. खत्री













RADHA PUBLICATIONS

4231/1, Ansari Road, Daryaganj
New Delhi-110002
Phones : 23247003, 23254306
website. radhapublications.com
Email : radhapublications@rediffmail.com


ISBN 81-7487-773-8
9788174877734

₹ 295/-